सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

संस्थापक संपादकः कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

वर्ष : 34 अंक : 4 | अप्रैल-जून 2021 | 40 रुपये

मालव भूमि गहन गंभीर, पग-पग रोटी डग-डग नीर

इन्दौर (मालवा) विशेष..1

600 से अधिक विवाह योग्य युवक-युवतियों का विवरण

SRI AUROBINDO UNIVERSITY

VISION WITH ACTION

(Established under Madhya Pradesh Private University Act 2007)

www.sriaurobindouniversity.edu.in

Strength of SAU :-

- Sri Aurobindo Medical College & PG Institute
- Sri Aurobindo College of Dentistry
- Sri Aurobindo Institute of of Allied Health & Paramedical Sciences
- Sri Aurobindo Institute of Speech & Hearing
- SAIMS College of Nursing
- Sri Aurobindo Institute of Management & Science
- Sri Aurobindo Institute of Technology
- Nordic High International School
- Sri Aurobindo Institute of Pharmacy

30+ Years of Academic Excellence

9 Institutions | 7000+ Students | 1200 Bedded Hospital | 30 Acre Campus

Future Projects: Ayush | Homeopathy | Alternative Medicine | Law Education
Journalism | Vocational Education Fashion Designing

Dr. Manjushree Bhandari
Chancellor - SAU

Dr. (Prof.) Jyoti Bindal
Vice Chancellor - SAU

Dr. Anand Misra
Registrar- SAU

HIGHLIGHTS

- Experienced Faculty Team
- Other Center of Excellence Like Intel, Cisco, JIO, aws academy and many more
- Institute of **Regenerative Medicines** & **Organ Transplant**
- For "**Robotic Surgery**" Only institute of Central India
- International Center of Excellence for **Bariatric Surgery**
- Center for **Nuclear Medicine**
- Boys & Girls Hostels in Campus

Certification | Diploma | Under Graduate | Post Graduate | Post Graduate Diploma | Ph.D. & Fellowship available in All faculty

For queries, email us on sau@saimsonline.com

SAIMS Campus, Indore-Ujjain State Highway,Near MR-10 Crossing, Bhanwarasla, Indore (M.P.) - 453555 Phone : +91 731 4788900

‘आ नो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वतः’ ऋग्वेद 1-89-1

संस्थापक संपादक
कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

●

प्रबंध संपादक
विष्णु कुमार पाण्डेय
3/19 सेक्टर-जे, जानकीपुरम लखनऊ-21
9450362385

●

संपादक
आशुतोष पाण्डेय
264 सेक्टर 3, फरीदाबाद 121004 हरियाणा
9312020932

●

प्रतिनिधि
रविकांत तिवारी (97-176-76003)
तिवारी ब्रदर्स, चांदनी चौक दिल्ली-6
प्रताप शुक्ल (लखनऊ) 9335912667
अजय (कानपुर) 8953882491
संदीप (कानपुर) 7054098204
मनीषा (नोएडा) 9310111069

●

विधि सलाहकार
सांकृत अजीत शुक्ल, एडवोकेट
9415474584

सहयोग राशिः-

संरक्षक...................................... रूपये11000.00
विशिष्ट....................................... रूपये 5100.00
आजीवन.....................................रूपये 2100.00
पत्रिका प्रसार सहयोग (2 वर्ष हेतु)......रूपये 300.00
(5 वर्ष हेतु)......रूपये 700.00

पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है स्पीड पोस्ट/कोरियर से पत्रिका मंगाने हेतु तथा विदेशों के लिए वास्तविक डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

वर्ष : 34 अंक : 4, अप्रैल-जून 2021

इस अंक में विशेष

संपादकीय	3
अपनी बात	5
मेरी दृष्टि में	7
बबूल औ बसंत	8
ब्राह्मणों का अस्तित्व और विरासत	9
क्या ब्राह्मण स्वजाति पोषक है	10
ऐसा था हमारा कन्नौज	12
दुर्गासप्तशती और गीता	13
ऐसे थे वे लोग	14
मैं न जिरूं राम बिन	15
स्वाद, शिक्षा, व्यवसाय का केन्द्र इन्दौर	17
इन्दौर में कान्यकुब्ज	19
देश मालवा गहन गंभीर	22
कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा	23
वैद्यराज ख्याली राम द्विवेदी	25
इन्दौर का शुक्ल परिवार	27
परिचय	28-35
जानापाव कुटी	37
महेश्वर	39
मण्डलेश्वर	40
मालवा के मण्डलोई	41
सामाजिक मंच	43
वैवाहिक विवरण - युवा वर्ग	46
युवती वर्ग	53
एवं अन्य स्थाई स्तम्भ	

पत्रिका मंगाने हेतु तथा समस्त पत्र व्यवहार के लिए
प्रबन्ध संपादक
कान्यकुब्ज मंच कार्यालय
20बी, किदवई नगर, कानपुर-208011
मो. 9450362385 (समयः सायं 7-9 तक)
ईमेलः kkmanch@gmail.com
www.kanyakubjmanch.com

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से प्रकाशक व संपादक की सहमति आवश्यक नहीं। न्यायायिक मामलों हेतु कानपुर न्यायालय क्षेत्र ही मान्य होगा।

Graphic Designer: Suresh Kataria

हमारे संरक्षक

कानपुर : पं. प्रेम नारायण तिवारी, तिवारी ब्रदर्स, पं. लक्ष्मी नारायण शुक्ल, पं. प्रेम कुमार पाण्डेय, पं. शरद मिश्र, डॉ वाई एन शुक्ल, श्रीमती सरिता-अनूप द्विवेदी, पं. प्रेम नारायण मिश्र, पं. संजीव दीक्षित, पं. राम प्रकाश मिश्र, श्रीमती मधु-सौरभ अवस्थी।

लखनऊ : पं. अमरनाथ मिश्र, पं. सर्वेश वाजपेयी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, पं. त्रिवेणी प्रसाद दुबे। **प्रयागराज** : पं. विजय कुमार तिवारी। **उन्नाव:** पं. ब्रह्म प्रकाश अवस्थी। **कन्नौज** : पं. गोपालजी मिश्र। **वाराणसी** : पं. देव नारायण पाण्डेय। **गाजियाबाद** : पं. वी एन अग्निहोत्री। **नोएडा** : पं. रविन्द्र शेखर शुक्ल, कैप्टन संजीव वाजपेयी, पं. प्रशांत तिवारी। **दिल्ली** : पं. रामकृष्ण त्रिवेदी, पं. प्रकाश तिवारी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, श्रीमती शोभा मिश्रा। **मुम्बई** : पं. ब्रजेन्द्र कुमार मिश्र। **हैदराबाद:** डॉ. विजय दीक्षित, अपोलो हॉस्पिटल। **फरीदाबाद** : डॉ पारस नाथ दुबे, डॉ देव राज चौबे, पं. जगदीश चंद्र द्विवेदी। **कोलकाता** : पं. राजेन्द्र नारायण वाजपेयी, पं. लक्ष्मीकांत तिवारी, पं. ऋषि शंकर पाण्डेय, पं. अश्विनी कुमार अवस्थी, पं. रामकृष्ण त्रिवेदी (आईपीएस)। **पुरुलिया** : पं. महादेव मिश्र। **अहमदाबाद** : पं. ओमप्रकाश दीक्षित। **छत्तीसगढ़** : पं. के एस शुक्ल। **तमिलनाडु** : श्रीमती लक्ष्मी प्रभा। **विदेश** : पं. वीरेंद्र कुमार तिवारी (यूके) स्वाति त्रिपाठी, (कैलिफोर्निया, यूएसए), शर्मिष्ठा-गौरव त्रिपाठी, (रॉटडैम, द निदेरलैंड्स)।

हमारे विशिष्ट

कानपुर : पं. आर एस मिश्र, पं. उमेश कुमार पाण्डेय, पं. ओम प्रकाश मिश्र, पं. कृष्णस्वरूप मिश्र (राजा), पं. मंजुल मिश्र, वैद्य राजेश कुमार पाण्डेय, पं. राजेश कुमार दीक्षित (एडवोकेट), प्रो सुरेंद्र कुमार त्रिपाठी, पं. आदित्य कुमार शुक्ल, पं. ब्रजेश अवस्थी, पं. प्रभात मिश्र, पं. कमलेश कुमार शुक्ल (मुचकुंद), पं. कृष्ण कुमार वाजपेयी, पं. नीरज मिश्र। **लखनऊ** : पं. श्रीकृष्ण तिवारी, सांकृत प्रताप शुक्ल, पं. कृष्ण कुमार शुक्ल, डॉ विनोद बिहारी दीक्षित, पं. दिनेश चंद्र मिश्र, पं. प्रदीप शुक्ल, पं. पंकज तिवारी, पं. अजेय शंकर तिवारी, डॉ के के त्रिपाठी, कर्नल पं. धर्मदेव तिवारी, डॉ मृदुला मिश्रा, पं. योगेश चंद्र मिश्र, पं. सुनील कुमार शुक्ल, डॉ मंजू शुक्ला, पं. जी पी द्विवेदी, पं. कृष्ण कुमार मिश्र, पं. देवेंद्र नाथ मिश्र, पं. कमल वाजपेयी, पं. देवानन्द वाजपेयी, पं. विनीत वाजपेयी, पं. गिरीश चंद्र शुक्ल, डॉ गणेश चन्द्र मिश्र, पं. जय शंकर द्विवेदी, पं. राजेश कुमार मिश्र, पं. दीपक कुमार मिश्र। **प्रयागराज** : श्रीमती सुधा अवस्थी (एडवोकेट)। **गाजियाबाद** : पं. श्याम वाजपेयी, पं. निरंजन चन्द्र मिश्र। **बरेली** : पं. एस पी पाण्डेय। **झांसी** : पं. विष्णु शुक्ल। **नोएडा** : पं. शरद त्रिवेदी। **दिल्ली** : वैद्य अशोक कुमार मिश्र, पं. रामेश्वर दयाल दीक्षित, पं. विक्रम तिवारी, डॉ रघुनंदन प्रसाद तिवारी, पं. विनोद त्रिपाठी, पं. सलिल दीक्षित, डॉ महादेव प्रसाद पाठक, पं. रामदास तिवारी, पं. रविशंकर तिवारी, पं. अनुराग मिश्र, पं. अमरेंद्र तिवारी, पं. विनोद कुमार अग्निहोत्री, श्रीमती मधु-पवन शुक्ला, पं. सुभाष तिवारी। **कोलकाता** : पं. हरीश मिश्र, पं. गणेश शंकर तिवारी, पं. कुलदीप दीक्षित, पं. सुशील कुमार शुक्ल, पं. शिव किशोर मिश्र, पं. मुकुतेश्वर तिवारी, डॉ हरि शंकर पाठक। **सतना** : पं. उमेश कुमार त्रिपाठी। **भोपाल** : पं. कैलाश नाथ मिश्र। **इन्दौर:** पं. हरेराम वाजपेयी, डॉ. मुकेश दुबे। **होशंगाबाद** : डॉ विभावसु दुबे। , **हैदराबाद:** डॉ. रामकुमार तिवारी। **फरीदाबाद** : पं. राजेश द्विवेदी, पं. कृष्णबिहारी दुबे, पं. अंजनी कुमार दुबे, डॉ सुरेश पचौरी। **विदेश** : पं. सिद्धार्थ मिश्र (कैलिफोर्निया)

जिस प्रकार पृथिवी धर्म भेद, भाषाभेद आदि के होते हुए भी सबको एक परिवार के तुल्य मानती है, उसी प्रकार तुम भी धार्मिक सहिष्णुता आदि गुणों को धारण कर एक परिवार के तुल्य रहो।

– अर्थर्व 12/1/45

-शुभ कामनाओं सहित -

त्रिवेदी एण्ड कम्पनी

पोस्ट बॉक्स नं. 1411, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

फोन-23965712, 23973045

धनि धनि मालव भूमि

‘**मालव माटी गहन गभीर, डग डग रोटी – पग पग नीर**’। अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक स्मृतियाँ संजोये, धार्मिक आस्था के शीर्ष केंद्रों का संगम, इन्दौर, उज्जैन, धार, खरगौन, विदिशा, मंदसौर आदि जनपदों की उपलब्धियां बखानती मालवभूमि भारतीय संस्कृति की अविच्छिन्न धरोहर है। विदेशी आक्रमणों से होने वाले सांस्कृतिक ह्रास से सुरक्षित रखने में सफल हुआ है यहाँ का जनमानस। विकास की दौड़ में प्रतिस्पर्धा करता जीवंत आधुनिक शहर इन्दौर। शिष्ट, अनुशासित जीवन शैली व उत्कृष्ट नागरिक बोध। उत्सवधर्मिता शहर को ऊर्जावान बनाती है। साहित्य, कला, संगीत की त्रिवेणी। स्वाद, शिक्षा व देश के प्रमुख व्यवसायिक केंद्र होने का गौरव प्राप्त है। प्रधानमंत्री मोदी के ‘**स्वच्छ-भारत अभियान**’ का अगुवा बन वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई।

परमारकाल में एक बड़ा भूभाग कम्पेल परगना के श्रीगौड़ ब्राह्मणों के आधिपत्य में था। होल्कर शासनकाल में उत्तरभारतीय, विशेषकर कान्यकुब्ज प्रदेश के ब्राह्मणों का बहुतायत की संख्या में विस्थापित होकर इस धरती पर आना हुआ और मालव माटी के सोंधेपन, नागरिकों के अपनेपन में यहीं के होकर रह गए। मुगल आक्रमण, ब्रिटिश शासन, दो विश्वयुद्ध, स्वतंत्रता आंदोलन, हरिजन उद्धार और तत्पश्चात शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय,समाजसेवा, राजनीति, प्रशासन आदि में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए वर्चस्व कायम किया। होलकर सेना में कान्यकुब्जों का दबदबा था।

सौ वर्ष से भी अधिक समय से क्रियाशील इन्दौर की कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा (संस्थापित वर्ष 1914) देश का एकमात्र कान्यकुब्ज संगठन है जो एक केंद्रीयकृत संगठन कहलाने का दावा कर सकता है। एक वृहत कान्यकुब्ज ही नहीं बसा है मालवभूमि में, कान्यकुब्जियत का विशुद्ध रूप अभी भी विद्यमान है। विवाह-संस्कार हों, रीतिरिवाज हों, पर्व-त्योहार हों, बोली-भाषा, सामाजिक-नैतिक मूल्य, आचरण आदि सभी में माखन-मिश्री सा सामाजिक-सांस्कृतिक सामंजस्य है। जूते-चप्पल बाहर उतारने, हाथ-पैर धोकर घर में प्रवेश करने का स्वभावगत दैनिक व्यवहार कोरोनाकाल में काफी सहायक सिद्ध हुआ।

विभिन्न अंचलों की पौराणिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों, लोकाचारों, क्षेत्र विशेष में कार्यरत सामाजिक संगठनों, निवसित परिवारों की जानकारी अपने पाठकों के साथ साझा करने के अभियान की श्रंखला में प्रस्तुत है– ‘**कान्यकुब्ज मंच**’ का ‘**इन्दौर मालवा विशेष..1**’। शहर के स्वमान्यधन्य **पं विष्णु भैया** का स्नेह मिला। मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के सहित्यमन्त्री व ‘वीणा’ के प्रबंध सम्पादक **पं हरेराम वाजपेयी** (सरिगवां) की प्रेरणा तथा **पं रामचन्द्र दुबे, डॉ योगेन्द्र नाथ शुक्ल, डॉ मुकेश दुबे, पं अनूप वाजपेयी, पं गायत्री प्रसाद शुक्ल** आदि के सहयोग से जो कुछ बन पड़ा– आपके समक्ष है। फिर भी बहुत कुछ रह गया, जिसे हम समेटेंगे– ‘**मालवा विशेष– 2**’ में।

आइए, आने वाले ‘**आनन्द**’ नाम नवसंवत्सर का स्वागत करें इस आशा-विश्वास के साथ कि प्रमाद में बिताए भय, नकारात्मकता व आशंकाओं के दिन बहुर चुके हैं। ‘**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः**’....

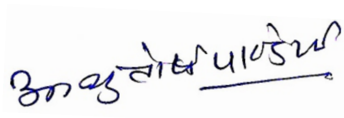

स्मरणीय तिथियां

2 अप्रेल'21, शुक्रवार	रंग पंचमी/गुड़ फ्राइडे
13 अप्रेल'21,मंगलवार	चैत्र नवरात्रि आरम्भ/गुड़ी पड़वा
14 अप्रेल'21, बुधवार	बैशाखी/अम्बेडकर जयंती
21 अप्रेल'21, बुधवार	रामनवमी
27 अप्रेल'21, मंगलवार	महावीर जयंती
1 मई'21, शनिवार	श्रमिक दिवस/गुरु तेगबहादुर जयंती
7 मई'21, शुक्रवार	बल्लभाचार्य/टैगोर जयंती
11 मई'21, मंगलवार	सतुवाई अमावस्या
13 मई'21, गुरुवार	छत्रपति शिवाजी जयंती
14 मई'21, शुक्रवार	अक्षय तृतीया/परशुराम अवतरण
17 मई'21, सोमवार	आदिशंकराचार्य/सन्त सूरदास जयंती
18 मई'21, मंगलवार	रामानुजाचार्य जयंती/गंगा सप्तमी
21 मई'21, शुक्रवार	राजीव गांधी पुण्यतिथि
25 मई'21, मंगलवार	श्रीनृसिंह जयंती
26 मई'21, बुधवार	बुद्ध पूर्णिमा/महर्षि भृगु जयंती
27 मई'21, गुरुवार	पं जवाहरलाल नेहरू पुण्यतिथि
28 मई'21, गुरुवार	आदिपत्रकार देवर्षि नारद जयंती
5 जून'21, शनिवार	विश्व पर्यावरण दिवस
9 जून'21, बुधवार	वट सावित्री अमावस्या
20 जून'21, रविवार	गंगा दशहरा/गायत्री जयंती
21 जून'21, सोमवार	निर्जला एकादशी/विश्व योग दिवस
24 जून'21, गुरुवार	सन्त कबीर जयंती

होल्कर-वंश

कहना न होगा, 18 वीं सदी के पूर्वार्ध में मंडलोई जमींदारों ने इन्दौर शहर के जिस विकास की कल्पना की थी, स्वप्न देखा था, उसको साकार करने में होलकर-वंश ने कोई कमी नहीं छोड़ी। 1767 ई. से अंग्रेजों से पराजित होने से पूर्व 1818 ई. तक होल्करवंश की राजधानी 'महेश्वर' थी। इन्दौर को विश्व-सम्मान दिलाने में महारानी अहिल्याबाई होलकर का शासनकाल अविस्मरणीय है। 'कहियत भिन्न न भिन्न' अहिल्याबाई और इन्दौर पर्यायवाची बन गए। सन 1758 के युद्ध में अपने पति खाण्डेराव कुंभेरी के वीरगति प्राप्त हो जाने व 1767 ई. में पुत्र श्रीमंत मालेराव के अकाल निधन के बाद अहिल्याबाई ने शासन की पूरी बागडोर ले ली। धार्मिक, सामाजिक कार्यों, अकाल के समय राजकोष खोल देने, असहाय व अपेक्षितों की सेवा करने व ईमानदारी-न्यायप्रियता में उनका नाम कालजयी है। चारों धाम, बारह ज्योतिर्लिंगों के साथ अयोध्या, काशी, गया, मथुरा, अवंतिका, सोमनाथ आदि अनेक स्थानों पर शिवलिंगों की स्थापना, मंदिर जीर्णोद्धार कराए। गंगाजी व नर्मदा जी के किनारे घाटों का निर्माण करवाया। बताते हैं, 12516 मंदिरों, मस्जिदों, दरगाहों का जीवन बचाया। गादी छोड़ कभी सिंहासन में नहीं बैठीं। उनकी सशक्त सेना में महिलाओं को भी युद्धकला में प्रशिक्षित किया जाता। महिलाओं के आर्थिक स्वावलम्बन के लिए हैदराबाद से साड़ी निर्माण कारीगरों को बुलाकर महेश्वर में साड़ी उद्योग स्थापित किया, जहां महिलाओं को रोजगार मिला। महेश्वर की साड़ियाँ पूरे विश्व में पसन्द की जाती हैं। महेश्वर का किला, इन्दौर-खण्डवा रेललाइन, सात मंजिला राजवाड़ा, रेजीडेंसी, मदरसा इंग्लिश स्कूल, शिव-विलास, सुख निवास, हवा बंगला, माणिकबाग पैलेस, लालबाग पैलेस,, कृष्णपुरा की छत्रियां, रानी सराय फौलादी इमारत, एमवायएच (महाराजा यशवंतराव होलकर) अस्पताल, यशवंत सागर बांध आदि होलकर वंश की कहानी बयां करते हैं।❑

उच्च कोटि के किराना, मेवा, खड़े व पिसे मसाले,
जड़ी-बूटी के थोक व फुटकर विक्रेता

लाला राम चन्द्र गुप्ता एण्ड सन्स

दुकान नं. 141-144, कैनाल पटरी, एक्सप्रेस रोड (6 नंबर कार पार्किंग के सामने) कानपुर
पर्चा लिखवाने वास्ते: 7510000300/9621265697
पर्चे की जानकारी वास्ते फोन नंबर 0512-2364444

अपनी बात

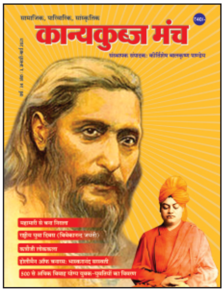

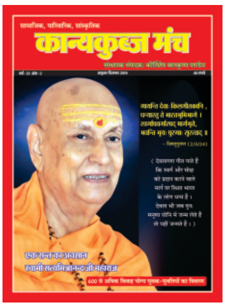

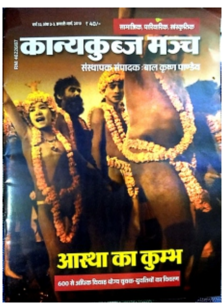

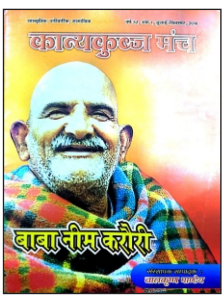

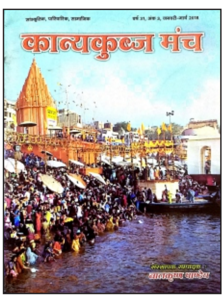

- संस्कृति एक धरोहर होती है। हमारा उपस्थित वर्तमान कभी भी संस्कृति के मोड़ से नहीं गुजरता, बल्कि सभ्यता के मोड़ से गुजरता है।
- परम्परावादी एक गाली और अपमान भरा शब्द बनकर रह गया है। नूतन और पुरातन के बीच में सनातन ही सत्य होता है। समय-निरपेक्ष परम्पराएं स्वमेव रूढ़ि बन जाती हैं।
- उपनिवेशवाद, राजतंत्र, सती-प्रथा, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, जमींदारी, वधू-दहन आदि का सम्पूर्ण विनाश अथवा आंशिक अवशेष हमारे उन्नयन का स्वीकारात्मक पक्ष है। वृक्ष के पुराने पत्ते झरते हैं तो नए पत्ते उगते भी हैं। दोनों प्रक्रियाएं प्राकृतिक हैं।
- देश की आजादी के बाद कोई ऐसा राष्ट्रीय लक्ष्य नहीं था, जो सबों को एक सूत्र में बांधता। हमारे देश की कोई एक सर्वस्वीकृत राष्ट्रभाषा भी नहीं है।
- व्यक्तित्व का निर्माण बाहर की वस्तुओं को भीतर भर लेने से नहीं होता, बल्कि भीतर की प्रच्छन्न गुणवत्ता को दक्षता में रूपांतरित कर लेने से होता है। यही मौलिकता है। हमारे समाज, शिक्षण-संस्थान, स्वयं-सेवी संस्थाएं और शासन-सत्ता, कहीं भी, यह शिक्षा-दीक्षा नहीं दी जाती।
- बुराई के साथ समझौता कर कोई भी समाज विकास की ओर नहीं जा सकता। बुराइयों से समझौता नहीं, संघर्ष करना पड़ेगा। विकल्प खोजना होगा, लोक-जागरण करना पड़ेगा। समाज सदैव उदात्तता और उत्कर्ष की ओर उन्मुख होता है।
- जीवन एक समर है। समाज में रहकर तटस्थता एक अपराध है। यहां औचित्य-बोध के साथ आचरण भी करना होगा। दिनकर ने लिखा है-

  'समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याघ।
  जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी इतिहास।'
- वर्ष 1987 से अनवरत प्रकाशित आपकी अपनी 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका प्रकाशन सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, नैतिक व मानवीय मूल्यों के संरक्षण के प्रति समर्पित वैचारिक क्रांति का एक आंदोलन है। वर्तमान में **'क्या ग्राह्य है और क्या त्याज्य'** इस पर सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं की हम प्रतीक्षा करते रहते हैं।❑

- विष्णु पाण्डेय (प्रबन्ध संपादक)

जो ईश्वर से विमुख हैं - उनका मुख फेसबुक पर भी नहीं देखना चाहिए। उनके साथ से बुद्धि बिगड़ती है, और अपना शान्त मन भी अशान्त हो जाता है।

कौओं को कपूर चुगा कर कोई उनका काँव-काँव करना रोक सकता है? कुत्तों को गंगा स्नान कराने से क्या वे वैष्णव-सात्विक हो जाएंगे ? गधों को चंदन पोतने से क्या होगा? लोटेगा जाकर धूल में ही। बंदर को आभूषण-ज्वेलरी पहना दो - क्या होगा ?

बोध-वाक्य-बाण हृदय पर प्रभावी होता है पत्थर-हृदय पर नहीं -

'सूरदास खल कारि कामरि चढ़ै न दूजो रंग
छांड़ि मन हरि-विमुखन को संग।
जाके संग कुबुधि उपजति है, परत भजन में भंग।।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग।
खर को कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषन अंग।।
पाहन पतित बान नहि भेदत, रीतो करत निषंग।
'सूरदास' खल कारि कामरि, चढ़ै न दूजो रंग।।'

स्मृतिशेष सरोज मिश्रा

: सौजन्य से :

शिवाय टॉवर

16/97, दि माल, कानपुर, फोनः 0512-2332050-51

नया भारत बनाओ

डॉ. जीवन शुक्ल, कन्नौज

समय कभी न रुकने की स्थिति का नाम है, जो कभी रुकता नहीं, वही पल पल परिवर्तित होता रहता है। विराट वो होता है जो आसपास फैली क्षुद्रताओं को भी अपनी छाया से ढंक कर उनके कलुष को प्रक्षालित कर नये परिधान में उजागर करने का प्रयास करता है। अगर ऐसा नहीं कर पाता तो उस से होने वाले अहित से परिवेश की रक्षा करने का प्रयास तो करता ही है। समर्थ वर्तमान अतीत को गाली नहीं देता उसकी भूलों को सुधार कर नई दिशा देकर आने वाले कल को नया दर्पण देता है। किन्तु अक्षम वर्तमान अतीत के नायकों को सुनियोजित ढंग से गाली देते हुए उनके चरित्र को अपनी कुंठा के रंग से रंग कर अंधे अनुयाइयों का 'धर्मक्षेत्र' निर्मित करता है। ऐसा समय भी परिवर्तन लाता है पर वह परिवर्तन दिशाहीन पंथियों का संसार होकर रेंगने को अपना प्रारब्ध मान लेता है। हर बुद्ध उसी से सचेत करने के लिये परिव्राजक बनता है।

जागा हुआ व्यक्ति जब परिवर्तन की मशाल अपने हाथ में लेता है तो वो स्वयं भी आसपास उभरे गढ्ढों को देखता है और अपने साथियों को भी दिखाता है। अपनी प्रज्ञा की मिट्टी से उनको भरने की कोशिश करता है। उसकी नियत शुद्ध होती है, जन हितकारी होती है, पर समय के निजी साधक उसकी समीक्षा अपने हितों के लिये करने में सारी शक्ति लगा देते हैं। यह विपथगामी प्रवृति हानिकारक होती है। आज हम इतिहास की उपलब्धियों को इसलिये नकार रहे हैं क्यूंकि हमारी उपलब्धियां उनके सामने नगण्य हैं। जिस समाज व्यवस्था ने हमें दुनिया का श्रेष्ठ व्यवस्थित समाज कहे जाने का गौरव प्रदान किया आज वो हमें, दूषित दिख रही है। यह दूषण भी स्वाभाविक है। जिन्होंने इसे रचा, लागू किया उनका समाजिक परिवेश, उनकी भौगोलिक, आर्थिक, औद्योगिक परिस्थितियां कुछ और थीं। वो एक प्रकार के समाज को चारों ओर से कस कर सुदृढ़ करने का काल था। आज हम मिश्रित समाज के आँगन में रह रहे हैं। इसके बीच श्रेष्ठता की दीवार उठाने से आँगन कूप की शक्ल में एक दमघोंटू व्यवस्था को जन्म देगा।

'हर मिट्टी की अपनी उर्वरता और विशेषता होती है। हर स्थान पर हर पौधा नहीं उपज सकता। उसी प्रकार हर क्षेत्र की अपनी रीति, परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, भाषा और संस्कृति होती है। व्यक्ति उसी में विकसित होता है। इसलिए आरोपित भाषा, संस्कृति, रीति या परम्परा टिकाऊ नहीं होती। विश्व बाजार में वस्तु-विक्रय की दृष्टि में तो वैश्वीकरण ठीक है, किन्तु व्यक्तित्व के विकास के लिए आंचलिकता ही सर्वोत्तम है।' ❑

मुझे एक अज्ञात पोस्ट से पूरे देश में ब्राह्मण समाज की जनसंख्या का पता चला। इसे सहज रूप से सच मानकर कुछ कहने का मन हो रहा है। वैसे जातिवादी संगठन चुनाव के समय अपनी संख्या दिखाकर, अपनी राजनैतिक ताक़त दिखाकर सत्ता में हिस्सेदारी का दावा पेश करते हैं। खासतौर से ब्राह्मण संघटनों के लोग ऐसा कर सरकार की आंख में काजल बनने का प्रयास करने की कोशिश करते हैं। जब तक ब्राह्मण एक व्यवस्था का नाम रहा तब तक उसके सामने सत्ता भी बौनी लगती थी, पर जब से ब्राह्मण एक जाति के रूप में उभरी, सबकी आँखों में खटकने लगी। क्या ये चुभन प्रश्नवाचक नहीं है?

जन्मना ब्राह्मण भी कई वर्गों में बंटा है --

1. विप्रः जो पूजा पाठ करा कर हिन्दू समाज में श्रेष्ठ व पूज्य माना जाता है।

2. अध्यापकः जो शिक्षण कार्य के माध्यम से समाज में श्रेष्ठ माना जाता है।

3. सत्ता की राजनीति से जुड़ाः वहाँ भी वह प्रथम पंक्ति चाहता है। ऐसी स्थिति में वो अपने पूर्वकाल की श्रेष्ठता की मानसिक तुष्टि पाता है।

4. व्यापारी ब्राह्मणः ये अपने समाज में भी निर्धनों को हेय दृष्टि से देखता है।

5. अन्य कार्यों मे व्यस्त ब्राह्मण।

जनसंख्या के आधार पर क्या हम पूरे देश में पिछड़ी स्थिति में नहीं हैं? इस पर बहुत गंभीरता से विचार करना है। लोकतंत्र में यही दल सत्ता पाने के लिये अंदर से अन्य जातियों को पटाते हैं और बाहर से ब्राह्मण के कांधे पर भी हाथ रखे दिखाई देते हैं। समय चिंतन का है। जन्मना ब्राह्मण का वर्चस्व अन्य जातियाँ नहीं झेलना चाहतीं। इसलिये संख्या छोड़ो, गुणवत्ता को और आर्थिक पिछड़ेपन को संवारो। ये पूँजी वादी व्यवस्था से नहीं समाजवादी आर्थिक नीति से सुधरेगी। इसलिये देश को पूंजीवादियों की आरामगाह बनने से रोको। समरसता के गायकों का कुंज बनाकर सत्य, अहिंसा ओर सौहार्द की रासलीला रचाओ। 'सर्वेभवन्ति सुखिनः 'के मंत्र को समवेत स्वर में गाओ। नया भारत बनाओ।' ❑

– 9415471813

बबूल और बसंत

– डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, कानपुर

हमारे गाँव में बसंत बबूल लाता था। गंगा का किनारा होने के कारण अन्य वृक्षों में केवल नीम और पीपल होते लेकिन बबूल का वन था बबुरावन।

पीपल तो स्वयंभू है। जहाँ उगा वहीं दरबार सज गया। जाने कितने देव प्रेत पितर का वास बन जाता है। ऐसा लगता है देव लोक से सीधे जुड़ा है। ऊर्ध्वमूल तो गीता में भी कहा गया है। नीम पारिवारिक मित्र है। नीम परिवार से जुड़ा दरवाजे पर घर के मुखिया की तरह। बुजुर्गों की बैठक है नीम। आल्हा का लोककवि उसे भाई मानता है -

'खाये से निबिया करुई लागै, बैठे.देत शीतला छाँह।
हिस्सा में भैया बैरी लागे, रण में होय दाहिने बाँह।।'

दाहिनी बाँह ही है नीम। सर्वरोगहरी निम्बा। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त। लड़की विदा होती है तो नीम की चिंता करती है - ***'बाबा निबिया के पेड़ जिनि काटेउ निबिया चिरैयन बसेरा।'***

इनसे अलग एक वृक्ष वट का होता था। ये महाशय वरिष्ठ हैं मुखिया गाँव में या अनेक गाँवों में कहीं जन्म लेते हैं और फिर वहाँ के पूज्य हो जाते हैं। अश्वत्थ और वट विप्रकुल का मानते हैं, स्वयं को पूज्य-पूजक भाव रखते हैं।स्वयंभू। पर फल अनुपयोगी। कौन सींचे। इसलिए उनके जलदान की व्यवस्था लोक में भक्ति से हो गयी।

लेकिन बबूल? गंगा का किनारा पकड़े तमाम बेचारिगी गाँवों के बीच पूरा बबूलवन। हर खेत में दो चार। स्वयंभू तो ये भी हैं पर न वट और पीपल की तरह पूज्य, न नीम की तरह द्वार की शोभा। सोचता हूँ यदि वृक्षों में वर्ण व्यवस्था होती तो ये क्या कहे जाते। बस्ती से दूर निर्जन मे उगे पले बढ़े श्यामगात बबूल मुझे ऋषि लगते हैं। गंगा तट पर निर्जन में आवास। एक बूँद जल भी नहीं चाहते किसी से।

बबूल विरागी प्रकृति का वृक्ष है, स्थितप्रज्ञ। बारह महीने एकरस। न पतझड़ होता, न पत्तों का खड़खड़। अकेले खेत में खड़े साधना करते, अपने आप उगता-बढ़ता, जहाँ धूनी रमा दी, रमा दी। उखाड़ कर पौधे को कहीं दूसरी जगह नहीं लगा सकते। अपनी साधना भूमि स्वयं तलाशता है। बहुत मस्त हुए तो उनके सफेद दाँत और पैने हो जाते बसंत को चिढ़ाते। होगे तुम कामदेव के अनुचर पर मेरे ऊपर तुम्हारा प्रभाव नहीं पड़ने वाला। बसंत को चुनौती देते शिव रूप बबूल को न प्रमद वन चाहिए, न उद्यान। नन्हें घुंटीदार पीले फूल निकलते भी तो थोड़ी धूप तेज होने पर। हर मौसम में हरा। बसंत में बबूल की कोई रुचि नहीं। वह बसंत नहीं संत है, शिव है। किसी कोमल वृक्ष को पशु सताते तो अपना अंग समर्पित कर उनका रक्षक बन जाता। बबूल से बसंत क्या बतियाता। पास से निकल जाता। तपभंग की कोशिश करता होगा। पर बबूल तो बबूल।

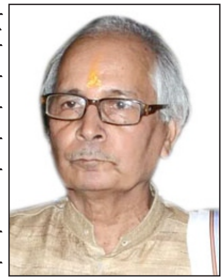

हाँ, आम का एक पेड़ था वह बसंत अवश्य मनाता। वृक्षों में आम सबसे भावुक होता है। बसंतपंचमी के दिन चाहे बूढ़ा आम हो या युवा, जरूर बौराता।कुछ तो पूरी तरह बौरा जाते जो समूह में होते अमराई वाले। मेरे यहाँ आम का अकेला पेड़ था। वह क्या हँसता, पर आज देखा तो उसके सघन हरे पत्तों के बीच मंजरियाँ।

तो यह छोटा आम भी बसंत मना रहा है। यही भावुकता है। छोटे लोग कुछ अधिक भावुक होते हैं। इसको नहीं पता कि अब इसकी हँसी ही पत्थर खिलायेगी। फलों का राजा कहा जाता है। आम जैसे लोकतंत्र में आम आदमी को राजा कहते हैं। जनता का सेवक बन कर नेता आते हैं हाथ जोड़ते हैं आम आदमी बौरा जाता है। फिर टिकोरे लगते ही पत्थर प्रारंभ। कैरी से लेकर पकने तक प्रहार। कच्चा पक्का जैसा मिले लूट का शिकार होना ही है।

तब आम बिकते नहीं थे पर अब तो बिकने भी लगे हैं। भावुकता जब बिकने लगे, तो खास लोग आम का फायदा उठाते ही हैं, कभी रोकर - कभी पत्थर मारकर। लोकतंत्र बचाना है तो लोक को आम नहीं, बबूल बनकर रहना होगा। बसंत वैभवशालियों का है आम का नहीं। लेकिन आम मानता कहाँ है। अच्छा है, मैं बबूल के बीच पला बढ़ा। काँटों के बीच रहना सीख लिया, जन समुद्र में रुचि नहीं रही। मेरे गाँव के बबूल वैराग्य की दीक्षा देते हैं और जीने की कला सिखाते हैं। बसंत पंचमी पर उनकी याद आती है। पता नहीं कैसे होंगे, पर यह विश्वास अवश्य है कि वे तमाम वृक्षों की तरह न कलमी हुए होंगे, न वर्णसंकर। अब भी अपनी जड़ो पर खड़े होंगे।❑

9452694078

रिश्ते

रिश्ते भी
होने लगे
बीज की तरह
चाहते उपजाऊ जमीन
माँगते खाद-पानी
सूख जाते हैं
बंजर जमीन में ।❑

साँप से गौरैया तक
सँभाल लेता है
बूढ़ा वट वृक्ष
भेद नहीं करता
कोयल और कौवे में
लेकिन सफेदपोश बक
उसे उजाड़ देते हैं ।❑

जरूरी नहीं
वटवृक्ष बनना
पर जरूरी है
अपने स्वरूप को
बनाये रखना। ❑

ठहराव मृत्यु है
गति जीवन है
लक्ष्य तक पथिक
पहुँचते हैं
मार्ग के वृक्ष नहीं
चलना तो पड़ता ही है
यदि पैर रुके
तो मन चलेगा
नेत्रहीन मन
जाने कहाँ ले जाये
चलते व्यक्ति का मन
चलायमान नहीं होता ।❑

ब्राह्मणों का अस्तित्व एवं विरासत

– डॉ वरुण कुमार तिवारी, गाजियाबाद

कठोपनिषद का मन्त्र है -

'वैश्वानरः प्रविशत्पतिथिब्र्ह्मिणो गृहाण।
तस्यैता ॐ शान्ति कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम्।।

अर्थात् साक्षात् अग्नि ही मानो तेज से प्रज्जवलित होकर ब्राह्मण अतिथि केरूप में गृहस्थ के घर पधारते हैं। साधु हृदय गृहस्थ अपने कल्याण के लिये उस अग्नि को शान्त करने के लिए उसे जल, पाद्य-अर्घ दिया करते हैं। अतएव हे सूर्यपुत्र! आप उस ब्राह्मण - बालक के पैर धोने के लिए तुरन्त जल ले जाइये। यह कथन यमराज की पत्नी यम से कहती है।

मनुस्मृति में कहा गया है - ब्राह्मण उत्कृष्ट देवता के समान हैं। ब्राह्मणों का कर्त्तव्य स्वाध्याय, व्रत, होम तथा यज्ञ है। (मनुस्मृति 2/28)। क्षमा, शील, धैर्य तथा निर्मलता ब्राह्मण के गुण हैं। देव तथा पितरों तक कव्य तथा गव्य पहुँचाने के लिए ब्राह्मण को ब्रह्मा ने अपने मुख से अन्य वर्णो से पहले उत्पन्न किया। जड़ चेतन में प्राणी श्रेष्ठ है। बुद्धिवाले प्राणी उनमें भी श्रेष्ठ है। ज्ञान के कारण इन मनुष्यों में ब्राह्मण पूज्य तथा श्रेष्ठ हैं। ब्राह्मण आत्मज्ञान के कारण मोक्ष प्राप्त करता है। अपनी योग्यता तथा श्रेष्ठता के कारण ब्राह्मण सब धन ग्रहण करने के योग्य है।

भगवान मनु ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्णो के सामजस्य पर बल देते हैं। उनके अनुसार धर्म तथा राजसत्ता में पारस्परिक सहयोग आवश्यक है। प्रसिद्ध विद्वान जे एच हट्टन का विश्वास है कि ऋग्वेद कालीन आर्यो के पूर्व भी ब्राह्मणों का अस्तित्व था। कतिपय अभिलेखों से इस बात की पुष्टि होती है कि अनेक ऋषि आचार्य थें। (स्रोतः जे.एच.हट्टन, ''कास्ट इन इण्डियाः इट्स नेचर फक्शंस एण्ड ओरिजिन' पृष्ठ 149-169)

जाति का पूर्ववर्ती रूप वर्ण हैं। वर्णो की उत्पत्ति ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में वर्णित है। इसी को मनुस्मृति, महाभारत तथा वृहदारण्यक उपनिषद स्वीकार करते हैं। परन्तु गोत्र शब्द कुछ परिवारों के समूह के लिए प्रयुक्त होता था। प्राचीन काल में गोत्रों का सम्बन्ध ऋषियों के आश्रम के आस पास के उस क्षेत्र से था जिसमें उस आश्रम की गौएँ चरा करती थी। गौओं के विचरण के क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग एक ही गोत्र के माने जाते थे। विवाह के निर्धारण में भी गोत्र का महत्व था। परन्तु ब्राह्मणों के गोत्र क्षत्रियों तथा अन्य जातियों में भी पाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि ब्राह्मणों में यह गोत्र क्षत्रियों तथा अन्य जातियों में पाये जाते है। (स्रोत - जो एच.हट्ट) लेकिन गोत्र में परिवर्तन होते रहते हैं।

विवाह में एक निषेध प्रवर का है। प्रवर एक पद्धति में पाये जाने वाले नामों को कहते हैं जिनका प्रयोग किसी विशेष वैदिक सम्प्रदायों के मानने वालों के द्वारा पूर्वजों की पूजा में वैदिक नियमावली के अनुसार होता है और किन्हीं विशेष पूजाओं के अनुष्ठानों में मंत्रों के द्वारा पूर्वजों के आह्वान में भी प्रवर का प्रयोग किया जाता है।

मनु के अनुसार ब्राह्मणों का मुख्य कार्य विद्याध्ययन - अध्यापन है। निश्चय ही विद्या का अर्थ वेदाध्ययन ही था जो अपने छह अंगों शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द तथा ज्योतिष से युक्त था। आचार्य (गुरू) का कर्त्तव्य छात्र को असत से सत की ओर अग्रसर करना था। उपनयन संस्कार के उपरान्त बालक गुरूकुल में भेज दिया जाता था। उपनयन नया जन्म है जिसके द्वारा बालक ज्ञान के प्रकाश युक्त जगत में प्रवेश करता है। पाराशर गृह्यसूत्र तथा याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार ब्राह्मण बालक को आठ वर्ष की अवस्था में गुरूकुल में भेज देना चाहिए। मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण पाँच वर्ष की अवस्था में भी अध्ययन आरम्भ कर सकते हैं। अब तो बुद्धिलब्धि (आई.क्यू) का स्तर जल्दी बढ़ जाने के कारण कम उम्र में ही बच्चों को कान्वेंट में भेज देते हैं। लेकिन कान्वेंटी शिक्षा क्रमशः उसे ब्राह्मणत्व से दूर ले जाती है। इसलिए अपनी महान परम्परा को कायम रखते हुए शिक्षा का कार्यक्रम चलाना चाहिए। आज के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक जीवन में केवल वैदिक ज्ञान देकर ब्राह्मण बालकों को उन्हें जीवन के कार्यक्षेत्र में सफल नहीं बना सकते हैं। उसे कान्वेंटी शिक्षा तो देनी ही होगी एवं हर उस जगह से शिक्षा लेनी होगी जहाँ-जहाँ ज्ञान का स्रोत है।

भगवान मनु के अनुसार विष से भी अमृत तथा अब्राह्मण से भी विद्या ग्रहण करनी चाहिए। (मनुस्मृति 2/240) परन्तु वेदों उपनिषदों एवं आर्य ग्रन्थों में वर्णित एवं निर्देशित ब्राह्मणत्व के मूल तत्व की शिक्षा भी अवश्य देनी चाहिए। स्नान तो प्रत्येक व्यक्ति करता ही है एवं खान-पान, रहन सहन में पवित्रता का ध्यान प्रत्येक व्यक्ति रखता ही है चाहे कितना ही बड़ा वैज्ञानिक या अफसर क्यों नहीं हो। तो पतन्जलि ऋषि द्वारा निर्देशित पवित्रता का निर्वाह करते हुए मात्र दस या चौबीस बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण मन को अद्भुत शान्ति देता है और प्रज्ञा को प्रखर करता है। यह दो तरफा स्थान है। भीतर अणु-अणु में गायत्री का कम्पन तथा बाहर जल का स्पर्श। वैज्ञानिक प्रयोगों से यह उच्चारण शरीर और मन को अत्याधिक शुद्ध करता है। पतन्जली के योग दर्शन में शौच का अर्थ चार प्रकार की शुद्धि है। शरीर की शुद्धि, भोजन की शुद्धि तथा मन की शुद्धि और चौथी है आत्मा भीतर के केन्द्र की शुद्धि। तो यदि हम बच्चों में ब्राह्मणत्व के मूल तत्वों की शिक्षा एवं संस्कार डाल सकें तो यह ब्राह्मण संस्कृति के विकास के लिए अत्यन्त ही उपयोगी तथ्य होगा। ❑ **– 8860478066**

क्या ब्राह्मण जातिवादी और स्वजाति पोषक थे/हैं?

– मेजर सरस त्रिपाठी, बंगलुरु

ब्राह्मण समाज के विरुद्ध आजकल चौतरफा आक्रमण हो रहे हैं। कई प्रकार का मिथ्या साहित्य लिखा जा रहा है। हजारों वीडियो भी आपको यूट्यूब और अन्य स्थानों पर मिल जाएंगे जिसमें ब्राह्मणों को तरह तरह की गालियां दी जा रही हैं और उनके ऊपर आरोप लगाए जा रहे हैं। इन आरोपों को सुन और देख कर विप्र समाज के लोग और मुख्यतः युवा वर्ग अत्यधिक उद्वेलित/उत्तेजित होता है। कई नवयुवा विप्र बंधुओं ने मुझे फोन पर और कई व्यक्तिगत या सामूहिक वार्ता में भी चर्चा के दौरान मुझसे यह प्रश्न पूछते हैं कि जो ब्राह्मण समाज पर आरोप लगाए जा रहे हैं उसका हमारे पास क्या उत्तर है। इन मिथ्या आरोपों की संख्या बहुत है। उनमें से एक प्रमुख आरोप है कि ब्राह्मण जातिवादी थे और जातिवादी हैं। उन्होंने अपनी ही जाति के लोगों को प्रोन्नत किया, अपनी ही जाति के लोगों की प्रगति के लिए कार्य किया । यह भी कहा जाता है कि संपूर्ण 'ब्राह्मण साहित्य' (सभी वेद, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण, पुराण, रामायण महाभारत और इस तरह के अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक साहित्य को 'स्वघोषित नवबुद्धिजीवियों' ने 'ब्राह्मण साहित्य' नाम दिया है) ब्राह्मणों की प्रशंसा में ही भरा हुआ है। यह आरोप लगाया जाता है कि चूंकि ब्राह्मण ही इन के लेखक हैं इसलिए उन्होंने ब्राह्मणों को महिमामंडित किया है और अन्य जाति के लोगों को बहुत ही नीचे स्थान प्रदान किया है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से उद्धृत -

'पूजहि विप्र सकल गुण हीना।। शूद्र न पूजहु वेद प्रवीणा ।'

तथा ऋग्वेद के मण्डल 10, सूक्त 90, ऋचा 12 में वर्णों की उत्पत्ति के विषय में उल्लेख को उद्धृत किया जाता हैः-

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायतः ॥'

(परमपिता के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य एवं पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई) का उल्लेख किया जाता है।

इसके अतिरिक्त यह कहा जाता है ब्राह्मणों ने अपनी प्रशंसा की, स्वयं को पुरस्कृत किया (अब तक 48 लोगों को भारत रत्न से सम्मानित किया गया है, उसमें से 22 यानि लगभग 46 फीसदी अकेले ब्राह्मण हैं।), उच्च और महत्वपूर्ण पदों पर अपनी ही जाति के लोगों को चयनित किया इत्यादि। आरोप अंतहीन हैं।

सच यह है कि ब्राह्मण कभी भी जातिवादी नहीं था। यहां-वहां इक्का-दुक्का छुटपुट घटनाओं को छोड़कर ब्राह्मण का दृष्टिकोण हमेशा 'वसुधैव कुटुंबकम÷ का था । ब्राह्मणों ने हमेशा संपूर्ण विश्व के कल्याण की बात कही और उसी दिशा में अनवरत प्रयास करते रहे । मैं अपने विप्र बंधुओं से यह निवेदन करना चाहता हूं कि जब कोई भी व्यक्ति आपको जातिवादी कहे तो आप उससे कुछ सवाल अवश्य पूछिए। क्यों कि बदलाव का एक यंत्र विरोध/प्रतिकार भी है।

प्रश्न यह है कि यदि ब्राह्मण जातिवादी थे तो मंदिरों में ब्राह्मणों की पूजा क्यों नहीं होती जबकि पुजारी सब ब्राह्मण ही हैं? यदि ब्राह्मण जाति वादी थे तो उन्होंने अपना 'दैवीकरण' क्यों नहीं किया अपने को ईश्वर के रूप में स्थापित क्यों नहीं किया? ब्राह्मण जिस श्रीराम, श्रीकृष्ण और महादेव शिव को परमात्मा मानता है उनका आधुनिक युग के जातिवादियो ने जातीय विभाजन कर दिया। यह ब्राह्मणों ने नहीं किया। कुछ कुछ लोग भगवान श्री कृष्ण को अपनी जाति का 'यादव' बताते हैं और कहते हैं कि वह यादव थे । कुछ लोग भगवान श्री रामचंद्र जी को क्षत्रिय बताते हैं। यदि जातीय विभाजन को माना जाए तो भगवान शिव एक किरात जाती के थे जो कि आज के वर्गीकरण में एक शेड्यूल्ड ट्राइब (जनजाति) है । भारत के अधिकतम मंदिरों में इन्हीं 3 देवताओं की पूजा होती है और इनमें से कोई भी ब्राह्मण नहीं है। यदि ब्राह्मण जातिवादी होते तो वशिष्ठ, नारद, जमदग्नि, परशुराम, व्यास, याज्ञवल्क्य, दुर्वासा, द्रोणाचार्य, अगस्त्य, पुलस्त्य इत्यादि की पूजा करते। क्या उनके पास ईश्वर तुल्य महामानवों की कमी थी? किंतु किसी ब्राह्मण की पूजा तो नहीं होती। जबकि दूसरी तरफ सभी देवताओं को संपूर्ण संसार में अमर करने वाले ब्राह्मण कवि और लेखक ही हैं । यदि ब्राह्मण जातिवादी होते तो महर्षि वेदव्यास अपने पूर्वजों और ब्राह्मणों की प्रशंसा में महाभारत लिखते और तुलसीदास (रामबोला द्विवेदी) रामचरितमानस ना लिखकर रावणचरितमानस लिखते क्योकि रावण एक ब्राह्मण था और एक ऐसा ब्राह्मण था जिसके समान धरती पर उस समय ना तो कोई विद्वान ना तो कोई धनवान ना तो कोई ज्ञानी ना तो कोई शक्तिशाली और ना ही कोई उसके सामान राजा था। फिर भी गोस्वामी तुलसीदास ने राम की प्रशंसा में रामचरितमानस लिखा ना कि

रावणचरित मानस। भक्त सूरदास जो कि मथुरा के चौबे थे, उन्होंने कृष्ण (यादवों द्वारा घोषित यादव) की प्रशंसा में कितने पद लिखे जो सूरसागर में संग्रहीत हैं वह ऐसा ग्रंथ किसी ब्राह्मण की प्रशंसा में भी लिख सकते थे । ऋषि मुनि ज्ञानी यहां तक कि भगवान परशुराम की प्रशंसा में भी लिख सकते थे परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि ब्राह्मण वस्तुनिष्ठ (objective) थे और सद्गुणों (noble virtues) की पूजा करने वाले थे न की जाति की। उन्होंने जिस देवों को अपना इष्ट समझा उसकी पूजा की और उसकी जाति का उनके वर्ण का उनके मन में कोई भी विचार नहीं था।

यदि मैं इन उदाहरणों को देता हूं तो कोई कह सकता है यह सब पौराणिक है मैं इस युग में ब्राह्मणों द्वारा अन्य जातियों के लिए किए गए कार्यों के विषय में भी कुछ बात करना चाहता हूं। दलित उत्थान के लिए जितना कार्य ब्राह्मणों ने किया है उतना स्वयं ना तो दलितों ने किया है और न किसी अन्य जाति ने। महाराष्ट्र के अधिकतर संत जिन्होंने दलितों के उत्थान के लिए अपना पूरा जीवन उत्सर्ग कर दिया, ब्राह्मण थे। आज के युग में कैलाश सत्यार्थी, बाबा आमटे, निर्मला देशपांडे जैसे ब्राह्मण महा पुरुषों/महिलाओं ने अपना संपूर्ण जीवन दलितों के उत्थान के लिए उत्सर्ग कर दिया । महात्मा गांधी के परम शिष्य आचार्य विनोबा भावे, जो महाराष्ट्र के ब्राह्मण थे, उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दलित उत्थान के लिए उत्सर्ग किया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर, राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती अनेकानेक।

1952 में जब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर मुंबई से अपना चुनाव हार गए तो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें फिर भी अपने कैबिनेट में शामिल किया और उन्हें भारत के पहले कानून मंत्री बनने का गौरव प्रदान किया। कान्ग्रेस के प्रत्याशी से ही हारे हुए व्यक्ति को अपने कैबिनेट में लेना अत्यंत सदाशयता का विषय था। भारत के सबसे महान और सबसे मजबूत साम्राज्य, मगध साम्राज्य की नींव आचार्य विष्णुगुप्त ने रखी। इतना बड़ा कूटनीतिज्ञ इतना बड़ा राजनीतिज्ञ विश्व इतिहास में कोई नहीं हुआ । ब्राह्मण विष्णु गुप्त ने किसी ब्राह्मण को देश का सम्राट नहीं बनाया बल्कि अनाम जाति के चंद्रगुप्त मौर्य को अपने साम्राज्य का सम्राट बनाया।

पुरस्कारों की बात करें तो यह योग्यता पर मिलता है, जाति पर नहीं। अन्यथा एशिया का पहला नोबेल पुरस्कार, 1913 में एक ब्राह्मण (गुरदेव रविन्द्र नाथ टैगोर) को ही क्यों मिलता? इसे देने वाले सभी गोरे यूरोपियन ईसाई थे, न कि भारत के ब्राह्मण। अभी तक 10 भारतीयों या भारतीय मूल के लोगों को नोबेल पुरस्कार मिल चुका है, उसमें से सात अकेले ब्राह्मण जाति के हैं। ये हैंः रवीन्द्र नाथ टैगोर, चंद्रशेखर वेंकटरमण, सुब्रमण्यम चंद्रशेखर (अमरीकी नागरिक), वेंकटरामन कृष्णन (अमरीकी नागरिक), कैलाश सत्यार्थी, आर के पचौरी और अभिजीत बनर्जी (अमरीकी नागरिक)। अगर भारतरत्न पाने वालों में 46 फीसदी ब्राह्मण हैं तो नोबेल पाने वाले भारतीयों में 70 फीसदी ब्राह्मण हैं। और हां, नोबेल पुरस्कार प्रदान करने वाली समिति में कोई ब्राह्मण नहीं है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, पेप्सिको, सिटी बैंक जैसी दुनिया की बड़ी कंपनियों के शिखर पर बैठे ब्राह्मणों का चयन, भारत के ब्राह्मणों ने नहीं किया है।

तथा कथित ब्राह्मणवाद के सबसे बड़े आलोचक ब्राह्मण ही हैं। ई एम एस नम्बूदिरीपाद केरल के उच्च कुलीन वेदपाठी परिवार में पैदा हुए और स्वयं गहन वेदाध्ययन किया। फिर भी वह संसार के पहले लोकतांत्रिक तरीके से चुने कमुनिस्ट मुख्यमंत्री बने। वह घोर ब्राह्मण विरोधी था। दक्षिण पंथ हो या बाम पंथ सबके प्रणेता वही है। इसीलिए सब जगह दिखाई देते हैं। ❑

– 9717494674

ब्राह्मणत्व और ब्राह्मणवाद

ब्राह्मण के लिए विहित विधान और आचरण का पालन करने वाला व्यक्ति अपने भीतर ब्राह्मणत्व का संपोषण करता है और बाहर उसके सद्गुणों का सम्प्रसारण। ब्राह्मणत्व का अर्थ है-सबमें सदैव ब्रह्म का दर्शन करना, जिसके लिए तुलसीदास ने लिखा है- **'सियाराम मय सब जग जानी, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।'** दुर्गासप्तशती में भी **'या देवि सर्वभूतेषु'** के रूप में प्राणिमात्र में व्याप्त गुणों/शक्तियों को 'नमस्तस्यै' कहा गया है।

ब्राह्मणवाद का अर्थ है- ब्राह्मणत्व को केवल ब्राह्मणों की परिधि में ही सीमित रखना। न तो इसका प्रकाश बाहर जाये, न ही बाहर से इसमें किसी का प्रवेश हो। साथ ही इस धारणा का पालन कि ब्राह्मण ही सर्वश्रेष्ठ है, गलत है। जहां तक ब्राह्मणेतर के ब्राह्मणीकरण का प्रश्न है तो इसके लिए भारतीय आचारसंहिता के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'मनुस्मृति' में कहा गया है- **'जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा विप्र समुच्चयते।'** अर्थात जन्म से शूद्र जाति में उत्पन्न होकर भी उसका कर्म ब्राह्मणोचित है तो उसे हम ब्राह्मण (विप्र) ही कहेंगे।

विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गए थे। सन्त रविदास बनारस में जूते सिलने वाले चमार थे, किन्तु कथनानुसार उनकी प्रार्थना पर भरी सभा में बनारस के ज्योतिर्लिंग बाबा विश्वनाथ वहाँ आ उपस्थित हो गए थे। इस घटना के बाद काशी-नरेश और वहां के ब्राह्मणों ने उनका अभिषेक कर न केवल ब्राह्मणीकरण किया, वरन राजा समेत इन ब्राह्मणों ने रविदास को पालकी में बिठाकर पूरा नगर घुमाया भी था। इसका विलोम भी इतना ही सत्य है। पथभ्रष्ट ब्राह्मणों का शुद्रीकरण हो जाता था अथवा शूद्र कर्म करने वाले ब्राह्मणों को 'शूद्र' की संज्ञा दी जाती थी।❑

ऐसा था हमारा कन्नौज

छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध से कान्यकुब्ज (कन्नौज) की वास्तविक उन्नति प्रारम्भ होने लगी। मौंखरी नरेश बहुत शक्तिशाली थे, यहाँ के नागरिकों की संस्कृति उच्च कोटि की थी, उनका रहन सहन अनुकरणीय था, प्रतिहारों के काल के प्रसिद्ध कवि राजशेखर ने लिखा है कि कान्यकुब्ज की ललनाओं का केश विन्यास अलंकार-प्रसाधन, वेश भूषा एवं भाषा सम्पूर्ण भारत में आदर्श मानी जाती थी। सम्राट हर्ष के समय यहाँ का वायु मण्डल पूर्ण रूप से बौद्धिक हो उठा था। जिस प्रकार बौद्ध धर्म के उदय अस्त से पाटलिपुत्र का सम्बन्ध था उसी प्रकार वैदिक धर्म के उदय अस्त से कनौज का सम्बन्ध है।

हर्ष की मृत्यु के बाद वर्मन वंश का प्रताप बढ़ा यशोवर्मन शस्त्र और शास्त्र दोनों में प्रवीण था, प्राकृति कवि वाक्पति राज ने अपने 'गौड वाहो' काव्य में उसके दिग्विजय का वर्णन किया है। वाक्पति राज अपने को भवभूति का शिष्य मानता है और भवभूति यशोवर्मन का राज कवि था। 816 ई. में वर्मन वंश का पतन हुआ। और श्रीमाल के प्रतिहार राजपूत नरेश नाग भट्ट ने कन्नौज पर आधिपत्य स्थापित किया प्रतिहार वंश के राजाओं में भोज और महेन्द्र पाल विशेष प्रसिद्ध हुए 1000 ई. के लगभग प्रतिहारों के हाथ से कन्नौज का साम्राज्य राठौर राजपूतों के हाथ आया अन्तिम सम्राट जयचन्द के साथ कन्नौज के वैभव का अस्त हो गया।

कन्नौज 5 मील लम्बे 1 मील चौड़े घेरे के अन्दर बसा था। अरबों ने जब सिंध विजय किया और मुलतान में अपनी राजधानी बनायी उस समय कन्नौज की बागडोर राय हरिश्चन्द्र के हाथ थी अरब सेनापति मोहम्मद बिन कासिम ने उसके पास अरबों की अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव भेजा राय हरिश्चन्द्र का उत्तर था 'यह राष्ट्र हमारी आधीनता में 1600 वर्षों से रहा है किसी शत्रु ने अब तक उसे पराजित नहीं किया जब हमारे तुम्हारे शौर्य की परीक्षा युद्ध क्षेत्र में हो जाएगी तब हम कन्नौज के आधिपत्य का निर्णय करेंगे।' ❑

गोत्र प्रवर महिमा

गोत्र और प्रवर द्वारा अपनी पवित्र कुल-परम्परा पर स्थिर लक्ष्य रहता है। कल्पादि और महाकल्पादि की सृष्टि के साथ-साथ गोत्र प्रवर का सम्बन्ध है क्योंकि ब्रह्मा जी की उत्पत्ति से साथ ही उनके मानस पुत्र रूप से उत्पन्न हुए ऋषियों से ही गोत्र प्रवर का सम्बन्ध चला है। यह गोत्र प्रवर विज्ञान की ही महिमा है कि हिन्दू जाति तब से अब तक जीवित है। उस समय से लेकर अब तक पृथ्वी पर लाखों जातियां प्रकट हुई और काल के गाल में चली गई। परन्तु दैवीं जगत पर विश्वास करने वाली वर्णाश्रम धर्म मानने वाली, अपनी पवित्रता की रक्षा करने के लिए गोत्र प्रवर की श्रृंखला के आधार पर चलने वाली सनातन धर्मी प्रजा अभी तक अपने अस्तित्व की रक्षा कर रही है।

जिस मनुष्य जाति में वर्णाश्रम व्यवस्था नहीं है, गोत्र-प्रवर की सुव्यवस्था का विचार नहीं, उस मनुष्य जाति पर अर्यमा आदि नित्य पितरों की कृपा न होने से वह जाति जीवित नहीं रह सकती।

अतः जिनमें स्वजातीय अभिमान है, जो अपने स्वधर्म का गौरव समझते हैं जो जन्मान्तर विज्ञानमानते हैं और जो रजवीर्य की शुद्धता का गौरव समझते हैं उनको इस समय प्रमाद ग्रस्त न होकर चेतना चाहिए। ❑

सिरदर्द व दिमागी कमज़ोरी में लाभकारी

भूत मार्का चार तेल

भूत निवास, गांधी नगर, कानपुर

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून)

संस्कृति से जुड़ा पर्यावरण

ऋग्वेद में सोम वृक्ष और अथर्ववेद में पलाश वृक्ष की पूजा का वर्णन है। वट वृक्ष को सुहाग प्रदान करने एवं उसकी रक्षा करने वाला माना जाता हैं। पीपल में शनिवार के दिन पूजा करने से शनि ग्रह टल जाता है। चेचक रोगग्रस्त बच्चे को नीम के पत्ते से हवा की जाती है। पीपल के पत्ते पर भगवान का वास है। पीपल में अन्य सभी वृक्षों से अधिक आक्सीजन छोड़ने की शक्ति है। तुलसी का पौधा तो हर घर के आंगन में होना ही चाहिए।

वृक्षों की पूजा करने के पीछे पेड़-पौधे को सुरक्षित रखने, वन को बढ़ावा देने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने की भूमिका छिपी हुई है।

हम जो कार्बन डाइ आक्साइड छोड़ते हैं वह वृक्षों के लिए प्राणदायिनी है और इसके बदले में हम पाते हैं प्राण दायक आक्सीजन।

आम की पत्तियों के वंदनवार फूलों का श्रंगार, नीम, आंवला, वेल वृक्ष की पवित्रता वृक्षों के पूजने की परम्परा अविच्छिन्न रूप से हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई है। इसे ढकोसला मात्र न समझें। बल्कि यह हमारे प्रकृति प्रेम की सूचक है तथा वृक्षों को पल्लवित पुष्पित देखने की लालसा का घोतक है। ❑

दुर्गासप्तशती

– आचार्य निशांतकेतु, गुरुग्राम

- शक्ति-साधना भारत की अन्यतम उपलब्धि है। शक्ति देवी हैं। उन्हें आद्या और भगवती कहते हैं। वे ही दुर्गा और दुर्गतिनाशिनी हैं। शक्ति-साधना के लिए दुर्गासप्तशती सर्वोत्तम और सर्व लोकप्रिय ग्रन्थ है।
- दुर्गेया होने के कारण ही दुर्गा 'दुर्गा' हैं। दुर्गा की उपासना अनादिकाल से चली आ रही है।
- दुर्गा क्रियाशक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। ब्रह्मा भाव है तो दुर्गा कर्म। बिना क्रिया के विचार का महत्व नहीं। ब्रह्मा बिना दुर्गा के निष्क्रिय हो जाते हैं।
- दुर्गा संघशक्ति हैं। ब्रह्मा-विष्णु-महेश सभी देवताओं की संघशक्ति का प्रतीक। अतः दुर्गा की उपासना संघशक्ति की उपासना है।
- विश्व एक रणक्षेत्र है, जहां सत और असत का संग्राम होता रहता है। दुर्गा आसुरी सम्पत्ति पर देवी शक्ति की विजय के रूप में प्रतीकित हैं।
- दुर्गापूजा की नवरात्रि विधि का कालदर्शन-सम्बन्धी वैज्ञानिक महत्व है। दुर्गा में त्रिकालदर्शन का अधिष्ठान है। काल ही ऋतु परिवर्तन लाता है। वे भूत, वर्तमान और भविष्य इस त्रिकाल की नियामिका हैं। वे त्रिलोक (भुः-भुवः-स्वः) तक व्याप्त हैं। उस त्रितत्व की संहति हैं, जिससे यह सृष्टि चक्र गतिशील है।
- दुर्गा मातृसत्तात्मक स्वरूपिणी हैं। मातृसत्तात्मक समाज में नारी का मातृ रूप पूज्य माना गया है। कृषि-प्रधान आर्य-जाति ने जब आवर्तन (आर्यावर्त) और यायावरीयता को त्यागकर स्थिरता-पूर्वक निवास करते हुए खेती-बाड़ी का आरम्भ किया, तो समाज में माता का स्थान सर्वोच्च हो गया।
- पुरुष तो शब्द अक्षर मात्र है, शक्ति ही अर्थरूप में जगतव्यापिणी बनती है।
- दुर्गासप्तशती सम्पूर्णरूप से तंत्र-ग्रन्थ है। यह योग और भोग दोनों फलों को देने वाला है।❑

दुर्गासप्तशती और गीता

'दुर्गासप्तशती' और 'गीता' में अद्‌भुत समता है। गीता में सात सौ श्लोक हैं, दुर्गासप्तशती में भी सात सौ मंत्र हैं (535 श्लोक, 108 अर्धश्लोक, 57 उवाच = 700 मंत्र)। गीता महाभारत का अंग है, दुर्गासप्तशती मार्कण्डेय पुराण का। दोनों के रचनाकार महर्षि व्यास हैं। गीता में उपदेष्टा श्रीकृष्ण और श्रोता अर्जुन हैं, दुर्गासप्तशती में उपदेष्टा मेधा ऋषि हैं और श्रोता राजा सुरथ व समाधि वैश्य। गीता पूर्वोक्त है, दुर्गासप्तशती उत्तरोक्त। दोनों रचनाएं युद्धभूमि की पृष्ठभूमि पर रचित हैं। असुर विनाश दोनों ग्रन्थों का उद्देश्य है।

गीता निष्काम कर्मयोग या अनासक्तियोग का सर्वोत्तम ग्रन्थ है जबकि सप्तशती कामना लाभ, आकांक्षा-पूर्ति, इष्ट-साधना और साधना-सिद्धि का। विश्लेषणीय बिंदु है कि एक ही द्रष्टा कवि महर्षि व्यास के मानस का एक पक्ष निष्काम कर्म की ओर प्रेरित करता है तो दूसरा पक्ष सकाम साधना की ओर ले जाता है। सप्तशती लोकयात्रा में सफल और विजयी बनाती है।

वेद का लोक-सुलभ सार ग्रन्थ है- श्रीमद्भगवद्गीता और तंत्र का ग्रन्थ-सार है- दुर्गासप्तशती। तुलसीदास ने रामचरितमानस में वेद और तंत्र दोनों को सम्मिलित किया है। 'नाना-पुराण-निगमागम-सम्मत' निगम वेद है और आगम तंत्र। नवरात्रि में रामचरितमानस या रामायण पाठ का विधान है। दुर्गासप्तशती तंत्र ग्रन्थ के रूप में योग और भोग दोनों को देने वाला ग्रन्थ है। रामकथा मोक्ष या योग या कैवल्य की ओर ले जाने वाली विद्या है। राम ऋषि-संस्कृति के प्रतीक पुरुष हैं। भारतीय संस्कृति ऋषि-संस्कृति और कृषि-संस्कृति का सम्मिलित स्वरूप है।❑ - 9811096352

- *संवाद संबंधों की संजीवनी है। संवाद हीनता से उत्पन्न शून्य कभी नहीं भरता।*
- *जिसे सुनना नहीं आता उसे वहम है कि उसे बोलना आता है।*

- डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय

– सौजन्य से –

पं. ओम शंकर मिश्र

आश्रय मेन्शन, 30-21-22, आवास विकास कॉलोनी-3 पनकी, कानपुर

ऐसे थे वे लोग

प्रस्तुतिः अनूप शुक्ल, कानपुर

सन 1937 की बात है कानपुर से 30 किलोमीटर दूर बैरी सवाई कस्बे में प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता वेंकटेश्वर नारायण तिवारी के नेतृत्व में नारायणी साथ थी। वालंटियरों ने झंडा गान शुरू किया। झंडा गान की गुछ पंक्तियाँ भूल गये और आगे कि पंक्तियाँ गाने लगे, नारायणी ने टोका कि झंडा गान गलत गाया जा रहा हैं। वेंकटेश जी ने नारायणी को गाने के लिए बुलाया। उन्होंने पूरे जोश से झंडा गान प्रस्तुत किया। वेंकटेश नारायण जी ने दस चांदी के सिक्के पुरस्कार में दिए। और आगे पढ़ने व बढ़ने का आशीष दिया। 1938-39 में रूरा में पंडित जवाहरलाल नेहरू की जनसभा में मंडल कांग्रेस द्वारा 1001 रूपये की थैली भेंट करनी थी। बारह वर्षीय नारायणी ने खादी की धोती पहनी और 1001 रूपये की वजनी थैली लेकर भेंट को आगे बढ़ीं। वजनी थैली लाने में दिक्कत को देख पंडित नेहरू आगे बढ़ कर थैली लेकर स्नेह से नारायणी पर हाथ फेरा व आशीष दिया। 1942 में नारायणी के पिता रामेश्वर दीक्षित क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय थे। उनकी टीम थाने को फूँकने के प्रयास में थी, लेकिन पुलिस बल बढ़ा दिये जाने के कारण विफल रहे। उनके घर जुगराजपुर में एक बांस में ऊँचा झंडा लहराता रहता। थाना फूँकने की योजना जब पुलिस को पता चली तो छापेमारी शुरू हो गई। नारायणी के पिता भी भूमिगत हो गए। नारायणी ने अस्त्र-शस्त्र व सहित्य घर में इधर उधर छिपा दिया। घर पर नारायणी व उनकी माँ थी। पुलिस द्वारा दरवाजा खोलने की कोशिश की जाने लगी तब नारायणी जी ने हाथ में फरसा ले कर द्वार खोला व खोलते ही पुलिस दल पर फरसे से कई वार कर दिए। फिर पुलिस की आक्रामकता से बचने के लिए घर की छत पर पहुँच कर छतों पर दौड़ लगाते हुए पांडु नदी के तट पर पहुँच गई और नदी में कूद गई। और छिप कर उस पारके गांव निगोहा में आ गई। छह माह भूमिगत रहीं और कांग्रेस व क्रांतिकारियों का संदेश ले कर मैथा जा रही थीं, उसी समय मुखबिरी होने के कारण पुलिस ने धोखे से गिरफ्तार कर लिया। जेल में तारा अग्रवाल व प्रभा दीक्षित के साथ रखी गई। जेलर लेडली जब निरीक्षण को आया तो तारा अग्रवाल के साथ देख कर चिहुंक उठा - ओ मिसेज अग्रवाल ए बाबा (लड़की) बड़ा खतरनाक है। बहुत बड़ा रिवर फांद गया ये हमारी जेल की दीवार भी फांद जाएगा! सभी बैरिक में ही रहे, बाहर खुले में न रहे। 3 मई 1927 को जुगराजपुर बिठुर में जन्मी नारायणी जी का विवाह प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि सेनानी व शिक्षाविद पं. कालिका प्रसाद त्रिपाठी मलिन्द के साथ हुआ। ❑

महामना मदनमोहन मालवीय (1861-1946) के कनपुरिया सहपाठी इंजी. मातादीन सुकुल (1862-1925) ने 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' का नक्शा/ भवन डिजाइन बनाया था। मानवीय जी ने 1904 में काशी नरेश के साथ बैठक कर अपने चिर स्थाई स्मारक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का बीज रोपित किया जो 1927 में पूर्ण हुआ। मालवीय जी को जब काशी में भूक्षेत्र मिला तो अपने सहपाठी इंजीनियर पं. मातादीन सुकुल को भवनों के नक्शे व डिजाइन तैयार कराये और निर्माण के दौरान भी सहयोग लिया गया। स्वामी भास्करानंद सरस्वती के शिष्य मातादीन सुकुल इंजीनियर कानपुर के नर्वल के थे और बाद में बनारस के औरंगाबाद में रहने लगे थे।

रोहनिया, वाराणसी में उनके द्वारा बनवाया मंदिर, सरोवर और बाग है अब वहां पर मातादीन सुकुल इन्टर कॉलेज है। सुकुल जी की दोस्ती मालवीय जी व सर आशुतोष मुकर्जी से कोलकाता यूनीवर्सिटी में स्नातक व परास्नातकीय शिक्षा के दौरान हुई थी।

कानपुर के सनातन धर्म कालेज (वी एस एस डी कॉलेज) की स्थापना बैठक के अभिलेखों में भी लिखा है कि जिस प्रकार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भवन (ब्लाक) मातादीन सुकुल इंजीनियर ने बनाये है उसी प्रकार के भवन सनातन धर्म कॉलेज के बनाये जाए। ये हस्तलिखित कार्यवाही वी एस एस डी कॉलेज के स्वर्ण जयंती अंक में भी प्रकाशित है। ❑

बात प्रथम विश्वयुद्ध के आसपास की है। मिल मालिक मजदूरों का जमकर उत्पीड़न कर रहे थे। वेतन में कटौती करना आम बात हो चली थी। एल्गिन मिल प्रबंधन का भी यही रवैया था। इससे नाराज कुछ मजदूरों ने भैरव घाट पर इकट्ठा होकर आंदोलन की रणनीति बनाई। अपना मुखिया बनाया पं. कामदत्त को। वह भी एल्गिन मिल के ही कर्मचारी थे और बड़े कर्मकांडी थे। पहली बार जब हड़ताल हुई, तो उसमें 21 मजदूर शामिल हुए, लेकिन पं. कामदत्त ने फिर ठान लिया कि अबकी बार बड़ी हड़ताल कराएंगे। हुआ भी यही। इसके लिए उन्होंने भैरव घाट पर बैठक की और मजदूरों से कहा कि यहां पर बैठक करने का मकसद है कि श्मशान ही व्यक्ति का अंतिम पड़ाव होता है। इसमें बैठक करने से बिल्कुल विरक्ति हो जाएगी। ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति की जिंदगी में यही हो सकता है। अतः हमें भी यह मान कर चलना चाहिए कि अपना हक लेने के लिए मरना भी पड़ा, तो कोई फिक्र नहीं। कामदत्त के अगुवाई में शुरू हुआ आंदोलन बाद में मजदूर सभा की स्थापना की नींव की ईंट बना। ❑

परिचयः सुकवि चतुरेश

आठ कोस असनी भिटौरा है नवें कोस,
पाँच कोस किसनपुर एकडला के पास है ।
तीस कोस कानपुर फतुहाबाद बारा कोस,
बीस कोस चित्रकूट जहाँ राम दास है ।।
तीस प्रागराज काशी है साठ कोस,
डेढ़ कोस सूर्यसुता करत पाप नास है ।
खींची भगवंत भूप मेरो चतुरेश नाम,
गाजीपुर परगना असोथर में धाम है ।। ❑

मैं न जिऊं बिन राम

– नीरजा माधव , वाराणसी

घोर मुगल शासन काल में कबीर लिख रहे थे, **'हरि मोरा पिउ, मैं राम की बहुरिया'**। मेरी ही तरह कई लोग यह सोचते होगें कि कबीर को आखिर राम का ही पतित्व या स्वामित्व क्यों चाहिए? भारत में एक बड़ा वर्ग है, जो अपने नाम में बड़े गर्व से 'राम' जोड़ता है। पिछले दशक तक भी गांव की कोई भोली-भाली स्त्री बहू सहज ढंग से यह बताती थी कि हमारे राम परदेस गए हैं कमाए खातिर। मैं उन महिलाओं की बात नहीं कर रही, जिनके लिए पति राम नहीं, बल्कि 'हसबैंड' से भी आगे 'पार्टनर' हो गए हैं। मैं उन दुखियारी महिलाओं की भी बात नहीं करती, जिनके पति रावण से भी बदतर आचरण करने लगे हैं। लेकिन अधिकांश मध्य और निम्न मध्यवर्गीय भारतीय स्त्रियों के लिए उनके पति राम ही होते हैं। दूसरी ओर, शास्त्रों और मंत्रों से परे अपढ़ जन भी **'राम ही राम रटन करूं जिभिया रे'** गुनगुनाता है। स्वयं भरत के मुख से भी निकल जाता है, **'जननी, मैं न जिऊं बिन राम'**। अंतिम यात्रा की गति भी बिना राम नाम के सत्य नहीं होती।

विचारणीय प्रश्न यह है कि यह राम आखिर हैं कौन, जो चिर नवीन स्मृति की तरह बार-बार कौंध उठते हैं? क्यों इनके बिना किसी भी काल या क्षण में जीवन संभव नहीं होता, मरण अनंत यात्रा का द्वार नहीं बन पाता? कोई राम को रोम-रोम से झटककर अलग करने पर तुला है, तो किसी की सांसें उसी के नाम पर चलती हैं। क्रोंच वध से उद्वेलित वाल्मीकि को देववाणी हुई कि रामकथा लिखो, तो दूसरी ओर, सनातन मान्यता के अनुसार, एक पूरा युग ही राम के नाम हो गया। आखिर कौन हैं राम? राम केवल राजा होते, न्यायी होते, सदाचारी होते, धर्म प्रवर्तक होते, तो शायद उनकी स्मृति भी आज क्षीण हो चुकी होती। वह भी मात्र इतिहास बनकर रह गए होते, लेकिन राम इतिहास नहीं हैं। वह हर पल वर्तमान हैं। धर्म का कोई अपना पंथ न चलाते हुए भी धर्म का आदि-अंत बने हुए हैं। स्थूल रूप में अपने युग में नीर-लीला करते हुए भी अतीत नहीं हुए हैं, वर्तमान हैं। निर्गुनिया कबीर को भी पिय या स्वामी के रूप में राम ही भाए। राम की बहुरिया बन पूर्णता प्राप्त की उन्होंने। फूटा कुंभ, जल का अद्वैत स्थापित किया। **'ऐसे घट घट राम हैं दुनिया देखे नाहि'** कहकर हम सबको राम को देखने की एक दृष्टि प्रदान की।

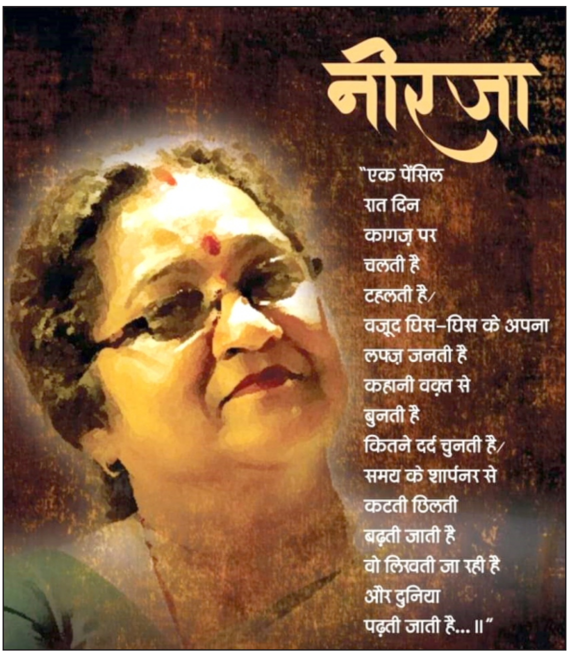

हिंदी साहित्य कोश में राम और राम-कथा साहित्य के विकास की एक विस्तृत व्याख्या मिलती है। उसके अनुसार, वैदिक काल के पश्चात लगभग ई.पू. छठी शताब्दी में राम-कथा विषयक गाथाओं की सृष्टि होने लगी थी। आगे चलकर रामकथा की लोकप्रियता को ध्यान में रखकर बौद्धों और जैनियों ने भी राम को अपने-अपने धर्म में महत्वपूर्ण स्थान दिया। बौद्ध धर्म में दशरथ जातक तथा दशरथ कथानकम् जैसे जातक साहित्य में राम को बोधिसत्व मानकर रामकथा को स्थापित किया गया है। जैन धर्म में बौद्ध धर्म की अपेक्षा अधिक समय तक रामकथा की लोकप्रियता दिखती है। भारत के लगभग सभी समाजों और सभी भाषाओं में राम कथा का समृद्ध साहित्य मौजूद है।

विदेश में रामकथा का प्रसार बौद्धों द्वारा भी हुआ। **'अनामकं जातकम्'** और **'दशरथ कथानकम्'** का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। उसके बाद संभवतः आठवीं शताब्दी में तिब्बती रामायण की रचना हुई। खोतानी रामायण का काल लगभग नौवीं सदी का है और यह पूर्वी तुर्किस्तान से संबद्ध है। कंबोडिया में राम केति तथा ब्रह्मदेश में योंतो ने राम गायन की रचना की, जो उस देश का महत्वपूर्ण काव्यग्रंथ माना जाता है।

अयोध्या नगरी की महिमा का वर्णन करते हुए स्कंद पुराण में कहा गया है - **अयोध्यायै नमस्तेऽस्तु राममूर्त्यै नमो नमः।** अर्थात राम स्वरूप अयोध्या नगरी को बार-बार प्रणाम है। स्कंद पुराण में राम जन्मभूमि के माहात्म्य और उसकी चौहद्दी का जन्मस्थान स्वतः सिद्ध है, पैगंबर का जन्मस्थान नहीं बदला जा सकता, उसी तरह राम का जन्मस्थल स्वतः सिद्ध है और बदला नहीं जा सकता। इसी अयोध्या में राजा दशरथ के पुत्र के रूप में राम ने जन्म लिया। राम लगभग पूरे भारतीय साहित्य के केंद्र में हैं, वैश्विक क्षितिज पर विराज रहे हैं। हर पल, हर प्राणी के साथ हैं, प्राण हैं, इसलिए झुठलाए नहीं जा सकते।❑

– 9792411451

माँ

– राकेश मिश्र, नई दिल्ली

दुग्ध का ऋण ही बहुत है
और फिर आँसू बहाकर,
डाल मत अधिभार मुझ पर
जन्मदे ! मैं सुत अकिञ्चन !

मैं कदाचित दे न पाया,
माँ ! तुझे पल भी खुशी का,
आह ! कितना मैं अभागा।
वत्सले ! तूने निरर्थक
पुत्र मुझ सा प्राप्त कर भी,
नेहरस में नित्य पागा।
पर दिये, नभ भी दिया था,
किन्तु मैं ही उड़ न पाया,
हँस रहा संसार मुझ पर,
जन्मदे ! मैं सुत अकिञ्चन।

जब कलुषता से घिरूँ मैं,
क्षीरदे ! तेरा परस भर,
फिर मुझे पावन बनाये।
अमृते ! तेरी नजर में
अद्यतन शिशुरूप सा मैं,
जो हृदय में जा समाये।
वंदिते ! सर्वस्व देकर
तू जता पाती नहीं क्यों
दण्ड का अधिकार मुझ पर,
जन्मदे ! मैं सुत अकिञ्चन !

स्वार्थ है या नेह है यह !
है न मुझको ज्ञान किञ्चित,
किन्तु रोयें तक बदन के।
माँगते वरदान प्रभु से,
जन्म चाहे कोटि हों पर
भाग हों इस श्याम तन के।
कौन सा है पुण्य-प्रतिफल,
जननि ! तूँ बरसा रही है,
पावनी रसधार मुझपर,
जन्मदे ! मैं सुत अकिञ्चन।❑

–9017793105

बेटियाँ

बेटी खेलती है, बाबुल की गोद में
बढ़ती है परिवार में, और फिर एक
चंचल सरिता की तरह समा जाती है
ससुराल रूपी सागर में।

इसी समर्पण का नाम है परिणय
जिसके साथ ही मिलता है, उसे एक नया संसार,
एक नया परिवेश।

जहां चुलबुले कदमों का, प्रवाह बढ़ता जाता है
सधे कदमों में और बेटी बाबुल के आंगन
से निकलकर हो जाती है किसी घराने की बहू।

जो सेतु बन जोड़ देती है
दो परिवारों को, दो संस्कारों को
दो परम्पराओं को।

बेटियाँ समुद्र होती हैं, उन्हें कुछ भी दो लौटा देंगीं
उन्हें याद करो न करो,
वे बराबर आकर करती हैं सराबोर
हमारे तटों का, अनगिनत रहस्य अपने में समेटे
बेटियाँ होती हैं दो तिहाई भाग हमारे घर का।

बेटी परियों का रूप होती हैं
कड़कती ठंड में सुहानी धूप होती हैं
वह आंगन में फैला सुबह का उजाला है
वह होती हैं चिड़िया की चहचहाट। ❑

–श्रीमती सुलेखा शुक्ला

श्रीमती सुलेखा शुक्ला (पत्नी बृजेश शुक्ल) कान्यकुब्ज महिला मण्डल (कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इन्दौर की सहयोगी संस्था) की अध्यक्ष हैं। श्रीमती कुसुम तिवारी, श्रीमती सुनीता तिवारी, श्रीमती कविता दुबे, श्रीमती पुष्पा दुबे, श्रीमती अमिता मिश्रा, श्रीमती कल्पना पाण्डेय, श्रीमती पूजा तिवारी, श्रीमती शिखा अवस्थी आदि की सशक्त टीम हल्दी कुंकुम, होली मिलन, दीपावली मिलन, करवा चौथ आदि तीज त्योहारों के सामूहिक आयोजनों के द्वारा कान्यकुब्ज सभ्यता संस्कृति को जीवंत रखने में महती भूमिका निभा रही है। जनवरी 2021 में श्रद्धेय विष्णु भैया के संरक्षण में के के महाविद्यालय में आयोजित हल्दी कुंकु में 600 से अधिक महिलाओं के मिलन में परंपरागत खेलों व लोकगीतों का कार्यक्रम उत्साहवर्धक रहा।

स्मृतिशेष श्रीमती कृष्णादेवी शुक्ला 'बाईजी' के संरक्षण-निर्देशन में सिंचित-पल्लवित महिला मंडल मालवा-संस्कृति और कान्यकुब्जियत को जीवंत रखने, परिवार-संस्था को सुदृढ़ बनाये रखने व नई पीढ़ी में शुभ संस्कारों का बीजारोपण करने की दिशा में सतत प्रयासरत है।❑

स्वाद, शिक्षा और व्यवसाय का केन्द्र
इन्दौर

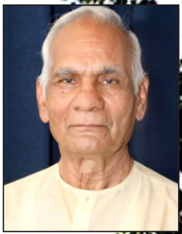

– हरेराम वाजपेयी

क्षिप्रा के तट पर स्थित महाकालेश्वर (उज्जैन) तथा नर्मदा तट पर श्रीओंकारेश्वर महादेव (खण्डवा) के मध्य भाग में बसे इन्दौर शहर का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इंद्रेश्वर महादेव का मंदिर होने के कारण यह स्थान 'इन्द्रपुर' कहलाया। बताते हैं, इस क्षेत्र को इन्दौर का नाम 3 मार्च, 1716 को मंडलोई जमींदारों के शासनकाल में मिला। पेशवा बाजीराव प्रथम ने मराठा साम्राज्य विस्तार की कड़ी में 1724 को मालवा क्षेत्र पर कब्जा कर यह क्षेत्र अपने विश्वस्यनीय सेनापति मल्हारराव होलकर को सौंप दिया। जुलाई 1732 में होलकर वंश का पूर्ण शासन हो गया। अंग्रेजों के अधीन होने से पूर्व (1732-1818 ई.) तक होलकर वंश का पूर्ण अधिपत्य रहा। अहिल्याबाई होलकर (1765-1795 ई.) होल्करवंश का स्वर्णिम काल था।

मध्यप्रदेश बनने से पूर्व 1 नवम्बर, 1956 से पहले तक इन्दौर मध्यभारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी। परमारकालीन शनि मंदिर, खजराना का गणेश मंदिर, पश्चिम पहाड़ी पर स्थित माता बिजासन देवी का मंदिर आस्था के केंद्र हैं। कचौरी नमकीन, पोहा जलेबी इन्दौर का पसंदीदा जलपान है। फलाहारी भोजन-नाश्ता साल के 365 दिन उपलब्ध है। रात्रि 10 बजे तक छप्पन बाजार व रात्रिकालीन सर्राफा बाजार स्वाद-रसिकों से भरा रहता है।

इन्दौर सामाजिक, सांस्कृतिक व कला-साहित्य प्रेमियों, पर्यावरण-रक्षकों का भी गढ़ रहा है। गायिका लता मंगेशकर, गायक किशोर कुमार, जॉनी वॉकर, क्रिकेट कप्तान मुश्ताक अली, कवि राहत इंदौरी, पत्रकार प्रभाष जोशी, वेदप्रताप वैदिक, उस्ताद उमीर खां संगीतज्ञ जैसे लोकप्रतिष्ठ व्यक्तियों की जन्म/कर्मस्थली। उत्तर-दक्षिण को जोड़ने का लक्ष्य लेकर महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का उद्घोष यहीं किया था। वर्ष 1910 में संस्थापित श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति का रवींद्रनाथ टैगोर मार्ग स्थित भवन, कार्यालय व पुस्तकालय का शिलान्यास वर्ष 1918 में गाँधीजी के करकमलों से ही हुआ था। वर्ष 1927 से नियमित प्रकाशित साहित्यिक मासिक 'वीणा' का प्रकाशन समिति द्वारा होता है। इन पंक्तियों के लेखक समिति के साहित्यमन्त्री व 'वीणा' के प्रबंध सम्पादक है।

इन्दौर से हिन्दी का पहला समाचार पत्र प्रकाशन 'मालवा अखबार' वर्ष 1849 से शुरू हुआ। 1850-60 के मध्य राजवाड़ा में सार्वजनिक पुस्तकालय, 1988 में क्रिश्चियन कॉलेज, 1860 में इन्दौर शिक्षा मण्डल, 1878 में मेडिकल कॉलेज, 1880 में इंजीनियरिंग कॉलेज, 1881 में बिलावली तालाब, 1893 में होलकर कॉलेज, 1906 में बिजली घर, 1904 में फायर ब्रिगेड की नींव पड़ी। 1935 में छावनी मंडी, 1965 में रवीन्द्र नाट्य गृह 1964 में इन्दौर विश्वविद्यालय (जो अब देवी अहिल्या विश्वविद्यालय कहलाता है और लेखक ने प्रथम बैच के छात्र के रूप में संस्कृत से परास्नातक किया) आदि की स्थापना हुई।

With Best Compliments from:

Jash Engineering Ltd.

Manufacturer of Water Control Gates, Screening equipment, Knife Gate Valves, Archimedes Screw Pumps, Archimedes Screw Turbines for hydropower generation, Water hammer control equipment, Process equipment required for Water & Wastewater treatment plant.

Subsidiaries:

Rodney Hunt Inc, USA
Jash USA Inc, USA
Mahr Maschinenbau Ges.m.b.H, Austria
Engineering & Manufacturing Jash Ltd, Hong Kong
Shivpad Engineers Pvt Ltd, India

Head Office: Plot No. 31, Sector 'C', Industrial Area, Sanwer Road, Indore (M.P.)-452015, INDIA.

16वीं सदी से ही दक्षिण और दिल्ली केबीच एक व्यापारिक केंद्र के रूप में इन्दौर का अस्तित्व है। टेक्सटाइल, ऑटोमोबाइल, फार्मा, आईटी आदि क्षेत्रों की बड़ी कंपनियों के साथ 6 हजार से अधिक लघु-मध्यम उद्योग हैं।

कपास का कटोरा

दुनिया का सबसे बेहतरीन कपास उत्पादक क्षेत्र मालवा-निमाड़ क्षेत्र 'कपास का कटोरा' के नाम से जाना जाता है। देश में कपास उत्पादन में मध्यप्रदेश का तीसरा स्थान है जिसमें 80 प्रतिशत कपास उत्पादन इसी क्षेत्र में होता है।

होलकर राजाओं ने कपड़ा उद्योग की शुरूआत 1786 में ही स्टेट मिल की स्थापना के साथ कर दी थी। निजी क्षेत्र की कपड़ा मिल सन 1909 में यूनाइटेड मालवा मिल के नाम से बनी। बाद में हुकुमचन्द्र, कल्याण, राजकुमार, भंडारी आदि 11 मिलें बनी, इसमें शीलनाथ केंप स्थित हुकमचंद मिल आधुनिक और सबसे बड़ी थी। इसकी स्थापना 21 करोड़ रुपए की पूंजी के साथ 1915 में सर सेठ हुकमचंद ने की थी। इसका परिसर 100 एकड़ में फैला है। 80 के दशक में मिल की हालत बिगड़ी और धीरे-धीरे बंद हो गई। इसके 4 हजार से ज्यादा श्रमिक आज भी पेंशन-भत्ते की राशि के लिए भटक रहे हैं। इसी तरह अन्य कई बड़ी मिलें या तो बंद हो गईं या पलायन कर गयीं। परदेशीपुरा आदि में पूर्वोत्तर के प्रवासी मिल मजदूरों की कॉलोनियां थीं।

सेठ हुकुमचन्द्र इन्दौर की पहचान थे। अपनी लोटा-थाली 2 रुपये में गिरवी रख व्यापार शुरू करने वाले की लगन और परिश्रम का प्रतिफल मिला। चार कपड़ा मीलें, विशाल महल, सोने चांदी के बर्तन, चांदी की घोड़ा-गाड़ी, बग्घी, विश्व में कॉटन किंग विख्यात थे। गांधी जी इन्दौर-प्रवास में हुकुम सेठ का आतिथ्य स्वीकार किया। आजादी के बाद वर्षों तक मालवा-निमाड़ का प्रमुख व्यावसायिक केंद्र दुनिया की लंदन क्लॉथ स्ट्रीट में कॉटन के दाम तय करवाने में अहम भूमिका निभाता रहा। इंदौर सहित आसपास की 10 से ज्यादा मिल और हैंडलूम के केंद्रों की दुनिया में पहचान है।

- डेली कॉलेज की स्थापना 1882 ई में सर हेनरी डेली ने की थी। महाराजा श्रीमंत तुकोजीराव होलकर द्वारा उपलब्ध कराई गई 118 एकड़ भूमि में बना यह विद्यालय विश्व में सहशिक्षा का पहला संस्थान था। ध्येय वाक्य है- 'ज्ञानमेव शक्ति'।
- 1878 में संस्थापित एडवर्ड मेडिकल स्कूल का नाम बदलकर वर्ष 1948 में महात्मागांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज हुआ।
- 1891 में संस्थापित होलकर साइंस कॉलेज की स्थापना महाराजा श्रीमंत शिवाजीराव होलकर बहादुर ने की थी। ध्येय वाक्य है- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'।
- लाला रामनगर स्थित कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1929 में डॉ नॉर्मन हॉवर्ड के नेतृत्व में द इंस्टीट्यूशन ऑफ प्लांट इंडस्ट्री के नाम से हुई थी। 1959 में कृषि महाविद्यालय बना। कम्पोस्ट खाद के लिए विख्यात है।
- वर्ष 1952 में संस्थापित श्री गोविन्दराम सेकसरिया प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान मध्यप्रदेश का प्रमुख अभियांत्रिकी महाविद्यालय है। ध्येय वाक्य है- 'आचारः परमो धर्मः'।
- 1964 में संस्थापित 350 एकड़ में फैला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य है- 'धियो यो नः प्रचोदयात'।
- 1996 में संस्थापित भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) का ध्येय वाक्य है- %सिद्धि मूलं प्रबन्धनम%।
- 2009 में संस्थापित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) का ध्येय वाक्य है- 'ज्ञानम सर्वजन हिताय'।

इन्दौर में कान्यकुब्ज

कहते हैं- मालवा की मिट्टी का सोंधापन एक बार चखने के बाद, शायद ही कोई हो जो इससे दूर जाना चाहता हो। 19 वीं सदी के उत्तरार्ध व 20 वीं सदी के पूर्वाध में रायबरेली, उन्नाव, फतेहपुर, कानपुर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, इटावा आदि कान्यकुब्ज प्रदेश के लोग मिल मजदूर, शिक्षा, व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी संख्या में आये और यहीं के होकर रह गए। तीन से पांच पीढियां तक हो गईं। बहुतायत संख्या में होने के कारण विवाह सम्बन्ध भी यहीं होने लगे। बावजूद इसके उनके आचरण-व्यवहार, रीतिरिवाज, लोकाचार, तीज-त्योहार, संस्कार में कान्यकुब्जियत जीवित है। 1914 ई में संस्थापित कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इन्दौर का शिक्षा के क्षेत्र में वृहत योगदान है। स्मृतिशेष पं सरजूप्रसाद तिवारी वर्ष 1910 में मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के संस्थापक सदस्यों में थे। जिला शिक्षाधिकारी रहे स्व पं सरजू नारायण वाजपेयी 'दादा' ने पढ़े-लिखे नवजवानों को शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार दिया। स्मृतिशेष पं गणेशदत्त त्रिपाठी शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष थे। पाणिनि शोध संस्थान के निदेशक रहे पं मिथिला प्रसाद त्रिपाठी संस्कृत के प्रकांड विद्वान हैं। लघुकथाकार डॉ योगेन्द्रनाथ शुक्ल शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। डॉ नीरज दीक्षित शासकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय (खण्डवा) में एम ओ एम विभागाध्यक्ष व डॉ वंदना अग्निहोत्री शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। डॉ चन्द्रकिरण अग्निहोत्री इसी महाविद्यालय में प्राचार्या थीं। छह विषयों में पीएचडी डॉ मंगल मिश्र, अर्थशास्त्री डॉ पी एन मिश्र, डॉ आशुतोष मिश्र, डॉ रचना दुबे शिक्षा जगत की विभूतियां हैं। एशिया की सबसे बड़ी शिक्षक कॉलोनी सुदामा नगर बसाने का श्रेय स्व पं दयाल गुरु शुक्ल को है।

चिकित्सा जगत में स्मृतिशेष डॉ महावीर तिवारी,

डॉ. चन्द्रप्रकाश तिवारी, बाल चिकित्सक डॉ ओ पी वाजपेयी, अपोलो हॉस्पिटल के डॉ अशोक वाजपेयी, प्रतिष्ठित सर्जन व कान्यकुब्ज नर्सिंग कॉलेज के प्रबंधक/ट्रस्टी डॉ सतीश शुक्ल, शुक्ला हॉस्पिटल के चिकित्सक दम्पति डॉ अखिलेश शुक्ल व डॉ रूमा शुक्ला आदि की खासी प्रतिष्ठा है। 'नर्मदा मैया इन्दौर चलो' अभियान के सूत्रधार वरिष्ठ अधिवक्ता स्मृतिशेष पं लक्ष्मी शंकर शुक्ल आदि ने इन्दौर शहर को एक नई पहचान दी।

पं वीरेंद्रनाथ दीक्षित, पं हरीश दीक्षित, पं लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पं आशुतोष अवस्थी, पं हरिनारायणचारी मिश्र, श्रीमती रुचिवर्धन मिश्र, आकाश त्रिपाठी आदि ने प्रशासकीय क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

व्यवसाय के क्षेत्र में बड़े भैया के शुक्ल परिवार का इन्दौर में विस्तृत साम्राज्य है। समाजसेवा व धर्मार्थ कार्यों में सदैव अग्रणी इस परिवार का राजनीति में भी दखल है। पं कृपा शंकर शुक्ल कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में हैं। युवा संजय शुक्ल इन्दौर 1 क्षेत्र के वर्तमान विधायक हैं।

पत्रकारिता जगत

स्पूतनिक अखबार के संस्थापक सम्पादक स्मृतिशेष पं दिनेश अवस्थी अपनी खोजी पत्रकारिता के कारण राजनेताओं के आंखों की किरकिरी बने रहे। फरुखाबाद (उप्र) जनपद के गांव सुकुरलापुर, रामपुर व गुसरापुर में अवस्थियों की जागीर थी। वहीं के पं रघुबर दयाल अवस्थी के पौत्र दिनेश अवस्थी (आत्मज पं रामस्वरूप अवस्थी) 17-18 वर्ष की उम्र में 1944-45 द्वितीय विश्वयुद्ध के समय मध्यभारत आ गए। 1945 में 'नेशनल हेराल्ड' (सम्पादक एम चेलापतिराव) से पत्रकारिता की शुरुआत कर, मध्यभारत के प्रमुख पत्र 'नवभारत' (सम्पादक-मालिक, राज्यसभा सांसद व स्वतंत्रतासंग्राम सेनानी कन्हैयालाल नागोरी) तथा पं महेंद्र त्रिवेदी व पं रामनारायण तिवारी, कमलाकांत मोदी, नारायणप्रसाद शुक्ल के साथ 'इन्दौर समाचार' की सम्पादकीय टीम में रहे। 1958 में स्वयं के साप्ताहिक पत्र 'स्पूतनिक' का प्रकाशन शुरू किया। लखनऊ, इन्दौर व भोपाल से एक साथ प्रकाशन की अलख श्री श्याम अवस्थी भोपाल, श्री बलराम अवस्थी इन्दौर व डॉ गीता शुक्ला लखनऊ से अनवरत प्रज्ज्वलित किया हुए हैं। ट्रेडयूनियन आंदोलन के प्रतिष्ठ अखबार की तर्ज पर स्पूतनिक की प्रतियां मिलों के मजदूरों के बीच बटतीं। श्री दिनेश अवस्थी की खोजपूर्ण पत्रकारिता के परिणामस्वरूप 1960-70 के दशक में मप्र शासन के तत्कालीन श्रममंत्री गंगाराम तिवारी, खाद्यमंत्री गौतम शर्मा व स्पीकर यज्ञदत्त शर्मा को पदच्युत होना पड़ा था।

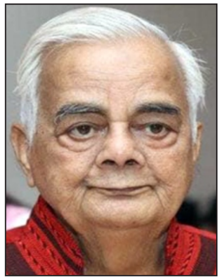

सामाजिक न्याय व ट्रेडयूनियन आंदोलन से जुड़े स्वतंत्रता सेनानी स्मृतिशेष पं रामनारायण तिवारी का मध्यप्रदेश पत्रकारिता में खासा नाम था। रायबरेली उप्र के उत्तरपाड़ा गांव के पं बरखण्डीप्रसाद तिवारी वर्ष 1900 में लगभग 300 ब्राह्मणों के साथ इन्दौर की होलकर आर्मी में नियुक्त हुए। मेजर बरखण्डीप्रसाद की चार सन्तानों श्री सत्यनारायण, श्री रामनारायण, श्री कैलाश नारायण व श्री रामकुमार में स्वस्थ-बलिष्ठ शरीर-शौष्ठव के रामनारायण जी हॉकी-फुटबाल के खिलाड़ी रहे। होलकर राज्य की 5 मील दौड़ में स्वर्ण पदक हासिल किया। शिक्षक के रूप में अपना कैरियर शुरू करने वाले पं रामनारायण इंटक ट्रेड यूनियन से जुड़े रहे। सनातन धर्म के प्रति असीम आस्थावान तिवारीजी शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती व स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के प्रिय शिष्यों में थे। करपात्रीजी की पार्टी समाज परिषद में शामिल हो राजनीति में दखल दिया। 1960 के दशक में पूर्व मुख्यमंत्री द्वारकाप्रसाद मिश्र इन्हें कांग्रेस में ले आये। वर्ष 1991 में शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने। पत्रकारिता क्षेत्र में दैनिक जागरण व नई दुनिया राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में काम किया। वर्ष 1982 में अपना समाचार पत्र साप्ताहिक अहिल्यावाणी का प्रकाशन शुरू किया, जिसे उनके आत्मज पं अनमोल आज भी जारी रखे हुए हैं। 1989 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के हाथों दिल्ली में पं विजयशंकर त्रिपाठी पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित हुए। अर्जुनसिंह सरकार में राज्य पंचायत प्रेस मुद्रणालय के अध्यक्ष व दिग्विजय सिंह सरकार के समय राज्यस्तरीय परशुराम जयंती समारोह के अध्यक्ष मनोनीत हुए। अथर्ववेदीय पृथ्वी सूक्त **'माता भूमिः पुत्रोंऽहम पृथिव्याः'** एक सच्चे धरतीपुत्र रामनारायण तिवारी में सँगठनक्षमता व नेतृत्व के सभी गुण विद्यमान थे। सर्वब्राह्मण परिषद के संरक्षक व ब्राह्मण मैत्री संघ का गठन कर सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज की एक मंच पर लाने के भगीरथ प्रयास के लिए सदा स्मरणीय रहेंगे।

स्मृतिशेष पं विद्याधर शुक्ल ने दोपहर का दैनिक अखबार निकाला, जो वर्तमान में उनके पुत्र चि नवीन शुक्ल देख रहे हैं। अरविन्द तिवारी वर्तमान में इन्दौर प्रेस क्लब के अध्यक्ष हैं। मेरे

आत्मज आलोक वाजपेयी ने संस्कार चैनल के कार्यक्रम निदेशक रहते मुंबई के गणेशोत्सव का लाइव प्रसारण कर ख्याति पाई। कुशल बांसुरीवादक आलोक आध्यात्मिक सन्त श्री श्री रविशंकर व मुरारी बापू से समादृत हुए। निष्पक्ष पत्रकारिता में अभिलाष शुक्ल, अनिल त्रिवेदी, रविन्द्र व्यास, दिलीप मिश्र जाने-पहचाने नाम हैं।

उक्त जानकारियां सन्दर्भ तौर पर स्वतंत्रता सेनानी स्व. नगेन्द्र आजाद की कृति 'इन्दौर दर्शन' एवं छह दशकों में स्वयं ने जितना पढ़ा, जाना-समझा, पर आधारित है।

आज का इन्दौर

भारतवर्ष का बड़ा व्यवसायिक केंद्र होने के नाते इन्दौर की तुलना मुम्बई जैसे मेट्रोपोलियन शहर से होती है। शहर अपने आप में बोलता हुआ व जीवंत नजर आता है। सड़क-फुटपाथों व सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता, सार्वजनिक शौचालयों की सुविधाएं, यातायात, ट्रांसपोर्ट की सुविधा शहर को नम्बर एक बनाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छता अभियान के अंतर्गत चार बार सर्वश्रेष्ठ घोषित किये जाने के बाद पंच लगाने की तैयारी में है। चौड़ी सड़के, विशाल मेगा मॉल, बहुमंजिला इमारतों, आईआईएम व आईआईटी जैसे विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थानों, एटॉमिक सेंटर, परमाणु ऊर्जा केंद्र, देवलालीकर कला वीथिका, केंद्रीय संग्रहालय, चिड़ियाघर, अटल उद्यान, बड़े गणपति, गीता भवन इन्दौर को एक विकसित शहर बनाने के लिए काफी है। इन्फोसिस, टीसीएस जैसी बड़ी कंपनियां भी इसकी प्रतिभा को पहचान कर शहर की तरह मुंह जोह रही हैं। बावजूद इसके शहर के रहवासियों ने यहां की पुरातन परम्पराओं, भाषा-बोली, वेश-भूषा, सहृदयता, सामाजिकता, सनातन संस्कृति को अक्षुण्य रखा है।❑

–9229466225

सैनिक छावनी महू

इन्दौर शहर की चार तहसीलों में महू सैनिक छावनी के रूप में जाना जाता है। सिंधिया व पेशवाओं की सशक्त सैन्य शक्तियों के बीच ब्रिटिश शासकों ने एक कूटनीति के तहत महू **'MHOW'** (मिलिट्री हेड क्वार्टर ऑफ वॉर) बसाया। वर्तमान में भी यह थलसेना का बड़ा प्रशिक्षण केंद्र है। प्राकृतिक नदी पहाड़ों, झरनों व विस्तृत क्षेत्र में फैले घने जंगलों के कारण एक पर्यटन क्षेत्र बना हुआ है। पाताल पानी झरना, महर्षि जमदग्नि आश्रम, भगवान परशुराम की जन्मस्थली तपोभूमि जानापाव, चर्मण्वती के उद्गम स्थल हैं। मध्यप्रदेश का एकमात्र पशु महाविद्यालय है। संविधान निर्माता भीमराव अंबेडकर का जन्मस्थान होने के कारण महू का नाम अम्बेडकर नगर परिवर्तित हो गया है।❑

मध्यप्रदेश के मेले

- श्रीमती नीति – नीरज दीक्षित

- हर बारह वर्ष के अंतराल पर उज्जैन में आयोजित विश्वप्रसिद्ध सिंहस्थ कुंभ, जिसमें महाकाल की पूजा, क्षिप्रा स्नान, नागा साधुओं के अखाड़े आकर्षण का केन्द्र होते हैं।
- जनवरी-फरवरी माह में ग्वालियर की रामलीला मेला, सौ वर्षों से भी अधिक का जिसका इतिहास है।
- ग्राम पोरसा (जिला मुरैना) का नागाजी मेला, बंदरों की बाजार लगती है।
- चंदेरी (जिला अशोकनगर) का जागेश्वरी मेला। यहां कोढ़ पीड़ित रोगनिवारण के लिए आते हैं। चंदेरी सिल्क की साड़ियां दुनिया में मशहूर हैं।
- महामृत्युंजय मेला बसन्तपंचमी व शिवरात्रि पर रीवां में आयोजित होता है।
- मां नर्मदा के अवतरण स्थल अमरकंटक (जिला अनूपशहर) पर शिवरात्रि मेला।
- सिंगाजी मेलाः पश्चिमी निमाड़ (खण्डवा) के पीपल्दा गांव में अगस्त-सितम्बर में लगने वाला मेला महान आत्मा सन्त सिंगाजी को समर्पित है। सिंगाजी का विशाल मंदिर भी है।
- बरमान मेलाः नरसिंह पुर जिले के नर्मदा तट पर बरमान घाट (ब्राह्मण घाट) पर मकर-संक्रांति से 13 दिन तक।
- हीरामन भूमिया मेलाः हीरामन बाबा का नाम ग्वालियर सम्भाग में आदर से पूजा जाता है। अगस्त-सितम्बर में लगने वाले मेले में बांझपन से मुक्ति हेतु महिलाएं मनौती मानती हैं।
- तेजाजी मेलाः आयावड़ (गुना जनपद) पिछले सात-आठ दशकों से लोकमान्य है। तेजाजी एक सन्त थे, उनके पास सांप का जहर उतारने की शक्ति थी। इसी आधार पर उनकी पूजा होती है।
- देवास का चामुंडा देवी मेला, उज्जैन में नागपंचमी, जबलपुर में भेड़ाघाट, मंदसौर में पशुपतिनाथ, खरगौन में नवग्रह, खण्डवा में धूनी वाले बाबा का मेला आदि शासकीय सहयोग से मनाए जाने वाले मेले हैं जिनमें लोकसंस्कृति के विविध रंग देखने को मिलते हैं। ये मेले खेरेश्वर, बिठूर, मकनपुर, कन्नौज आदि के मेलों की याद ताजा करते हैं, जिनके बारे में पिताजी चर्चा करते रहते हैं।❑

देश मालवा गहन गंभीर, डग-डग रोटी पग-पग नीर

– तृप्ति मिश्रा, महू (इन्दौर)

सुख-समृद्धि से भरपूर, उत्सवधर्मिता एवं लोकसंस्कृति के रंगों से सराबोर मालवा पर्व-त्योहारों, लोक-उत्सवों, मेला-जुलूसों एवं हर्ष-उल्लास की भूमि है। नम उपोष्णकटिबंधीय जलवायु होने के कारण बारहों महीने मौसम खुशनुमा रहता है। सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग भी यहाँ के लोकजीवन व पर्यावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। जीवन की यही विशिष्टताएं मालवा के इतिहास, संस्कृति, साहित्य, कला आदि में प्रतिबिम्बित हुई हैं। काली मिट्टी कपास के रूप में सोना उगलती है। इन्दौर, उज्जैन, देवास, नीमच, मंदसौर, धार व शाजापुर जिलों को समेटे मालवा का समाज परम्परावादी है।

नर्मदा जयंती: अभी हाल में ही 19 फरवरी (माघ, शुक्ल सप्तमी) को मालवा की जीवनदायिनी मां नर्मदा की जयंती मनाई गई। मान्यता है कि अमरकंटक पर्वत को चीर कर गुजरात में भड़ोच के सागर में समर्पण कर देने वाली नर्मदा मैया राह में पड़ने वाले प्राणियों, वन-बनस्पतियों को जीवन देने के लिए माघ, शुक्ल सप्तमी को ही अवतरित हुईं थीं। इस दिन घाटों में इकट्ठा होकर पूजा-अर्चना, आरती, दीप-दान, चुनरी चढ़ाना, परिक्रमा कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं और जाने-अनजाने हुए पापों का प्रायश्चित करते हैं। मैया सबके पाप धो देती हैं। महेश्वर, बड़वाह, जबलपुर, राजघाट, होशंगाबाद, बरघाट आदि जगहों पर बड़े मेले लगते हैं।

रंगपंचमी और गेर: होलिका दहन के पांचवें दिन रँगपंचमी में अबीर-गुलाल और टेसू के रंगों की होली साल भर के सारे कलुष धोकर जीवन में रंग भर्ती है। 'गेर' (होली का पारंपरिक जुलूस) इन्दौर की शान में चार चांद लगाता है। गेर की परंपरा रियासतकाल में शुरू हुई थी। होलकर राजवंश आम नागरिकों के साथ होली खेलने के लिए टेसू के रंगों से भरी बैलगाड़ियों में फागयात्रा निकालते थे। परम्परा आज भी जीवित है। ठेठ रियावती अंदाज में धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर मानवता की अमूर्त धरोहर को यूनेस्को की मान्यता भी मिल चुकी है।

गणगौर : मध्यभारत के पश्चिमी क्षेत्र व राजस्थान में आस्था प्रेम और पारिवारिक सौहार्द का सबसे बड़ा उत्सव है। गण (शिव) तथा गौर(पार्वती) के इस पर्व में कुँवारी लड़कियां मनपसंद वर पाने की कामना करती हैं। होलिका दहन के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक,18 दिनों तक चलने वाला त्योहार है -गणगौर। लोकमान्यता है कि माता गवरजा होली के दूसरे दिन अपने पीहर आती हैं तथा आठ दिनों के बाद ईसर (भगवान शिव)उन्हें वापस लेने के लिए आते हैं ,चैत्र शुक्ल तृतीया को उनकी विदाई होती है। इस अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीतों में मां गौर से अचल सुहाग, अच्छा वर-ससुराल की कामना है तो जीजा-बहनोई की हसीं-ठिठोली भी- **'गौर ये, गणगौर, माता खोल किवाड़ी, बाहर उंसी थारी पूजन वाली...पूजो ऐ पुजावो, सईयो काईं काँह मांगा, मांगा म्हे अन-धन लागह पूजो ऐ पुजावो, तइयो काईं काँह मांगा...'** और **'ऊंट चढ़यो बहनोई देना चुनर वाली बेना साये में सिरदान**...आदि।

दशा माता: प्रतिकूल ग्रह-दशा से परिवार की रक्षा के लिए चैत्र कृष्ण दशमी को पीपल में कच्चे धागे लपेटकर दशा माता की पूजा होती है। महिलाएं उपवास करती हैं। नल-दमयंती की कथा सुनी जाती है।

संझा माई: भाद्रपद पूर्णिमा से अश्विन अमावस्या 15 दिन मनाया जाने वाला संझा पर्व लोककला, लोकगीतों व लोकविश्वास का अनूठा उत्सव है। घर की लड़कियां दीवारों पर तरह-तरह की संझा आकृतियां बनाती हैं। सांझ के समय नियमित आरती, गीत पूरे वर्ष ऊर्जा से भर देते हैं। **'छोटी सी गाड़ी लुढ़कती जाए, लुढ़कती जाए, जी में बैठी संजा बाई, संजा बाई ओ संजा बाई...'** और **'घाघरो धमकाती जाय, चुड़ला बजाती जाय, बाई जी की नथनी झोला खाये...।'**

अनन्त चतुर्दशी: गणेश चतुर्थी से अनन्त चतुर्दशी तक गणेशोत्सव। गणेश-विसर्जन के सामूहिक जुलूस में सामाजिक, पारिवारिक व राष्ट्रीय तत्कालीन मुद्दों से सम्बंधित आकर्षक झांकियाँ देखते बनती हैं। मालवा मिल, राजकुमार मिल फ्लाईओवर, जेल रोड, एमजी रोड, कृष्णपुरा छत्री, सब्जीमंडी, नरसिंह बाजार, खजूरी बाजार, राजवाड़ा से होकर चिमनबाग तक लंबे जुलूस के लिए किसी समय मिल मजदूर एक दिन का पूरा वेतन देते थे। मिल मालिकों का भी पूरा सहयोग मिलता था।

इसके साथ नवरात्रि में दुर्गा पूजा, शीतला सप्तमी, डोल ग्यारस आदि लोकआस्था के पर्व हैं। दीपावली से दूसरे दिन गौतमपुरा में 'हिंगोट', झबुआ के आदिवासियों का 'भगोरिया' तथा तीन दिन चलने वाला 'रोट-पूजन' मालवा भूमि की सांस्कृतिक विरासत है।❑

–9827611723

राष्ट्र के शिक्षा-प्रसार के लिए संकल्पित : कान्यकुब्जों का गौरव

कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इन्दौर

-गायत्री प्रसाद शुक्ल, इन्दौर

कान्यकुब्ज ब्राह्मण शरीर-सौष्ठव, मल्लकला, ईमानदारी और विश्वनीयता के कारण देश के विभिन्न अंचलों में विस्थापित होते गए। मालवा प्रदेश में इनका आगमन होलकरवंश के शासनकाल से शुरू हो गया था। पं गयादीन दुबे होलकर राज्य में हुजूर पायेगा के नायब पद पर थे। उनके पुत्र भवानीसिंह दुबे होलकर सेना के जनरल व प्रधान सेनापति रहे। भवानीसिंह के पुत्र पं दुर्गाप्रसाद (पौत्र - पं गयाप्रसाद दुबे) ने भी प्रधान सेनापति का दायित्व सम्भाला। पं दुर्गाप्रसाद के भाई माधवप्रसाद दुबे होलकर आर्मी में कर्नल तथा मेजर रामप्रसाद दुबे राज्य के प्रधानमंत्री रहे। दुर्गाप्रसाद के आत्मज पं सुरेन्द्रनाथ दुबे कलक्टर व विकास आयुक्त तथा पौत्र शरतचन्द्र दुबे (पुत्र - पं सुरेन्द्रनाथ) जिलाधीश व इन्दौर नगरनिगम के आयुक्त रहे।

इसी प्रकारष शिवाजीराव होलकर के शासनकाल में मेजर ईश्वरीप्रसाद तिवारी ने टांटिया भील को समाप्त कर ब्रिटिश शासन द्वारा 'ओ बी ई' की उपाधि प्राप्त की थी। इनकी वीरता के लिए इन्हें खण्डवा में 'नन्दगाँव' जागीर में मिला था। पं ईश्वरीप्रसाद के पौत्र महेश प्रसाद तिवारी भी इन्दौर नगरनिगम में आयुक्त रहे। 1914 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध तथा 1942 ई. के द्वितीय विश्वयुद्ध में होलकर राज्य की सेना में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों ने महत्यपूर्ण योगदान किया।

फ़ौज में कर्नल पं लक्ष्मीनारायण (पुत्र पं ठाकुरप्रसाद तिवारी) द्वारा राज्य की सीमा सेंधवा-बड़वानी में लुटेरे डाकुओं का सफाया करते हुए उनके सरदार की गर्दन काटकर लाने पर पारितोषिकस्वरूप 'ड्योढ़ी' अर्थात कचहरी का दर्जा प्रदान किया गया जो आज भी जिन्सी क्षेत्र में 'ड्योढ़ी' के रूप में विख्यात है। इन्दौर में दो जगह ही कचहरी लगती थी। एक, जहां महाराज होलकर न्याय करते थे और दूसरी जिन्सी स्थित 'ड्योढ़ी' पर।

सेना, प्रशासन व शिक्षा क्षेत्र में लगे कान्यकुब्जों को अपने बच्चों की शिक्षा की चिंता थी। चैत्र शुक्ल नवमी, 1914 ई. सर नोबत दुबे के बगीचे में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का पहला सम्मेलन हुआ और कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। 'सर-ए-नोबत' आशय, जिसके दरवाजे पर चौबीस घण्टे नोबत यानी नगाड़े बजा करते थे। सभा के अध्यक्ष के रूप में तत्कालीन जिला न्यायाधीश पं पुरुषोत्तम जी अवस्थी व महामंत्री कर्नल माधवप्रसाद दुबे को चुना गया।

वर्ष 1918 में सभापति रहते कर्नल माधवप्रसाद दुबे के सत्प्रयासों से सभा का कोष बना और उसके ब्याज से अपेक्षित बच्चों को छात्रवृत्ति देने का जो क्रम शुरू हुआ वह शताब्दी पश्चात भी अनवरत जारी है। पं चन्द्रशेखर द्विवेदी के नेतृत्व में वर्ष 1955 में राजमोहल्ला में भवन के लिए भूमि क्रय की गई। भवन की 90 फीट लम्बी इमारत के निर्माण में डॉ शिवाधार शुक्ल, पं चन्द्रशेखर द्विवेदी, पं महावीरप्रसाद शुक्ल की सेवाएं अभिनन्दनीय हैं। वर्ष 1958 में कृष्णपुरा निवासी पं रामस्वरूप पाण्डेय उर्फ 'घण्टा पांडे' ने तीन मंजिला भवन (राम-मंदिर) सभा के पक्ष में मृत्यु-पत्र लिखकर समर्पित किया। वर्ष 1959 में श्रीमती पार्वती बाई (पत्नी स्व श्री रामप्रसाद सिंह) ने ग्वालटोली स्थित मकान सभा को दान किया।

वर्ष 1986 में शहर के स्वनामधन्य पं विष्णुप्रसाद शुक्ल 'बड़े भैया' को सभापति सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया, जिनकी सेवाएं 35 वर्षों से अनवरत सभा को सुलभ हैं। बड़े भैया के नेतृत्व में कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा निरन्तर समाजहित कार्यों के प्रति संकल्पित है। डॉ सतीश शुक्ल के मार्गदर्शन में कान्यकुब्ज नर्सिंग कॉलेज, के के कॉलेज ऑफ साइंस एंड प्रोफेशनल स्टडीज, कान्यकुब्ज विद्यालय के संचालन व व्यवसायिक स्थलों से होने वाली नियमित आय से समाज के

सभापति

न्यायमूर्ति पुरुषोत्तम जी अवस्थी (1914-1918)
कर्नल माधो प्रसाद दुबे (1918-1923)
वैद्यराज पं ख्यालीराम द्विवेदी (1923-25, 1928-48)
पं सुरेन्द्रनाथ दुबे (1925-1926)
पं शिवसेवक दुबे (1927-1928)
रायसाहब पं भगवानजी तिवारी (1948-1951)
मुंतजिम बहादुर दीनदयाल मिश्र (1951-1957)
डॉ सिद्धनाथ वाजपेयी (1957-1958)
पं शिवाधार शुक्ल (1958-1959)
पं महावीर प्रसाद शुक्ल (1959-1962)
पं चन्द्रशेखर द्विवेदी (1962-1965)
पं कैलाशचन्द्र शुक्ल (1965-1968)
पं शिवनाथ मिश्र (1968-1971)
डॉ महाबलीप्रसाद तिवारी (1971-1974)
डॉ सी पी तिवारी (1976-78, 1982-86)
पं शिवदुलारे दुबे (1978-1982)
पं विष्णुप्रसाद शुक्ल (1986 से निरन्तर)

अपेक्षित वर्ग की सहायता, भारतीय संस्कृति के सम्वर्धन आदि की व्यवस्था में इन्दौर की कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा देश-प्रदेश के अन्य कान्यकुब्ज या ब्राह्मण संगठनों के लिए एक उदाहरण है।

अहमदाबाद में आयोजित अखिल भारतीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण सम्मेलन में सभापति पं विष्णुप्रसाद शुक्ल की घोषणा कि 'धनाभाव के कारण कोई भी कान्यकुब्ज कन्या अविवाहित नहीं होनी चाहिए', के बाद से प्रतिवर्ष जरूरतमंद अभिभावकों की कन्याओं के सामूहिक विवाह इन्दौर की कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा सभी कर्मकांडों व उल्लासित वातावरण में दान-दहेज के साथ निःशुल्क आयोजित करती है।

तीज-त्योहारों, राष्ट्रीय पर्वों, महापुरुषों की जयंती तथा अन्य अवसरों पर युवा, महिलाओं, बच्चों सभी का सम्मिलन आपसी सौहार्द्र बढ़ाता है। सभा के 4 हजार से अधिक आजीवन सदस्य हैं। वर्तमान में पं अनूप वाजपेयी, पं अभिजीत त्रिपाठी, पं दीपक शुक्ल, पं राजेश दुबे, पं अजय तिवारी, पं रामचन्द्र दुबे, पं ब्रजेश शुक्ल, पं प्रकाश मिश्र की उत्साही युवा टीम अध्यक्ष विष्णु भैया, महामंत्री पं. सुरेशचन्द द्विवेदी व डॉ. सतीश शुक्ल के नेतृत्व में सभा के लक्ष्यों की पूर्ति में प्राणपण से जुटी है।❑

प्रधानमंत्री

कर्नल माधो प्रसाद दुबे (1914-1918)
पं महेश प्रसाद तिवारी (1918-1923)
पं कालिका प्रसाद शुक्ल (1923-1925)
पं सरयूनारायण वाजपेयी (1927-1928)
पं सुरेन्द्रनाथ दुबे (1926-1928)
मेजर रामनारायण शुक्ल (1928-1948)
पं मथुरा प्रसाद अवस्थी
पं महावीरप्रसाद शुक्ल (1948-1961)
पं बजरंग प्रसाद मिश्र (1961-63,68/-72,78-81)
पं रमेश चन्द्र पाण्डेय (1963-1964)
पं सहदेव प्रसाद वाजपेयी (1964-65, 74-78)
पं रामस्वरूप शुक्ल (1966-1968)
पं उमाशंकर अग्निहोत्री (1983-1987)
पं अवधेश जी शुक्ल (1987-1989)
पं स्वयं प्रकाश शुक्ल (1989-1991)
पं सुरेशचन्द्र द्विवेदी (1991-98, 2010 से निरन्तर)
पं जे के तिवारी (1998-1999)
पं ओंकार प्रसाद पाण्डेय (1999-2010)

आद्य गौड़ ब्राह्मण सेवा न्यास, इन्दौर

इन्दौर शहर का आद्य गौड़ ब्राह्मण सेवा न्यास पिछले 50 वर्षों से विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्ग की सेवा, भारतीय संस्कृति के उन्नयन, ब्राह्मण संगठन आदि की दिशा में सतत प्रयासरत है। 1970 के दशक में इसका संगठनात्मक स्वरूप उभर कर आया। वर्ष 2004 से अनवरत सर्वब्राह्मण युवा परिचय सम्मेलन, सामूहिक विवाह आदि के आयोजनों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकोष्ठ समाजसेवा के कार्यों में प्राणपण से जुटे हैं। न्यास का संचालन समाज की धर्मशाला स्थित कार्यालय से होता है। अध्यक्ष पं दिनेश शर्मा (9424819001) व महासचिव पं सुरेश शर्मा जी (9926703355) के नेतृत्व में समर्पित युवा-महिलाओं की निष्ठावान टीम है।

न्यास द्वारा संचालित '**आरोग्य प्रकोष्ठ**' घर पर मरीजों के इलाज हेतु जीवन रक्षक मेडिकल उपकरण बैंक का सञ्चालन, जिसमें मात्र 1 रूपये रोज पर पलंग,गादी ,व्हीलचेयर ,आक्सीजन सिलेंडर, वाकर , नेबुलाइजर, कमोड चेअर ,पल्स ऑक्सीमीटर और भी बहुत सारे मेडिकल उपकरण, जिनकी वजह से अस्पताल से मरीजों की छुट्टी नहीं होती और काफी पैसा व्यय होता है, मात्र 1 रु रोज में इंदौर नगर निवासियों हेतु न्यास की शर्तो पर उपलब्ध करवाते है। न्यास का सेवा वाहन '**वैकुण्ठ-रथ**' के रूप में पूरे इंदौर नगर के निवासियों हेतु निःशुल्क सेवा प्रदान करता है। मृत व्यक्ति के परिजनों से कोई सेवा शुल्क नहीं लिया जाता। घर पर अनुपयोगी दवाईयों का संग्रह करके शासकीय अस्पतालों के निर्धन मरीजों के बीच उनका वितरण किया जाता है। '**आरोग्य रक्तदान प्रकल्प**' समाज के युवाओं को रक्तदान समूह के माध्यम से जोड़कर उन्हें रक्तदान के लिए प्रेरित करना तथा रक्त की आवश्यकता पड़ने पर रक्तदान के रूप में यथा संभव सहयोग प्रदान करने का सदैव प्रयास रहता है। सेवा और सहयोग हेतु संपर्क अखिलेशजी शर्मा 94066 66236।

समाज की महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए '**मातृ-शक्ति प्रकोष्ठ**' का गठन किया गया। मातृ-शक्ति प्रकोष्ठ ने 2019 में केवल महिलाओं द्वारा अखिल भारतीय परिचय सम्मलेन का आयोजन कर विश्व कीर्तिमान बनाया। सामूहिक रूप से चतुर्थी उद्यापन, गणगौर मेला एवं अन्य सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं।

पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण-सम्वर्धन में '**मीरा-मोहन प्रकोष्ठ**' दम्पतियों की सकारात्मक भागीदारी, समाज के प्रति वैयक्तिक दायित्व बोध, रिश्ते-नातों की गरिमा, वृद्धों का आदर-सम्मान इस प्रकोष्ठ के मूल लक्ष्य है। **'ज्ञान-गंगा प्रकोष्ठ'** अपेक्षित छात्रों को शुल्क व शिक्षण सामग्री निःशुल्क उपलब्ध करवाता है। तेरा तुझ को अर्पण की सद्भावना के साथ **'अन्नकूट प्रकोष्ठ'** दीपावली के बाद प्रदोष या पूर्णिमा के दिन छप्पन भोग का आयोजन करता है। भगवान का अभिषेक, महा आरती, भोग के पश्चात कन्या-पूजन, सन्त-पूजन, बटुक-पूजन और अतिथियों के मान सम्मान में हजारों की संख्या में लोग जुटते हैं। एक अन्य महत्वाकांक्षी प्रकोष्ठ '**अमृत कलश**' कोविड 19 की वजह से विलम्बित है। आद्यगौड़ ब्राह्मणों की संगठित, अनुशासित व समर्पित टीम द्वारा आयोजित समस्त आयोजन व्यवस्थित व योजनाबद्ध तरीके से सम्पन्न होते हैं।❑

लोकस्वीकृत और वैदुष्य के शिखर-पुरुष
कीर्तिशेष पं ख्यालीराम द्विवेदी

सीतापुर उप्र गांव डलमऊ के पं देवीसहाय द्विवेदी के पौत्र आयुर्वेदाचार्य, धन्वंतरि-पुत्र पं ख्यालीराम द्विवेदी (आत्मज पं गणेशप्रसाद) का जन्म 22 अगस्त, 1885 (श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबंधन) को मालवभूमि के इन्दौर शहर में हुआ था। होलकर राज्य के राजवैद्य पं ख्यालीराम की मध्यभारत ही नहीं, देश-प्रदेश तक ख्याति थी। भरा-सुगठित किन्तु सुकोमल शरीर, दीप्तिमान चांद सा ढला मुख, भौरों सी लुभावनी आंखें, विशुद्ध खादी की पगड़ी-अंगरखा-दुपट्टा-धोती, आत्मसम्मान की प्रतीक चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछे देख हर किसी में आदर के भाव जागृत करता। शरीर-विज्ञान, नाड़ी-विज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा के मर्मज्ञ इस श्लाघा पुरूष ने असाध्य से असाध्य रोगों के उपचार से आयुर्वेद को जिन ऊंचाइयों तक पहुँचाया, वह भारतीय चिकित्सा पद्धति की गौरव-गाथा है। मध्यभारत राज्यप्रमुख श्रीमंत महाराजा तुकोजीराव होलकर, महाराजा यशवंतराव होलकर, भगवंतराव मंडलोई, सेठ हुकुमचंद, सेठ राजकुमार कासलीवाल, पूर्व मुख्यमंत्री कैलाशनाथ काटजू, तख्तमल जैन आदि के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी उनकी वैद्यिकी के कायल थे। वर्ष 1928 की प्लेग महामारी में देश के विभिन्न हिस्सों में घूम-घूमकर रोगियों की सेवा का गौरव प्राप्त किया।

आयुर्वेद-मार्तण्ड, चिकित्सा-चूड़ामणि, भिषग-केसरी, आयुर्वेद-ब्रहस्पति आदि उपाधियों से विभूषित पं ख्यालीराम के पास आयुर्वेद के श्रेष्ठ दुर्लभ ग्रन्थों का अपार संग्रह था। इन्दौर शहर में वणौषधि-वाटिका (बेटोनिकल गार्डेन) का विशाल बाग लगाया। पिताजी की स्मृति में स्थापित गणेश-रूग्णशाला में रोगियों के परिचर्या में वैद्यजी की गौशाला की गायों का शुद्ध दूध-घी प्रयोग किया जाता। इन्दौर के बियाबानी में स्थापित पं ख्यालीराम द्विवेदी आयुर्वेदिक फार्मेसी में 460 से अधिक आयुर्वेदिक ओषधियों का निर्माण किया जाता। वर्ष 1933 से प्रकाशित 'आरोग्य-विज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का उस समय वार्षिक मूल्य था डाक-व्यय सहित मात्र तीन रुपये।

समधौर का मूंछ-मिलन

बाराबंकी (उप्र) के पं मनईप्रसाद दुबे होलकर राज्य में बजरंग पलटन के सूबेदार थे। उनकी आत्मजा श्रीमती सरयू बाई से विवाहित पं ख्यालीराम जी की कन्या पद्मिनी दुबे के साथ मध्यभारत के पहले मुख्यमंत्री ब्राह्मणशिरोमणि पं रविशंकर शुक्ल अपने बड़े पुत्र पं श्यामाचरण से ब्याहने के लिए इन्दौर बारात लेकर आये थे। उस मौके पर तत्कालीन समाचार पत्रों में एक कार्टून छपा था, जिसमें समधियों के ह्रदय-मिलन के साथ मूंछ-मिलन का चित्र प्रकाशित हुआ था। वैद्यराज के जमाता पं श्यामाचरण शुक्ल मध्यप्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे।❑

अखिलभारतीय वैद्य मण्डल के मार्गदर्शक रहे वैद्यराज पं ख्यालीराम ने अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक सभाओं की स्थापना की। हिन्दू महासभा, सनातन धर्मसभा, वर्णाश्रम धर्म दक्षिण सभा के साथ मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना में पं सरजू प्रसाद तिवारी साथ रहे। 1918 में अभा राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्मेलन में महात्मा गांधी व महामना मदनमोहन मालवीय की विशिष्ट उपस्थिति में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने का बिगुल फूंक गया। वर्ष 1920 में अखिलभारतीय आयुर्वेद सम्मेलन व वर्ष 1921 में आयुर्वेद ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना की। 1935 में अभा खादी सम्मेलन, जिसके मुख्यअतिथि गांधी जी थे, की अध्यक्षता की।

संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान आयुर्वेद-रत्न पं ख्यालीराम द्विवेदी का शिष्यत्व प्राप्त कर अनेकों युवा आयुर्वेद-चिकित्सा में प्रतिष्ठित हुए। कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इन्दौर का सभापति दायित्व निभाया। भारतीय संस्कृति के सुभाषित दृष्टांत पुरुष पं ख्यालीराम पण्डितव, वैदुष्य और प्रतिभा के साथ ही परिश्रमी स्वभाव एवं अभ्यास के स्वामी थे। काल का आभूषण उनके श्रीयंत्र-व्यक्तित्व को कभी मिटा नहीं सकेगा।❑

महू के स्मृतिशेष पं हरीश त्रिवेदी

भारतीय पुलिस सेवा के जुझारू अधिकारी पं हरीश त्रिवेदी बेशक अब नहीं हैं, अपने जानने वालों की स्मृति-पटल में वो आज भी राज करते हैं। जातीयता के अनुराग से अनुरंजित हरीश जी कार्यव्यस्तता होने के बावजूद समाजसेवा के लिए समय निकाल लेते थे। दिल्ली, भोपाल, इन्दौर, अहमदाबाद के कान्यकुब्ज सम्मेलनों में उनकी उपस्थिति रहती।

भारत-रत्न मदर टेरेसा की भोपाल में अगवानी करते हरीश त्रिवेदी। बाएं से दूसरी श्रीमती आशा त्रिवेदी व साथ में छोटे पुत्र गौरव।

भारद्वाज गोत्रीय पं त्रियुगीनारायण त्रिवेदी वर्ष 1914 के लगभग इन्दौर के पास सैनिक छावनी महू में आ बसे। विश्वयुद्ध के समय आर्मी कांट्रेक्टर के रूप में कार्य आरम्भ किया। उप्र से रोजगार की तलाश में आने वाले नवागन्तुक युवाओं को उनका स्नेह-संरक्षण मिलता। पं त्रियुगीनारायण के पौत्र हरीश जी (आत्मज पं रामनारायण - कमला त्रिवेदी) का जन्म 21 फरवरी, 1940 को महू में ही हुआ। अपनी अपेक्षित शिक्षा पूरी कर 1965 में डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस के रूप में कैरियर की शुरुआत करने वाले हरीश जी 1972 में भारतीय पुलिस सेवा में आ गए। वर्ष 1984 में भारत-रत्न मदर टेरेसा ने उनकी निष्ठा से प्रभावित हो स्व-हस्ताक्षरित प्रशस्ति पत्र दिया। रेलवे पुलिस के महानिदेशक रहते हुए 'कुली-मित्र योजना' के अद्भुत और व्यवहारिक प्रयोग की सफलता पर रेलवे मंत्रालय से प्रशंसा मिली। राष्ट्रपति के पुलिस सेवा पदक का गौरव प्राप्त किया। गायन और खेल में विशेष रुचि के चलते वर्ष 2000 में मप्र व छतीसगढ़ राज्य सरकार में खेल व युवा कल्याण विभाग के निदेशक नियुक्त किये गए। काफी समय तक पूरे मध्यप्रदेश टेनिस में नम्बर वन रहे। उनकी आवाज में टेप गीतों के तीन ऑडियो कैसेट खासे लोकप्रिय रहे।

इलाहाबाद के पूर्व जिला व सत्र न्यायाधीश पं ईश नारायण मिश्र की आत्मजा आशा से विवाहित हरीश जी की तीन सन्तानों में डॉ सोनिया सर गंगाराम हॉस्पिटल, नई दिल्ली में एचओडी हैं। पति पद्मश्री पं सौमित्र रावत लीवर ट्रांसप्लांटेशन के ख्यातिप्राप्त सर्जन हैं। ग्वालियर के प्रतिष्ठ वैद्य पं बेनीमाधव पाण्डेय शास्त्री की आत्मजा शैलजा से विवाहित पुत्र विक्रम इन्दौर में अधिवक्ता हैं। दूसरे पुत्र चि गौरव यथायोग्य जीवनसाथी की खोज में हैं।

स्मृतिशेष हरीश त्रिवेदी की जगन्नाथ मंदिर व साईं मंदिर की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका रही। शिक्षा संस्थानों की स्थापना व संचालन किया। त्रिवेदी परिवार के शिक्षा संस्थान के उद्घाटन में लोकचर्चित पूर्व भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी व पूर्व राज्यपाल किरण बेदी महू पधारी थीं। त्रिवेदी परिवार द्वारा महू व इन्दौर के औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर में संस्थापित शिक्षा संस्थानों में लगभग पांच हजार विद्यार्थी व 250 का शिक्षक स्टाफ है।

स्मृतिशेष हरीश त्रिवेदी के उदार व निश्छल व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था, वो सहज ही उनके सम्पर्क में आने वाले कि अपना बना लेता था। ब्राह्मणत्व के गुणों और संस्कारों को जीवन की सफलता का श्रेय देने वाले हरीश जी 'वज्रादपि कठोराणि, मृदुनि कुसुमादपि' वज्र सा कठोर और कुसुम से भी कोमल स्वभाव के कारण सबके सगे थे। ❑

वैद्यराज चन्द्रशेखर द्विवेदी

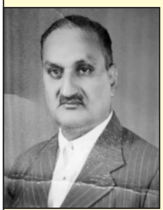

कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के कोषाध्यक्ष व अध्यक्ष रहे वैद्यराज चन्द्रशेखर द्विवेदी का खजूरी बाग स्थित 'शक्ति औषधालय' रुग्णों की परिचर्या का पसंदीदा केंद्र था। समाजहित चिंतक वैद्यराज द्विवेदी दिनभर रोगियों के आधि-व्याधियों का निवारण करते और शाम को, संगठन को कैसे सुदृढ़ किया जाय, इसकी विचार-विनमय होता। सायंकालीन बैठक में पं महावीरप्रसाद शुक्ल, कैप्टन रामनारायण शुक्ल, होलकर सेना के अधिकारी आदि उपस्थित होते। कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के वर्तमान स्वरूप में इन गोष्ठी-बैठकों की बड़ी अहमियत रही।

1962 के दौरान कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के अध्यक्ष पद पर रहते हुए द्विवेदी जी ने कई रचनात्मक काम किये। भवन निर्माण समिति के संयोजक रहते हुए 5/6 नार्थ राजमोहल्ला की भूमि उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है। कान्यकुब्ज विद्यालय के नाम पर 4/6 नार्थ राजमोहल्ला की भूमि मध्यप्रदेश के पहले मुख्यमंत्री पं रविशंकर शुक्ल के इन्दौर प्रवास के दौरान समाज के नाम करवाने में पं चन्द्रशेखर जी का परिश्रम काम आया।

समाज के निष्ठावान महानुभावों के ही प्रारम्भिक प्रयासों के परिणामवरूप आज समाज के नाम पर के के विज्ञान एवं व्यवसायिक महाविद्यालय, के के नर्सिंग कॉलेज, कान्यकुब्ज हायर सेकेंडरी स्कूल, ऑक्सफ़ोर्ड महाविद्यालय जैसे भव्य भवन कान्यकुब्ज समाज के गौरव के साक्षी हैं। वैद्यराज द्विवेदी जी के आत्मज प्रतिष्ठ अधिवक्ता रहे पं सुरेशचन्द्र द्विवेदी पिता के मार्ग पर चलते हुए वर्ष 1991 से 1998 एवं वर्ष 2010 से वर्तमान में कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के महामंत्री का महती दायित्व सम्भाले हुए हैं। ❑

शून्य से शिखर तक
इन्दौर का शुक्ल परिवार

- अनूप वाजपेयी, इन्दौर

इन्दौर के प्रख्यात मरीमाता चौराहे से बाणगंगा ब्रिज की ओर जाने वाली चार लेन सड़क पर स्थित 'दुर्गा-भवन' के नाम का भव्य भवन और बाहर खड़ी विभिन्न मॉडलों के कारों की लंबी कतार पं विष्णुप्रसाद शुक्ल परिवार का निवास व उनके पुरुषार्थ का प्रतीक है। वर्ष 1928 के लगभग गांव नानाटिकुर (अजगैन), उन्नाव के पं दुर्गाप्रसाद शुक्ल (आत्मज पं बल्लूप्रसाद शुक्ल) को मालवा के मिट्टी की गंध इन्दौर शहर खींच लाई। उस समय उप्र के बैसवारा क्षेत्र में फैली प्लेग की महामारी व आजीविका ने लोगों को पलायन के लिए बाध्य किया। बहुतायत ने मालवा भूमि की तरफ भी रुख किया। पं दुर्गाप्रसाद ने मिल मजदूर के रूप में जीवन का श्रीगणेश किया। कानपुर, चौक सर्राफा के वाजपेयी परिवार की आत्मजा श्रीमती यशोदा देवी से विवाहित शुक्ल दम्पति को आठ सन्तानों (पांच पुत्रों विष्णुप्रसाद, कृष्णकान्त, कैलाशचन्द्र, सुरेन्द्रकुमार एवं दिनेशचन्द्र तथा तीन पुत्रियों रामदुलारी, सुशीला व सन्तोष) के लालन पालन का सुयोग प्राप्त हुआ।

महू (जामली) के स्व पं चन्द्रशेखर तिवारी की आत्मजा श्रीमती कृष्णा देवी से विवाहित बड़े भैया वर्ष 1978 से दो कार्यकाल सांवेर जनपद के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। तीसरी बार महिला सीट आरक्षित होने के कारण सुयोग से पत्नी श्रीमती कृष्णादेवी इस पद पर निर्वाचित हुईं। दैव योग से बड़े भैया को पत्नी वियोग का दंश झेलना पड़ा जब भरे-पूरे शुक्ल परिवार की मुखिया, अपनी पीढ़ी की 'भौजी' और अगली पीढ़ी की 'बाई जी' बैकुंठधाम सिधार गयीं। विष्णु भैया के पग से पग मिलाने वाली श्रीमती कृष्णादेवी शुक्ला कान्यकुब्ज व ब्राह्मण संस्कारों की पोषक, गार्हस्थिक मर्यादाओं का सम्यक पालन करने वाली एक निस्पृह समाजसेविका थीं। कान्यकुब्ज महिला मंडल का वर्षों नेतृत्व करते हुए नारी शक्ति का एक बड़ा संगठन खड़ा किया। तीज-त्योहार, संस्कार, हल्दी-कुंकु आदि में महिलाओं की संगठनात्मक भागीदारी सुनिश्चित की। उनका जाना बड़े भैया के व्यक्ति गत जीवन में, सगे-सम्बन्धियों के परिवार में, महिला मंडल में तथा समाज मे वह शून्यता दे गया जिसकी भरपाई सम्भव नहीं।

बड़े भैया के दो पुत्र चि राजेन्द्र व चि संजय तथा दो पुत्रियां श्रीमती आशा वाजपेयी (पत्नी डॉ भरत वाजपेयी) व श्रीमती सुधा अवस्थी (पत्नी स्मृतिशेष पं शिवमंगल अवस्थी) परिवार सहित इन्दौर में ही निवसित हैं। श्रीमती सुनीता से विवाहित राजेन्द्र शुक्ल को चार सुयोग्य पुत्रियों सौ रुचि, कु शची, कु चाहत व कु महक के पिता होने का गौरव प्राप्त है जबकि श्रीमती अंजली से विवाहित इन्दौर 1 के वर्तमान विधायक संजय शुक्ल के पुत्र चि आकाश व चि सागर हैं। चि आकाश ने अभी चार माह पूर्व 9 दिसम्बर को मुम्बई के श्री विशाल शुक्ल की आत्मजा सौ शिल्पा के साथ दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया है।

स्मृतिशेष पं कृष्णकान्त शुक्ल की तीन सन्तान चि रविशंकर 'बब्बी शुक्ल', चि राकेश 'गोलू शुक्ल' व चि अतुल 'बालू शुक्ल' ट्रान्सपोर्ट तथा पेट्रोल पंप के व्यवसाय में संलग्न है। पं कैलाश शुक्ल के पुत्र चि नितिन का भी इन्दौर में स्वयं का पेट्रोल पंप है। स्मृतिशेष सुरेन्द्र कुमार शुक्ल के आत्मज चि श्रवण स्टील व हैवी मूवर्स के व्यवसाय से जुड़े हैं। सबसे छोटे भाई पं दिनेशचन्द्र शुक्ल दो पुत्रों चि दुर्गेश व चि राकेश के पिता हैं। बहनों में स्व रामदुलारी दीक्षित, स्व सुशील शुक्ला व श्रीमती सन्तोष मिश्र के परिवार भी इन्दौर (मालवा) में ही सुव्यवस्थित हैं।

वर्तमान में 50 से अधिक संख्या में स्मृतिशेष पं दुर्गाप्रसाद शुक्ल परिवार इन्दौर शहर ही नहीं, आसपास के क्षेत्रों तक सामाजिक, राजनैतिक व व्यवसायिक जगत में प्रतिष्ठित है। दुर्गाप्रसाद जी ने अपनी सन्तानों के विवाह सम्बन्ध अधिकाँशतयः मालवा क्षेत्र में ही प्रवासी कान्यकुब्ज परिवारों में सम्पन्न किये। चार पीढ़ियों के सम्बन्धों को देखें तो निकट सम्बन्धियों के परिवार-सदस्य सैकड़ों की संख्या में मालवा भूमि में व्यवसाय, शिक्षा, राजनीति व प्रशासन के क्षेत्र में निवसित हैं। 'व्यापारे वसते लक्ष्मी' शुक्ल-परिवार का इन्दौर और मालवा क्षेत्र को व्यवसायिक सम्पन्न बनाने में भी योगदान है, राजनीति में दखल है, समाज में प्रतिष्ठा है। लगभग परिवार के सभी सदस्य व्यवसाय में ही संलग्न हैं। ❑

ऑल इण्डिया कान्यकुब्ज बोर्ड (नोएडा शाखा) के अध्यक्ष, समाजसेवी पं अनिल दीक्षित व श्रीमती सुनीता दीक्षित के आत्मज चि सोमेश का शुभविवाह सोमवार, 15 मार्च, 2021 को आयु अर्चना (आत्मजा पं जनेश शर्मा व श्रीमती सन्तोष शर्मा) के साथ सेक्टर 16, नोएडा के स्टारडम कन्वेंशन हॉल में सोल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न।

सबके प्रिय-सबके हितकारी
पं विष्णुप्रसाद शुक्ल 'बड़े भैया'

नाना श्रान्ताय श्रीरस्ति। पापो नृषद्वरो जनः।
इन्द्र उच्चरतः सखा। चरैवेति। चरैवेति।
चरन्वै मधु विदन्ति। चरन्स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्। चरैवेति। चरैवेति।

'पुरुषार्थहीन को लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती। निकम्मा रहने वाला पापी है। मधुमक्षिका पुरुषार्थ से मधु संचय करती है। पक्षी पुरुषार्थ के द्वारा ही मधुर फल खाते हैं। सूर्य के पुरुषार्थ को देखो, जो चलते-चलते कभी थकता नहीं। पुरुषार्थ करो।' ऐतरेय ब्राह्मण के कथनानुसार पं विष्णुप्रसाद शुक्ल ने संघर्ष व पुरुषार्थ के बल पर शून्य से शिखर की यात्रा की है। प्रतिकूल परिस्थितियों, कठिनाइयों और विपत्तियों के भयंकर झंझावातों में हिम्मत न हारकर 84 वर्ष की अवस्था में भी वे दृढ़तापूर्वक कदम रखते हुए कर्तव्यपथ पर अग्रसर हैं।

आठ भाई-बहनों में सबसे बड़े भाई होने के दायित्व निर्वहन के साथ 12 वीं तक शिक्षा प्राप्त कर हुकुमचंद सेठ मिल में नौकरी शुरू कर परिवार-पोषण में पिता का हाथ बंटाया। अखाड़ेबाजी में शरीर बनाने का चाव था। स्वस्थ रहने के लिए योगासन को आवश्यक मानते। दूध-दलिया का शौक रहा। जीवन में कुछ सार्थक करने का स्वप्न संजोये तीन-तीन पारियों में श्रम किया, दूध-पोहा-जलेबी-चाय होटल का व्यवसाय शुरू किया। राजनीतिज्ञों की चर्चाओं में रुचि थी। जनसंघ का इन्दौर में सबसे पहले झंडा उठाने का गौरव प्राप्त किया। सामाजिक, राजनीतिक, व्यवसायिक व धार्मिक स्तर पर खासी प्रतिष्ठा अर्जित की। पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी, विजयराजे सिंधिया, लालकृष्ण आडवाणी, प्यारेलाल अग्रवाल आदि बड़े नेता इन्दौर प्रवास के दौरान बड़े भैया के चाय-आतिथ्य को अपना गौरव मानते।

कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा

वर्ष 1984 में बड़े भैया को कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इन्दौर (संस्थापित वर्ष 1914) का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उनकी कर्मठता, समर्पणभाव, उद्यमिता,दूरदृष्टि व अदम्य इच्छाशक्ति ने भारत ही नहीं, दुनिया के ब्राह्मण संगठनों के बीच इन्दौर के कान्यकुब्ज समाज को नई पहचान दी। समाज के प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी वर्ग, व्यवसायी, प्रशासकीय व राजनीतिज्ञों को संगठन से जोड़ा। समाज की अतिक्रमित की गई भूमि-भवन सम्पत्ति को कब्जामुक्त कराया। समयानुरूप नवीनीकरण कराया। समाज का विस्तार किया। परिवार के मुखिया की तरह समाज के नेतृत्व का दायित्व निभाया। 1984 में चार्ज के रूप में 6500 रुपये प्राप्त हुए थे। आज इन्दौर कान्यकुब्ज सभा की मासिक आमदनी 15 लाख रुपये (अनुमानित) से अधिक है। नार्थ राजमोहल्ला स्थित भवन, 4/6 नार्थ राजमोहल्ला भवन, राजवाड़ा में श्रीराम मार्किट व मंदिर, विजय नगर स्थित कान्यकुब्ज नर्सिंग कॉलेज, के के विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय आदि शिक्षा के क्षेत्र में नागरिकों की सेवा तो कर ही रहे हैं, व्यवसायिक स्थलों से नियमित आय का साधन भी बन चुके हैं। नियमित छात्रवृत्ति, निःशुल्क सामूहिक विवाह व यज्ञोपवीत तथा विभिन्न अवसरों पर समारोहों का आयोजन होता है। वर्ष 1992 में दो दिवसीय कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन अविस्मरणीय है। कान्यकुब्जियत व ब्राह्मण संस्कृति की मर्यादाओं-परम्पराओं का निर्वहन करते हुए संगठन को नई दिशा दी। इन्दौर की कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा देश की अन्य

सभाओं के लिए एक उदाहरण है और केंद्रीयकृत रूप में नेतृत्व रखने की क्षमता रखती है।

युवाओं के जामवंत

सभा का नेतृत्व करते हुए पं विष्णुप्रसाद शुक्ल ने संगठन के कार्यों में जामवंत की तरह युवाशक्ति को पहचाना, सम्मान दिया और उनकी क्षमताओं का लाभ समाज के कार्यों को गतिशील बनाने में किया। उनके पास कर्मठ, परिश्रमी विभिन्न योग्यताओं वाले युवाओं की बड़ी और सशक्त टीम है। अपनी पीढ़ी के बड़े भैया अब बाऊजी के सम्बोधन से जाने जाते हैं। उनमें योग्यता व प्रतिभा पहचानने के विशिष्ट गुण है। युवावर्ग की स्वतःस्फूर्त ऊर्जा को समाजहित में लगाने हेतु सदैव उद्यत रहने वाले बाऊजी का जीवन जिस संघर्ष,श्रम, प्रयोग और विलक्षणता से युक्त है, वह युवाओं में शक्ति का संचार करती है।

2 नवम्बर, 1937 को जन्में बाऊजी उम्र के इस पड़ाव में भी उत्साह से सराबोर हैं। संगठन के कार्यों की नियमित समीक्षा, सभा के कार्यालय में साप्ताहिक बैठक, समारोह-आयोजनों में उपस्थिति, आगन्तुकों से भेंट दिनचर्या का अंग है। शारीरिक अस्वस्थता या अशक्तता जितनी ही तीव्रता से समाज के कार्यों से विरत करने हेतु उत्प्रेरित करती है, जिजीविषा उतनी ही तेजी से इधर उधर से शक्ति बटोर देती है। देवास, खण्डवा, उज्जैन व अन्य ब्राह्मण संस्थाओं को बड़े भैया का स्नेह-संरक्षण सुलभ है। समाज को बड़े भैया जैसे कर्मठ उद्यमपुरुष से अभी ढेर सारी अपेक्षायें हैं। ❑

❀ शुभकामनाओं सहित ❀

पं रामचन्द्र दुबे परिवार

प्रदेश अध्यक्ष - ब्राह्मण संसार संगठन

सहमंत्री - कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा

सी एम 112, सुकल्या, इन्दौर। मो- 9098902326

समुद्रमिव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानमिव

सहृदय डॉ. विश्वपति त्रिवेदी

भारत सरकार के महत्वपूर्ण विभागों के दायित्वों का निर्वहन कर भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त सहृदय पं विश्वपति त्रिवेदी का इन्दौर शहर से बेहद लगाव रहा है। पहला, मध्यप्रदेश वित्त निगम के चेयरमैन एवं मध्यप्रदेश सरकार के बिक्रीकर आयुक्त रहते ये इन्दौर में कार्यरत रहे। दूसरा कारण, मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित राजनैतिक घराने में ननिहाल होना।

इटावा के सम्मानित परिवार न्यायमूर्ति कीर्तिशेष पं रघुनाथ प्रसाद त्रिवेदी के सुपौत्र एवं मध्यभारत के पहले मुख्यमंत्री ब्राह्मणशिरोमणि कीर्तिशेष पं रविशंकर शुक्ल के दौहित्र पं विश्वपति त्रिवेदी (आत्मज स्मृतिशेष पं धरणीधर, पूर्व मुख्य आयकर आयुक्त , उप्र) वर्तमान में ब्राह्मण समाज ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष पद से समाज और संगठन को दिशा-निर्देशित कर रहे हैं।

सेंट स्टीफंस कॉलेज, नई दिल्ली से अर्थशास्त्र में परास्नातक व लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से डिग्री लेने के बाद 1975 में दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षक हो गए। वर्ष 1977 में सिविल सर्विसेज की परीक्षा उत्तीर्ण कर भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए। प्रमुख प्रशासनिक पदों का दायित्व सम्भालने के साथ भारत सरकार के खान व इस्पात मंत्रालय, शिपिंग व पोर्ट मंत्रालय, एयर इंडिया व इंडियन एयरलाइन्स के चेयरमैन और अंत में भारत सरकार के गृहमंत्रालय के सचिव पद से सेवानिवृत्त हुए।

नवम्बर, 1954 में जन्में विश्वपति जी का विवाह इटावा निवासी जे के सीमेंट व श्री सीमेंट के प्रेजिडेंट रहे पं देवनारायण तिवारी की आत्मजा श्रीमती मोना त्रिवेदी से वर्ष 1979 में हुआ। विश्वपति जी के भाई पं प्रजापति त्रिवेदी भी भारतीय प्रशासनिक सेवा से अवकाशप्राप्त कर चुके हैं। बहन श्रीमती आराधना शुक्ला उप्र सरकार में सचिव हैं।

कहते हैं- 'मनुष्य को विरासत में कुछ तो अपने पूर्वजों से प्राप्त होता है, कुछ अपनी सहज प्रतिभा एवं शिक्षा से और कुछ संकल्प व उद्योग से'। विश्वपति जी की माँ स्मृतिशेष क्रांति त्रिवेदी (आत्मजा कीर्तिशेष पं रविशंकर शुक्ल) एक विदुषी महिला थीं। उनके प्रकाशित दशाधिक कविता संग्रह, कहानी संग्रह व उपन्यास हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। आपके सत्प्रयासों से भारत सरकार के डाक विभाग ने क्रांति त्रिवेदी (रानी माँ) की स्मृति में एक डाक टिकट भी जारी किया था। ❑

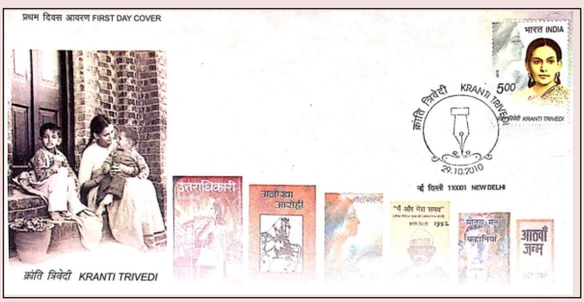

भारतीय डाक-विभाग द्वारा जारी प्रथम दिवस आवरण : 1. मप्र के प्रथम मुख्यमंत्री पं रविशंकर शुक्ल, 2. पूर्व मुख्यमंत्री (मप्र) पं श्यामाचरण शुक्ल, 3. श्रीमती क्रान्ति त्रिवेदी 'रानी माँ', व 4. पं धरणीधर त्रिवोदी (पूर्व मुख्य आयकर आयुक्त, उप्र)

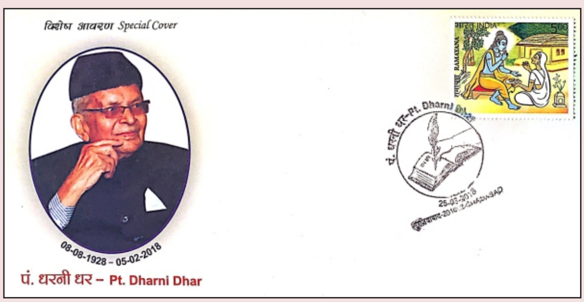

सहृदय समाजसेवी-कुशल प्रशासक

पं.वीरेन्द्र नाथ दीक्षित

सांकृत गोत्रीय अटेर के दीक्षित स्मृतिशेष दीनदयाल दीक्षित ग्वालियर स्टेट आर्मी में थे। महाराजा ग्वालियर व महाराजा रीवां से मित्रवत सम्बन्ध रहे। किसानों को अपनी उपज के सही दाम मिल सकें, रींवा रियासत में चार अनाज मंडियां स्थापित की। सन्तानों को समुचित एवं उच्च शिक्षा मिले, पारिवारिक दायित्वों का सम्यक पालन किया। पं. दीनदयाल के आत्मज स्मृतिशेष पं नर्मदाप्रसाद दीक्षित 1938 में विभिन्न स्थानों के मजिस्ट्रेट रहे। वर्ष 1947 में सिविल सर्विसेज (भारतीय प्रशासनिक सेवा) में नियुक्त हो कई जिलों के कलेक्टर, विलासपुर संभाग में कमिश्नर एवम् मध्यप्रदेश शासन में प्रमुख सचिव का दायित्वपूर्ण पद संभाला।

पं नर्मदाप्रसाद जी को चार पुत्रों धीरेन्द्रनाथ, वीरेंद्रनाथ, हीरेन्द्रनाथ व जितेन्द्रनाथ के लालन-पालन का सुयोग मिला। स्व धीरेन्द्रनाथ दीक्षित, एडवोकेट सिविल जज का पद सम्हालने के बाद भारत सरकार के कानून मंत्रालय में प्रमुख सचिव पद से सेवानिवृत हो सेंट्रल गवर्नमेंट इंडस्ट्रीज ट्रिब्यूनल के चेयरमैन पद पर रहे। आईपीएस पं वीरेंद्रनाथ दीक्षित भारतीय पुलिस प्रशासनिक सेवा के विभिन्न उत्तरदायी पदों पर रहे। स्व हीरेन्द्रनाथ दीक्षित ने आईटीआई, कानपुर में अपनी सेवाएं दीं एवं सबसे छोटे पं जितेन्द्रनाथ दीक्षित इन्दौर में मारुति बिक्रीविभाग से सम्बद्ध हैं।

भारतीय पुलिस सेवा के महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर रहे 85 वर्षीय पं वीरेंद्रनाथ दीक्षित ने वर्ष 1957 में प्रयाग विवि से परास्नातक कर 1959 में आईपीएस बनें। मध्यप्रदेश कैडर के पुलिस अधिकारी दिल्ली, नागालैंड, दक्षिण-पूर्वी सीमा क्षेत्र, सीबीआई आदि उत्तरदायी पदों पर रहने के साथ जम्मू एवं कश्मीर में राज्यपाल जगमोहन के साथ रहे। 1984 सिख दंगों के आयोग की रिपोर्ट जिन वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की टीम को सौपी गयी, उस टीम का प्रतिनिधित्व किया। अंत में इन्दौर शहर में सपत्नीक अपना आध्यात्मिक व सामाजिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

4 दिसम्बर, 1961 को शांडिल्य गोत्रीय सिविल सर्जन डॉ रमाशंकर दीक्षित की आत्मजा श्रीमती आशा दीक्षित से विवाहित इस दम्पति के पुत्र चि अनिल रुड़की में 1984 बैच के आर्टिटेक्ट में टॉपर थे। सरकार में सचिव पद पर रहे स्व वी के शुक्ल की आत्मजा रश्मि, चि अनिल की पत्नी भी आर्टिटेक्ट हैं व दिल्ली में स्वयं का व्यवसाय है। श्रीमति रश्मि-अनिल के 24 वर्षीय पुत्र अनिकेष कोलंबिया में मास्टर का कोर्स कर रहे हैं। चि प्रभात से विवाहित, जामिया मिलिया से उच्च शिक्षा प्राप्त पुत्री सौ स्मृति अपनी पुत्री कामाक्षी के साथ परिवार सहित यूएसए में निवसित हैं।

जातीय अस्मिता व गौरव के प्रति आस्थावान वीरेंद्रनाथ दीक्षित अपने सेवाकाल से ही कान्यकुब्ज संगठन व अन्य सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे। ऑलइण्डिया कान्यकुब्ज बोर्ड, दिल्ली की बैठकों, भोपाल, इन्दौर आदि के राष्ट्रीय सम्मेलनों को दिशानिर्देश देते रहे। दीक्षितजी का व्यक्तित्व निश्छल, अकृत्रिम व आत्मीयता से ओतप्रोत है। वार्तालाप करते समय दूसरे की बातों को ध्यान से सुनने का धैर्य है। आगन्तुकों के लिये सर्वसुलभ हैं। समाज में संगठन व एकता की कमी में अहं का टकराव मूल कारक है। उनका मानना है- 'जिनका भला करना चाहिए, यदि तुममें शक्ति है, तो उसका भला करने से मत चूको'। निस्वार्थरूप से समाज की सेवा करने वाले युवाओं को उनके अनुभवों का लाभ लेना चाहिए। दीक्षित जी के स्वस्थ व सक्रिय जीवन की प्रभु से प्रार्थना है।' ❑

SKYLINE SCHOOL

A Home away from Home

A DAY BOARDING PLAY SCHOOL

- Play Group to Nursery Grade
- English Medium
- Door to Door Pick and Drop
- Well Trained Teachers
- Swimming Pool, Play Area, Rides

NS-24, Block-G, Delta 1st Greater Noida
Phone: 0120-2321746, Mobile: 8130557885

भंडारी ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के प्रणेता

कीर्तिशेष डॉ चन्द्रप्रकाश तिवारी

इन्दौर का भंडारी ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स मध्यभारत के सबसे बड़े चिकित्सा संस्थान व शैक्षणिक समूह के रूप में प्रतिष्ठ है। एमबीबीएस की डिग्री हासिल करने के बाद ग्रुप के अधिष्ठाता डॉ विनोद भंडारी ने इन्दौर के परदेशीपुरा की घनी मजदूर बस्ती से दो रुपये प्रति रोगी के चिकित्सकीय शुल्क से अपनी प्रेक्टिस शुरू की। 'सेवा व समर्पण : हर-पल हर-घड़ी' चिकित्सा को व्यवसाय से अधिक सेवा का माध्यम मानने वाले डॉ विनोद को साथ मिला पत्नी डॉ मंजुश्री भण्डारी का। और डॉ भण्डारी दम्पति की लगन, निष्ठा, परिश्रम, संकल्प, साधना तथा अपेक्षितों की सेवा की मूल भावना के साथ चिकित्सा सुविधाओं व शैक्षणिक संस्थानों का विशाल साम्राज्य स्थापित हो गया। भण्डारी हॉस्पिटल एन्ड रिसर्च सेंटर, श्री अरबिंदो इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, मोहक हॉस्पिटल, श्री अरबिंदो विश्वविद्यालय, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एन्ड साइंसेज, इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी, नर्सिंग कॉलेज के रूप में मध्यभारत की सेवा में संलग्न है। 'आधुनिक चिकित्सा : संकल्प हमारा - अधिकार आपका' के सद्भाव के साथ 'आईसीसीयू ऑन व्हील्स' सेवा का देश का पहला सफल प्रयोग करने का श्रेय भण्डारी दम्पति को है। धार्मिक, आध्यात्मिक व समाजसेवा की अभिरुचि रखने वाले आस्थावान डॉ भण्डारी दम्पति कंचन हितकारी ट्रस्ट, हेल्थ विजार्ड इंडिया व सेव इन्वेस्टिगेशन के माध्यम से भी जनसामान्य की सेवा में स्वयं को खपाये हुए हैं।

डॉ भण्डारी अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने शिक्षक, गुरु व चिकित्सकीय अनुसन्धान के अध्येता कीर्तिशेष डॉ चन्द्रप्रकाश तिवारी को देते हैं। कृतज्ञतास्वरूप इंस्टीट्यूट में उनके नाम का हॉल व आदमकद चित्र डॉ भण्डारी की उदारता व विशाल हृदय की पराकाष्ठा है।

डॉ. विनोद भण्डारी एवं डॉ. मंजुश्री भण्डारी

3 मार्च, 1929 को जन्में, लखनऊ मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस में स्वर्णपदक (वर्ष 1951) प्राप्त डॉ चन्द्रप्रकाश तिवारी (आत्मज पं शिवराम तिवारी, ग्राम दवनीपुर, जिला औरैया, उप्र) को सर्जरी के क्षेत्र में विभिन्न देशों की फेलोशिप मिली। 1970 के दशक में मप्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व द्वारकाप्रसाद मिश्र के अनुग्रह पर मध्यप्रदेश आ गए। 1965 से 1989 तक इन्दौर व रायपुर के महात्मागांधी मेमो मेडिकल कॉलेज में सर्जरी विभागाध्यक्ष व डीन रहे। मप्र, गुजरात, महाराष्ट्र, उप्र, ओड़िसा व पश्चिम बंगाल के मेडीकल कॉलेज आपकी सेवाओं का लाभ उठाते। नई दिल्ली के एआइआइएमएस व ट्रामा सेंटर्स की शासकीय व शैक्षणिक कमेटियों का नेतृत्व किया। चिकित्सा जगत में खासी प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले महामानव ख्यातिप्राप्त सर्जन डॉ चन्द्रप्रकाश तिवारी मात्र 64 वर्ष की अवस्था में 20 दिसम्बर, 1993 को कालकलवित हो गए। काल का आभूषण डॉ तिवारी के श्रीयंत्र-व्यक्तित्व को कभी मिटा नहीं सकेगा।

कानपुर (स्वरूपनगर) के पं लक्ष्मीनारायण दुबे की आत्मजा श्रीमती गायत्री देवी से विवाहित डॉ चन्द्रप्रकाश के चार पुत्रों में 1. श्री राजीव इन्दौर में योगाचार्य हैं, 2. श्री संजीव टाटा मोटर्स के प्रबंधक पद से सेवानिवृत्त हो मुम्बई में निवसित हैं, 3 श्री शरद पत्रकारिता से जुड़े इन्दौर में व चौथे श्री अभय (रिलायंस कंपनी में सेवारत) भी इन्दौर में ही अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं।

चिकित्सा के कौशल्य व करुणा के मिश्रित व्यक्तित्व वाले डॉ चन्द्रप्रकाश तिवारी पाण्डित्य, वैदुष्य और प्रतिभा के साथ ही परिश्रमी स्वभाव, प्रयोगों तथा अभ्यास के स्वामी थे। इन्दौर की कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के 1973-78, व 1982-86 कार्यकाल में सभापति रहते सभा का सम्यक मार्गदर्शन किया। उनका कृतित्व वर्षों तक समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पण के लिए स्मरणीय रहेगा। ❑

बात-व्यवहार में कृत्रिमता नहीं

डॉ मुकेश दुबे - डॉ रजनी दुबे

फर्रुखाबाद जनपद, गांव संकिसा के उपमन्यु गोत्रीय दुबे परिवार के स्मृतिशेष पं रामनाथ दुबे ब्रिटिशकाल में मथुरा रेलवे के स्टेशन मास्टर पदस्थ थे। इनके आत्मज पं मथुराप्रसाद दुबे का जन्म व शिक्षा-दीक्षा मथुरा में ही हुई। सेंट जोन्स कॉलेज, आगरा में प्रोफेसर व हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे। बृज के लोकगीतों पर शोध करते हुए डॉ हरिनाथ टण्डन, डॉ रामविलास शर्मा व डॉ अम्बिकाचरण शर्मा के साथ आगरा के पास रुनकता ग्राम में संतकवि सूरदास की 'सूरकुटी' खोज का गौरव प्राप्त किया। 'डॉ कुलदीप' उपनाम से उत्तरभारत के प्रतिष्ठित कवियों में नाम था। बालकवि बैरागी, गोपालदास नीरज, गोपालप्रसाद व्यास, भवानीप्रसाद मिश्र, डॉ शिवमंगलसिंह सुमन, काका हाथरसी, निर्भय हाथरसी, शैल चतुर्वेदी, अशोक चक्रधर, सोम ठाकुर आदि कवियों के साथ मंच साझा किए। शहर कांग्रेस अध्यक्ष रहे। सहधर्मिणी उषा दुबे दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित की विशेष सहयोगी थीं। 1975-78 महिला कांग्रेस उपाध्यक्ष का दायित्व वहन किया। इस दम्पति की सन्तानों में डॉ प्रभात, डॉ मुकेश व डॉ अरुण हैं। महात्मा ज्योतिबा फुले (बल्लारशाह, महाराष्ट्र) में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त डॉ प्रभात दुबे वर्तमान में चंद्रपुर, महाराष्ट्र से प्रकाशित हिन्दी 'दैनिक महाविदर्भ' के सम्पादक का दायित्व सम्भाले हुए हैं। एनसीसी की कमान संभालने के फलस्वरूप 'मेजर' का दर्जा प्राप्त है। डॉ अरुण का परिवार आगरा में ही निवसित है।

चुंबकीय सम्मोहक व्यक्तित्व के सहृदय, समाजहित-चिंतक 65 वर्षीय डॉ मुकेश दुबे दूरदर्शन के निदेशक पद से अवकाशप्राप्त कर इन्दौर शहर में परिवार सहित अपना सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आगरा विवि से तीन विषयों (अर्थशास्त्र, इतिहास एवं हिन्दी) में परास्नातक डॉ मुकेश को हिन्दी साहित्य में विश्वविद्यालय का स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ। वर्ष 1980 में भारत सरकार के योजना मंत्रालय में वरिष्ठ अन्वेषक के पद से अपनी आजीविका का श्रीगणेश करने वाले डॉ मुकेश ने शिक्षा की निरंतरता के साथ वर्ष 1985 में रामकाव्य पर पीएचडी की उपाधि हासिल की। प्रतिभावान डॉ मुकेश दुबे वर्ष1990 में संघ लोक सेवा, नई दिल्ली में चयनित हो भारत सरकार के सूचना मंत्रालय के अधीन आकाशवाणी व दूरदर्शन केंद्र में सेवारत हुए। इस बीच एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों के सीधे प्रसारण एवं अनेकों संगीत सभाओं का महती दायित्व सहनिदेशक व कार्यक्रम प्रमुख के रूप में वहन किया। साहित्यिक अभिरुचि के चलते आकाशवाणी सर्वभाषा कवि सम्मेलन में कविता पाठ का गौरव मिला। योजना मंत्रालय में रहते केंद्रीय कर्मचारी कल्याण परिषद की पत्रिका का कई वर्षों तक सम्पादन भी किया। डॉ दुबे के शोध ग्रंथ के साथ दस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपके लेख-कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती हैं।

वर्ष 1991 में केशरवानी कॉलेज, जबलपुर में इतिहास प्रवक्ता रहे स्मृतिशेष पं द्वारकाप्रसाद शुक्ल की आत्मजा डॉ रचना रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर से रसायनशास्त्र में स्वर्णपदक प्राप्त परास्नातक हैं। और मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग से चयनित हो शासकीय होलकर साइंस कॉलेज, इन्दौर में एसोसिएट प्रोफेसर है। डॉ रचना से विवाहित डॉ मुकेश दुबे को पुत्री प्रियांशी व पुत्र वेदांश के अभिभावक होने का गौरव प्राप्त है। सौ प्रियांशी का विवाह उत्तराखंड के प्रतिष्ठ जोशी परिवार के चि तनय के साथ हुआ, जो एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में आईटी इंजीनियर हैं और यूएस के फ्लोरिडा शहर में निवसित हैं। पुत्र वेदांश टीसीएस, इन्दौर में इंजीनियर कार्यरत हैं।

डॉ दुबे के पुरुषार्थ का प्रतीक इन्दौर की रेडियों कॉलोनी में भव्य भवन है। आपके व्यक्ति त्व की शुचितापूर्ण सादगी, पारदर्शिता, अकृत्रिमता तथा सहजता के संतुलित सामंजस्य किसी को भी तत्क्षण अपनी ओर खींचने में समर्थ है। परिश्रम, पुरुषार्थ एवं अध्यवसाय के बल पर इस दम्पति का समाज में विशिष्ट स्थान है। संवादहीनता, चारित्रिक दुर्बलता और अहम के टकराव को आप ब्राह्मण संगठन में बाधक मानते हैं। ❑

भारतमित्र

BHARATMITRA

Premier Hindi Daily

L.S. Publication Pvt. Ltd.

32, Metcalfe Street, Kolkata-700013

Tel.: 22361572, 2119429, Mob.: 9830012330

Telefax: 033-22151533

Email: bharatmitra1@yahoo.com

बाढ़े पूत पिता के धर्मन

पं लक्ष्मीकान्त पाण्डेय

खजुहा (जिला फतेहपुर) के भरद्वाज गोत्रीय अपर श्रमायुक्त (मध्यप्रदेश) के पद से सेवानिवृत्त पं लक्ष्मीकान्त पाण्डेय (सुपौत्र पं राजाराम पाण्डेय) का नाम ऊर्जावान, कर्मठ, सत्यनिष्ठ व प्रशासनिक प्रतिभासम्पन्न महामानवों की श्रेणी में आता है। आपकी बोली-भाषा में ऊर्जस्विता, सम्भाषण में निश्छल अकृत्रिमता, अन्तर-बाहर और आचार-विचार में साम्य है। व्यवहार में औपचारिकता उन्हें रुचिकर नहीं। कुल-जाति के स्वाभिमान के साथ निर्बल, उपेक्षित व दलित वर्ग की पीड़ा को अनुभव करने वाले हैं।

'जिंदगी जिंदादिली का नाम है' मस्त तबियत के पाण्डेय जी को साहित्यकार भले न कहा जाय, लेकिन मन में उठे उद्वेग को जब कभी उन्होंने कविता या लेख के माध्यम से शब्दों में उकेरा है, वह सहज ही पढ़ने वाले को झकझोर देता है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाओं का प्रकाशन भी हुआ है। राज्य श्रम विभाग में सेवाकाल के दौरान श्रमिकों के हित एवं सामाजिक सुरक्षा जैसे विषयों पर किये गए आपके प्रयासों की सराहना होती है। कामगार-मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए मालिकों व शासन-सत्ता से भी दो-दो हाथ करने में संकोच नहीं किया।

पिता स्व बांकेबिहारी पाण्डेय एवं ताऊ स्व कुंजबिहारी पाण्डेय अपनी युवावस्था में गृहत्याग कर वर्ष 1938 में उज्जैन चले आये। पं कुंजबिहारी ने कवि के रूप में हिन्दी साहित्य में खासी प्रतिष्ठा अर्जित की। लालकिले की प्राचीर से सम्मानित भी हुए। इंटरमीडिएट शिक्षाप्राप्त पं बांकेबिहारी स्कूल में शिक्षक हो गए। स्वतंत्रता आंदोलन का जोर था। गांधी की आवाज पर पं बांकेबिहारी के मस्तिष्क में भी भारतमाता की बेड़ियों की खनक गूंजी, जमींदारों द्वारा गरीब-उपेक्षित समुदायों की पीड़ा को महसूस किया, हरिजनों पर होने वाले सामाजिक अनाचार बर्दास्त नहीं कर सके और गांधी के सपनों को पूरा करना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। टेक्सटाइल मिल के प्रबंधक पारसी समुदाय के मिस्टर जे सी जाल बांकेबिहारी जी के दलित उत्थान से इतने प्रभावित हुए कि अपने से काफी कम उम्र के पाण्डेय जी को अपना गुरु मान लिया।

पं बांकेबिहारी जी जन्म से ब्राह्मण थे पर कर्म से समाज सेवी। उज्जैन जनपद उनकी कर्मस्थली बना। सैकड़ों की संख्या में गांव-गांव कुआं और स्कूल बनवाये। हरिजनों के लिए बनवाये छात्रावास का उदघाटन डॉ भीमराव अंबेडकर ने किया। भैरुनाला (उज्जैन) में सफाईकर्मियों के लिए 100 मकान बनवाये। इन धर्मार्थ कार्यों के लिए ग्वालियर महाराज ने भी 20 एकड़ भूमि व नकद सहायता की।

कांग्रेस के समर्पित सिपाही पं बांकेबिहारी पाण्डेय मध्यभारत की पहली विधानसभा के सदस्य बने। 1952 में इन्दौर में सम्पन्न कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन के अगुआ रहे। पूर्व मुख्यमंत्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र के सलाहकार व पं शंकरदयाल शर्मा (पूर्व राष्ट्रपति) के सहायक पाण्डेय जी मप्र विद्युत मंडल के सदस्य भी थे। पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री से पारिवारिक सम्बन्धों के चलते शास्त्री जी का परिवार उज्जैन प्रवास पर पाण्डेय जी का आतिथ्य पाता। इसे संयोग ही कहें, शास्त्री की के निधन का सदमा बर्दास्त नहीं कर सके और पांच दिन बाद ही 16 जनवरी 1966 को इस कर्मयोगी ने असमय ही इस असार संसार से विदा ले ली। कानपुर देहात गोविंदपुर गांव के तिवारी परिवार की आत्मजा पं. बांकेबिहारी पाण्डेय जी की धर्मपत्नी शकुन्तला देवी ने भी अपने जीवनकाल में उनके लक्ष्य को रुकने नहीं दिया। और जीवन के अंतिम समय तक नारू रोग निदान, हरिजन उत्थान तथा शिक्षा के प्रसार में स्वयं को खपा दिया।

इस दम्पति के तीन पुत्रों चन्द्रकान्त, रजनीकान्त व लक्ष्मीकान्त में पं लक्ष्मीकान्त परिवार सहित इन्दौर में निवसित हैं। विक्रम विश्वविद्यालय से दो विषयों में परास्नातक व 1975 में आईआईएम कोलकाता से प्रबंधन की डिग्री प्राप्त कर पं लक्ष्मीकान्त पाण्डेय बुरहानपुर (मप्र) के जिला श्रम अधिकारी नियुक्त हुए। सहश्रमायुक्त (रायपुर), सहश्रमायुक्त (सागर सम्भाग), उप श्रमायुक्त आदि प्रतिष्ठित पदों पर रहने के बाद वर्ष 1994 में मप्र के अपर श्रमायुक्त नियुक्त हुए। वर्ष 2012 में सेवानिवृत्त हो परिवार सहित इन्दौर में अपना सामाजिक व आध्यात्मिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वर्ष 1979 में भगवंतनगर (हरदोई) के कात्यायन गोत्रीय स्व जगदीशप्रसाद मिश्र की आत्मजा श्रीमती प्रतिभा से विवाहित पाण्डेय दम्पति को दो पुत्रों चि सिद्धार्थ व चि सत्यार्थ तथा पुत्री ईशिता के अभिभावक होने का गौरव प्राप्त है। श्रीमती इश्मिता से विवाहित चि सिद्धार्थ मारुति कंपनी में व श्रीमती वत्सला से विवाहित चि सत्यार्थ एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। पुत्री ईशिता (पत्नी- श्री प्रणव) बंगलुरू में अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं। ❑

अविस्मरणीय व्यक्तित्व

'नर्मदा मैया-इन्दौर चलो' के प्रणेता

कीर्तिशेष पं लक्ष्मीशंकर शुक्ल

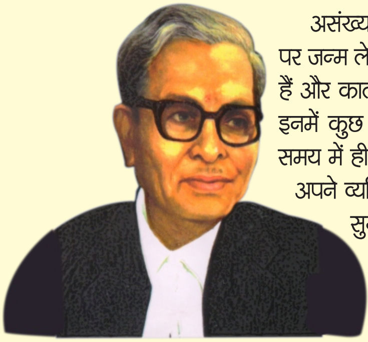

असंख्य आत्माएं प्रतिदिन पृथ्वी पर जन्म लेती हैं, पलती हैं, बढ़ती हैं और काल-कल्वित हो जाती हैं। इनमें कुछ ऐसी होती हैं जो अल्प समय में ही सृष्टि के कुछ भाग को अपने व्यक्ति त्व और कृतित्व की सुगंध से आप्लावित कर देती हैं। युग-युगांतर तक उनकी कर्म-क्रीड़ा लोगों की प्रेरक-स्रोत बन जाती है। 'नर्मदा मैया-इन्दौर चलो' को नारा ही नहीं, आंदोलन बना देने वाले कीर्तिशेष पं लक्ष्मीशंकर शुक्ल अपने 68 वर्ष की जीवनकाल में ऐसे ही पद-चिन्ह छोड़ जाने वाले महामानव थे।

शकूराबाद (उप्र) के पं शिवदत्त शुक्ल की पांचवीं पीढ़ी (पं शिवदत्त, पं सोहनलाल,पं रामसहाय व पं गौरीसहाय) के पं लक्ष्मीशंकर ने मालवा भूमि को अपनी कर्मस्थली बनाया। वर्ष 1914 को एक सामान्य निर्धन परिवार में जन्में इस महामानव ने अभावों को प्रभु-प्रसाद मानकर संघर्षमय जीवन जीते हुए उत्कर्ष के शिखर को छुआ। महू के एक प्राइमरी स्कूल से अध्यापनकार्य करते हुए कानून की शिक्षा प्राप्त की। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्' शरीर के किसी भी अंग में चोट-खरोंच लगने पर टीस मुंह से ही निकलती है, वकालत करते हुए मजदूरों व गरीब-उपेक्षितों के केस निःशुल्क लड़ते हुए उनको जायज हक दिलवाया। समाज-उत्थान के लिए राजनीति में भी कदम रखा। लोकसभा का चुनाव लड़ा। इन्दौर शहर के महापौर निर्वाचित हुए। वर्ष 1965 पं द्वारकाप्रसाद मिश्र के मुख्यमंत्रित्व कार्यकाल में रहवासियों को पानी की किल्लत से तबाह होते देखा। 'नर्मदा मैया-इन्दौर चलो' इन्दौर तक पानी उपलब्ध कराने का संकल्प लिया।

भारत सरकार के लीगल एडवाइजर व बतौर वरिष्ठ अधिवक्त ा कई राजनेताओं, मंत्रीगणों के कानूनी सलाहकार रहे। वर्षों तक बार काउंसिल के अध्यक्ष व क्रिमिनल वकील के रूप में प्रतिष्ठ थे। अनेक चर्चित मुकदमों को सकारात्मक परिणाम तक पहुँचाने का श्रेय प्राप्त है। वकीलों के लिए वेलफेयर ट्रस्ट स्थापित किया। इन्दौर हाइकोर्ट परिसर में 400 सीट का आधुनिक ऑडिटोरियम, उनके यशस्वी पुत्र डॉ सुरेश शुक्ल द्वारा संचालित लक्ष्मी मेमोरियल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर एवं कान्यकुब्ज विद्याचारिणी की प्रस्तावित योजना विजयनगर में पं लक्ष्मीशंकर शुक्ल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उनके गौरव के स्मृतिचिन्ह हैं। 1965-68 कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के सभापति रहे। मध्यप्रदेश विधानसभा का इन्दौर क्षेत्र से प्रतिनिधित्व कर चुके बड़े पुत्र श्री अशोक शुक्ल वरिष्ठ अभिवक्ता व प्रदेश बार काउंसिल के सदस्य हैं। जातीयता के अनुराग से अनुरंजित, सहृदय डॉ सतीश शुक्ल अंतरराष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त सर्जन हैं। एम वॉय शासकीय अस्पताल के सर्जरी विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हो लक्ष्मी मेमो हॉस्पिटल एन्ड रिसर्च सेंटर का संचालन कर रहे हैं। कान्यकुब्ज शैक्षणिक व पारमार्थिक ट्रस्ट संचालित कान्यकुब्ज नर्सिंग कॉलेज के प्रबंधनिदेशक हैं। पौत्र श्री सुमित शुक्ल शहर के प्रतिष्ठ चिकित्सकों में गिने जाते हैं।❑

ऋषि परम्परा की सांस्कृतिक चेतना

आचार्य गणेशदत्त त्रिपाठी

याज्ञवल्क्य के अनुसार- 'अक्षर से ही सृष्टि होती है और अक्षर में ही विलीन हो जाती है। अक्षर के कारण ही ब्रह्म का अस्तित्व है। यही अक्षर शब्द बनता है और फिर वागर्थ।' शब्द को 'ब्रह्म' और अर्थ को 'प्रकृति' की संज्ञा दी गयी है। साहित्य अमरता की साधना है। साहित्य साधना ब्रह्मात्व-लाभ है। आध्यात्मिक आस्था और साधना के सत्पुरुष आचार्य गणेशदत्त त्रिपाठी शिक्षक, साहित्यकार के साथ साधक के रूप में प्रतिष्ठित थे।

षड्दर्शनतीर्थ महामहोपाध्याय पं नारायणदत्त शास्त्री होलकर महाराजा के आमंत्रण पर मुम्बई से इन्दौर आ बसे और राजवैद्य का पद सुशोभित किया। आपके आत्मज के रूप में 26 नवम्बर, 1930 को जन्में पं गणेशदत्त ने आगरा विवि से परास्नातक, साहित्यरत्न, व्याकरणतीर्थ, न्याय, सांख्य और वेदांत की शिक्षा प्राप्त कर 1955 में सूरत (गुजरात) के सर के पी कॉलेज से अध्यापनकार्य शुरू किया। मध्यप्रदेश के ग्वालियर, रायगढ़, रतलाम, जावरा, नीमच, खरगोन और अंत में इन्दौर के देवी अहिल्या विवि के हिन्दी विभागाध्यक्ष से वर्ष 1990 में सेवानिवृत्त हुए। साहित्य के रस, छंद, नई कविता जैसे विषयों के मर्मज्ञ त्रिपाठी जी के शोध ग्रन्थ, साहित्यिक समीक्षाएं, आकाशवाणी के प्रसारण हिन्दी शोधार्थियों के लिए उपयोगी सन्दर्भ सामग्री बने हुए हैं। पत्रकारिता में भी पूरा दखल रखने वाले त्रिपाठी जी के सामाजिक, राजनैतिक व ज्वलन्त विषयों पर लिखे सारगर्भित लेख राष्ट्रभारती, वीणा, राष्ट्रीय सहारा, नई दुनिया, दैनिक भास्कर, नवभारत, चौथा संसार तथा आज जैसे पत्रों में बहुतायत से प्रकाशित हैं। वर्ष 1984 में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग का श्रीगणेश आपके सत्प्रयत्नों से हुआ।

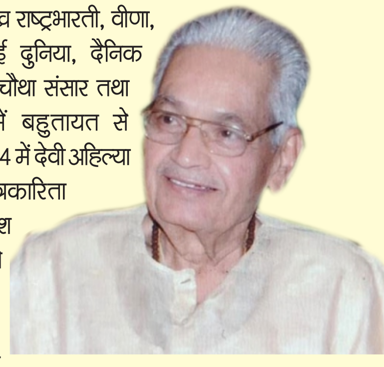

कादम्बिनी के सम्पादक राजेन्द्र अवस्थी, डॉ विशम्भरनाथ उपाध्याय, डॉ धनन्जय वर्मा, आनंदमोहन माथुर, अज्ञेय, डॉ विश्वनाथ शुक्ल, सूर्यकांत नागर, हरेराम वाजपेयी, मालती जोशी आदि हिन्दी साहित्य के उद्‌भट श्रृंगारकार आचार्य जी की प्रतिभा के कायल थे। त्रिपाठीजी के वक्तव्यों में ज्ञान और सम्मोहन के साथ वाणी की ललित शैली होती। भाषण देते हुए उनका उच्चारण शुद्धतम, सम्मोहक और झँकृतिपूर्ण होता। अपनी उपलब्धियों से सदैव निर्भार रहने वाले सहज, स्वाभाविक, सरल, अनहंकृत और पारदर्शी इस महानुभाव ने वर्ष 2012 को इस असार संसार से विदा ले ली। शिक्षा, साहित्य और पत्रकारिता में सशक्त पैठ रखने वाले आचार्य त्रिपाठी के व्यक्ति त्व-कृतित्व के सम्यक मूल्यांकन की समाज से अपेक्षा है।❑

गांधी विचारक राजनेता पं कृपाशंकर शुक्ल

'जिस स्थान पर जो है, वहां से वह अपनी क्षमता भर देशवासियों की सेवा करे', गांधी जी की इस सीख को पं कृपाशंकर शुक्ल ने अपने जीवन में भलीभाँति निबाहा। समाज के हर वर्ग, जाति, सम्प्रदाय में पैठ रखने वाले शुक्ल जी राजनीति को सेवा नहीं, व्यवसाय समझने वाली सोच से क्षुब्ध हो जाते हैं। चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी आशीष की आकांक्षा से आज भी इस वरिष्ठ राजनेता की चौखट पर उपस्थिति दर्ज कराते देखे जा सकते हैं।

जिला उन्नाव, बक्सर रोड पर बेथर से लगे गांव माफी मवैया के सांकृत गोत्रीय पं रामरतन शुक्ल वर्ष 1910 में होलकर सेना के मेजर सूबेदार थे। उनके सुपौत्र पं कृपाशंकर शुक्ल (आत्मज पं महाबीर प्रसाद) विद्यार्थी जीवन में छात्र यूनियन से जुड़े रहे। 6 नवम्बर 1941 को जन्में कृपाशंकर ने 1964-65 कांग्रेस पार्षद के रूप में इन्दौर नगर निगम का प्रतिनिधित्व किया। 1971 में युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष बने। संगठन के विभिन्न दायित्वों को सम्हालने के साथ वर्ष 1980 विधानसभा का चुनाव बेशक न जीत सके, पर 80 वर्ष की अवस्था में आज भी प्रत्याशियों को चुनाव जीताने का दम रखते हैं। कान्यकुब्ज समाज को आपका सतत संरक्षण व मार्गदर्शन सुलभ है।

वर्ष 1967 में श्रीमती प्रेमलता (आत्मजा पं श्रीनिवास मिश्र) से विवाहित पं कृपाशंकर जी के दोनों पुत्र 1. चि अतुल (पूर्व पार्षद) व 2. चि अमित युवावस्था में ही असमय कालकलवित हो गए। श्री आदित्य त्रिवेदी से विवाहित पुत्री श्रीमती नन्दिता ग्वालियर में परिवार सहित निवासित हैं।❑

कर्मठ समाजसेवीपं दुर्गा नारायण तिवारी

लंबे-चौड़े डीलडौल, चेहरे पर बड़ी मूंछ, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी पं दुर्गा नारायण तिवारी को 'मन्नू दादा' के नाम से कौन नहीं जानता। कानपुर देहात के गांव तिवारीपुर (भीतरगांव, घाटमपुर) के पं सालिगराम तिवारी के सुपौत्र पं दुर्गानारायण तिवारी (आत्मज पं देवनारायण) 77 वर्ष की वय में भी ऊर्जा से भरे दिखते हैं। लोकनिर्माण विभाग के शासकीय पद पर रहते एयरपोर्ट में नियुक्त मिली। वीआईपी सुरक्षा में रहते पूर्व राष्ट्रपति वी वी गिरी, ज्ञानी जैलसिंह, पं शंकरदयाल शर्मा, पूर्व प्रधानंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, मोतीलाल बोरा, सरला ग्रेवाल व अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क बना। कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा के उपसभापति का दायित्व सम्भालने के साथ वर्षों तक कार्यालय की व्यवस्था आपके अधीन थी। स्वाभिमानी व्यक्तित्व, हर किसी की सहायता को हमेशा तत्पर रहने वाले विश्वस्यनीय महानुभाव हैं। निस्वार्थ आत्मीयता, बात-व्यवहार में समानता, सच कहने की हिम्मत रखने वाले दुर्गानारायण जी सबकी खुशी में अपनी खुशी तलाश लेते हैं। शासकीय सेवा से अवकाशप्राप्त कर इन्दौर के बिजवासन रोड स्थित निवास पर अपना सामाजिक व आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते हुए यथाशक्ति आज भी जरूरतमंदों की सेवा-सहायता को सर्वसुलभ हैं। श्रीमती पुष्पा से विवाहित तिवारी जी की इकलौती सन्तान अनुपमा भी इन्दौर में ही अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रहीं हैं। श्री पंकज पाण्डेय से विवाहित अनुपमा के एकमात्र पुत्र चि ऋषि, पुत्रवधु व नातिन राधा है।❑

ऊर्जावान चित्रकार पं श्यामजी मिश्र

फोटोग्राफी और चित्रकारी का शौक व्यक्ति को यायावर बना देता है। श्यामजी मिश्र के जीवन का बड़ा भाग विभिन्न प्रान्तों के पहाड़ों, नदियों, वीरान जंगलों में पशु-पक्षियों के क्रियाकलापों को कैमरे में कैद करते एवं रंग-कूँची चलाते ही बीता है। कोरोनकाल में घर की बालकनी से ही पेड़ों की झुरमुटों के बीच छिपे पक्षियों की जीवंत चित्रकारी उनके बैठक की शोभा बढ़ाते हैं।

सरायमीरा (कन्नौज) के शाण्डिल्यगोत्रीय पं लाड़लेलाल मिश्र कानपुर में शिक्षानिदेशक थे। उनके पौत्र पं श्यामजी मिश्र (आत्मज पं श्रीनारायण मिश्र) इन्दौर आ बसे। लखनऊ विवि से बैचलर इन फाइन आर्ट्स की डिग्री प्राप्त की। कन्नौज के भरद्वाज गोत्रीय स्मृतिशेष पं रजनीकांत पाण्डेय एवं श्रीमती प्रभा पाण्डेय की आत्मजा अर्चना से विवाहित श्यामजी मिश्र की तीन सुपुत्रियों में 1. श्रीमती अदिति (पत्नी श्री नीतीश त्यागी) इन्दौर में, 2. श्रीमती धात्री (पत्नी श्री प्रखर दीक्षित) केलिफोर्निया में अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं। सबसे छोटी कु श्री मिश्रा कनाडा में होटल मैनेजमेंट का एडवांस कोर्स कर रही हैं।

सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले पं श्यामजी-अर्चना मिश्रा दम्पति की इन्दौर में चन्द्रशेखर आजाद सांस्कृतिक व शैक्षणिक न्यास के संचालन में महती भूमिका है। विंगकमांडर पं देवीप्रसाद तिवारी, रिटायर्ड डीआईजी वीरेंद्रनाथ दीक्षित, पं हरीश दीक्षित, श्रीमती अलका दीक्षित आदि के साथ समाज के उपेक्षित वर्ग को आर्थिक सहयोग, छात्रवृत्ति, चिकित्सकीय सहायता जैसे कार्यों को गति दी। समाज को ऐसे उत्साही, कर्मठ व भारतीय सभ्यता-संस्कृति के पोषक परिवारों से ढेर सारी अपेक्षायें हैं।❑

कविता

दे दो मेरी आन -बान -शान

गौरवशाली शहर मेरा
इन दिनों रहता
तन्हा और उदास!
तनाव में रहता
सुकून को खोजता
पूछता रहता
कहां गई अब
होलकरों की शान!
कहां उड़ गई मालवा की
सोंधी महक, चहक!
कहां गई अब
अहिल्या की आन!
मालवा की शब!
अतीत को कर याद
करता रहता फरियाद
पूछता है वह
स्वच्छता में तो
आ गए नंबर वन
अपने मन को
स्वच्छ कब बनाओगे?
कभी तो पढ़ो
सहिष्णुता का पाठ
या यूं ही सदा
थोथे आदर्शों का
रट्टा लगाओगे!
कब करोगे दूर
अपने मन से पाखंड!
कब बनोगे अखंड, प्रचंड!
पूछता है वह
मेरा स्वर्णिम अतीत
कब वापस लौटाओगे !
क्या मुझे कभी
शांति नहीं दिलवाओगे!
कब होगा तुम्हें
पर्यावरण का बोध!
खुद का कर साक्षात्कार
कब करोगे खुद पर शोध!
लौटा सको तो लौटा दो
मेरी निश्चल मुस्कान
दे सको तो दे दो मुझे
पुरानी आन ,बान ,शान!
उपहार में दे सको तो
दे दो मुझे
वही अपना पुराना देश
वही परिवेश।❑

-प्रो. (डॉ.)योगेंद्रनाथ शुक्ल

लघुकथाओं में हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर, शासकीय महाविद्यालय से हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से सद्यः सेवानिवृत्त, उच्च शिक्षाप्राप्त, कुलीन परिवार के डॉ योगेन्द्र नाथ शुक्ल के गुण, योग्यता उनकी चारित्रिक ऊंचाइयों के समक्ष बौनी नजर आती है। जितना गहरा इनका सर्जन है, उतना ही सरल-सहज है इनका स्वभाव। जब ज्ञान आचरण में उतरता है तो स्वभाव बनता है और स्वभाव जब लेखन बन जाता है तो यही इसकी तन्मात्रा बन जाती है। सहजता इनका स्वभाव है। सहजता से ही उपजती है करुणा। करुणा ही **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की दृष्टि देती है। करुणा की व्यापकता में विश्व के हर प्राणी का दर्द अपना हो जाता है। हिन्दी परिवार, साहित्य, शिक्षा जगत और कान्यकुब्ज समाज इनके कृतित्व से उपकृत है।❑

हमें भी कहना है

हमें ब्राह्मणों के उत्थान को सोचना है

हमें एक होकर, संगठित होकर ब्राह्मण विरोधी लोगों को बताना है कि आदिकाल से ब्राह्मण श्रेष्ठ रहा है, आज भी है और भविष्य में भी श्रेष्ठ रहेगा। हमें यह कहनूत गलत साबित करनी होगी कि 'ब्राह्मण-कुत्ता-हाथी, नहीं जात के साथी'। हमें ब्राह्मणों के उत्थान को सोचना और संगठित होना है।

एक मंच से प्रदेश, जिला, वार्ड स्तर पर ब्राह्मणों को संगठित कर रचनात्मक कार्य सौंपने की आवश्यकता है। देश में सर्वत्र-व्यापी होते हुए भी अनेक घटकों में विभक्त होने के कारण ही आज हम उपेक्षित और तिरस्कृत हैं। गौड़, आद्यगौड़, श्री गौड़, दाधीच, कान्यकुब्ज, पालीवाल, गुर्जर, सारस्वत, सरयूपारीण, श्रीमाली, पुष्करणा, जुझौतिया, शाकलद्वीपी आदि सभी ब्राह्मणों के लिए अवसर है कि वह भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार कर एक नई दिशा ले। हमारा आपका अस्तित्व सामूहिक चेतना, जागरण, विवेक और योग्यता पर ही अवलंबित है। दुख है, आज हमारे सर्वोत्तम सिद्धांत ही विकृत होकर हमारे पतन का कारण बन गए हैं।

सबसे अधिक जाति अपमान माथे के कोढ़ को चंदन का लेप करके भला कब तक छुपा सकते हैं। संगठित होकर ही स्वयं को शक्तिशाली बना सकते हैं। साथ ही समाज और देश को भी। वेद की वाणी है, 'मित्रों समानमना होकर जागो'।❑

– रामचन्द्र दुबे, इन्दौर (9098902326)

पं रामचन्द्र दुबे एक सहज व्यक्तित्व का नाम है- एक आम आदमी- जैसा, जो आसानी से किसी से जुट जाए, सट जाए। लगता है, उनकी दो दुनिया हैं। एक वह, जो सहज है, साधारण है, बिल्कुल औरों जैसा, एक निष्कलुष जीवन शैली, जो वे जीते हैं और दूसरा वह, जो इस साधारण की आधारशिला पर एक असाधारण की सृष्टि करते हैं। जहां से खड़े होकर जनजीवन को जानते हैं, परखते हैं और उसे एक नया आयाम देते हैं, नई दिशा की ओर ले जाना चाहते हैं। मिलनसारिता उनका स्वाभाविक गुण है। संगठन क्षमता बेजोड़ है।❑

अक्षय-तृतीया पर विशेष

जानापाव कुटीः जहाँ अवतरित हुए भगवान परशुराम

– कुमार चक्रपाणि मिश्र, इंदौर

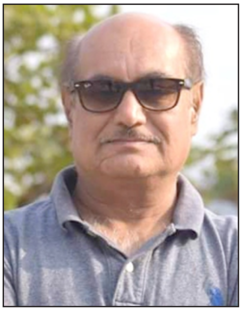

इंदौर-मुम्बई मुख्य मार्ग पर इंदौर से 45 किमी दूर मुहू तहसील में समुद्र तल से 881 मीटर विंध्यांचल की पहाड़ियों पर स्थित 'जानापाव कुटी' महर्षि जमदग्नि की तपःस्थली है। विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम का जन्म इसी कुटी में वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को जमदग्नि की पत्नी रेणुका, जो राजा प्रसेनजित की कन्या थी, के पांचवे पुत्र के रूप में हुआ बताते हैं।

लोकमान्यता है कि भार्गव का जन्म चर्मण्वती के उद्गम स्थल में हुआ था। चर्मण्वती (चम्बल) नदी का उद्गम क्षेत्र इंदौर की महू तहसील में स्थित जानापाव कुटी के ब्रह्मकुण्ड से निकलकर लगभग 750 किमी की यात्रा करते हुए राजस्थान के चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, धौलपुर होते हुए उप्र में इटावा के पास मुरादगंज में बहती यमुना से जाकर मिलती है। चम्बल के अलावा गम्भीर, अंगरेड, सुमरा, बिरमा, चोरल, कार तथा नेकेदेश्वरी नदियों को उद्गम भी ब्रह्मकुण्ड से हुआ बताते हैं।

जानापाव मालवा क्षेत्र की दूसरी सबसे ऊंची पहाड़ी है। वर्षा ऋतु के बाद यहां का मनोरम दृश्य पर्यटकों को आकर्षित करता है। खूंखार जंगली जानवरों को भी इन जंगलों में यदा कदा देखा गया है। कहते हैं - माता रेणुका ने इस पहाड़ी पर अनेकों औषधीय वृक्षों-पौधों का रोपण किया था। आज भी कई आयुर्वेदिक चिकित्सक औषधियों की खोज में यहाँ आते हैं।

भगवान परशुराम द्वारा मातृ-पितृ ऋण से उऋण होने की कथा भी इस स्थान से जुड़ी है। माता रेणुका पानी भरते समय शिकार के उद्देश्य से वन में विचरते राजा चित्ररथ के रूप-सौंदर्य पर मोहित हो गयी थी। महर्षि जमदग्नि को इसका आभाष होने पर ऋषि ने अपने पुत्रों को मां का सिर काट लेने का आदेश दिया। पिता की आज्ञापालन कर परशुराम ने पिता महर्षि जमदग्नि से अजेय होने का वरदान प्राप्त किया था। जानापाव कुटी में महर्षि जमदग्नि द्वारा

इन्दौर के स्वनामधन्य पं विष्णुप्रसाद शुक्ल 'बड़े भैया' परिवार के सौजन्य से विशालकाय पीतल से निर्मित भगवान परशुराम की यह भव्य प्रतिमा विशेषतयः जानापाव कुटी के लिए ही तैयार की गई थी। मंदिर की ऊंचाई बाधक बनने के कारण इन्दौर के मरीमाता चौक पर बाणेश्वरी पेट्रोलपंप परिसर पर स्थापित है।

स्थापित शिवलिंग आज भी विद्यमान है।

दुर्गम पहाड़ी होने व जंगली जानवरों के कारण यहां तक पहुंचना कठिन था। पहाड़ की तलहटी में बसे गांव के सरपंच सुशील पाटीदार ने बताया कि राज्य सरकार के प्रयासों से जानापाव कुटी तक पक्की सड़क का निर्माण 12 करोड़ की लागत से हुआ है। एक पर्यटन स्थल विकसित करने के उद्देश्य से 'जमदग्नि तपोभूमि' को 20 करोड़ की परियोजना की मंजूरी मिल चुकी है। वर्षात के बाद यहां बड़ी संख्या में लोग आते हैं। भगवान परशुराम के एक भव्य मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है। पाटीदार जी का कहना है - जानापाव ट्रस्ट के पास 8 एकड़ भूमि पहाड़ी पर और 24 एकड़ भूमि नीचे तलहटी में है। जिसमें वैदिक शिक्षा के गुरुकुल विद्यालय का प्रस्ताव है।

श्रीजमदग्नि आश्रम-जानापाव पीठाधीश्वर श्रीमहंत बद्रीनन्द ब्रह्मचारी महाराज ने बताया कि तपोभूमि में भगवान परशुराम जन्म अक्षय तृतीया व कार्तिक पूर्णिमा के मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालु व पर्यटक आते हैं। आश्रम के गौशाला में 108 गौवें हमेशा रहती हैं। रुकने के लिए कमरों की व्यवस्था है। प्रतिदिन भण्डारे का आयोजन होता है। सर्वपितृ अमावश्या को भूत-मेला लगता है। नकारात्मक ऊर्जा से ग्रसित लोग ब्रह्म सरोवर में स्नान कर मानसिक संतुलन को व्यवस्थित करने का लाभ लेते हैं। महर्षि जमदग्नि द्वारा स्थापित शिवलिंग की पूजा-अर्चन, ब्रह्मसरोवर में स्नान आदि से अजेय होने का आशीर्वाद तथा अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। आप कभी इंदौर आवें तो जानापाव आश्रम की रमणीक तपोभूमि के दर्शन का लाभ अवश्य उठावें। सितम्बर से फरवरी तक का मौसम अधिक अनुकूल है।❑

– 9826399568

मैं चर्मण्वती हूँ

अपने उच्चारण-सौविध्य के लिए लोक-मुख मुझको 'चंबल' कहता है। उद्दाम प्रवाह, सवेग धावन एवं उर्मिल चपलत्व के कारण मुझको 'चंचल' भी कहते हैं। मेरा एक अन्य पुराना नाम 'धवंती' भी है। 'मेदिनी कोश' ने मुझे 'कदली' कहा है। 'महाभारत' और 'श्रीमद्भागवत' से लेकर स्कंद, ब्रह्मांड, मत्स्य एवं वायुपुराणों, जैन-ग्रंथों तथा विभिन्न भाषाओं के काव्यों तक मेरा पुण्यश्लोक व्याप्त है।

स्वतन्त्र भारत के संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जन्मभूमि 'महू' के पास विन्ध्याचल से सटे हुए मालव-पठार के उत्तरी ढालान पर मेरा उद्गम है 'जानापाव' नामक तीर्थ-सरोवर। जानापाव के निकट जनकेश्वर शिव का मंदिर है। यहां महादेव ने मेरे किनारे तपस्या की थी। उनके उस वरदायिनी सानिध्य का ही परिणाम है कि मैं चर्मण्वती होकर भी पवित्र हूँ। अपने उद्गमस्थल मालवा के पठारों से नीचे उतरती हुई मैं मध्यप्रदेश के इन्दौर, धार, उज्जैन, रतलाम तथा मंदसौर जनपदों को पार करके राजस्थान में एक सौ बारह किलोमीटर लम्बी और तिरसठ से इक्यानबे मीटर गहरी, विश्वविख्यात घाटी में विचरण करती हूँ। काहूरखेड़ा में जैसे उज्जयिनी और महाकालेश्वर की पुण्य प्रशस्ति उच्चारती शिप्रा मेरे गले से लग गयी थी, वैसे ही भारतीय आन-बान के जीवंत तीर्थ राजस्थान की लाडली पारनाशा (बनाशा) राजपूतों की विरुदावलि गाती हुई, राजपुताना से बाहर आकर न केवल मेरी अगवानी करती है, वरन मुझसे मिलकर अद्वैतावस्था तक पहुँच जाती है।

महाकवि देव तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के अनन्य भक्त पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी के जन्म स्थल जनपद इटावा के मुरादगंज में मैं कृष्णकांता यमुना के घनश्याम प्रवाह में संगमन करती हूं। यमुना मुझको तीर्थराज प्रयाग में ले जाकर गंगा को सौंप देती है और गंगा अन्य सब बहनों के साथ मुझे भी सरितपति के रनिवास तक पहुंचाती है। यमुना तक तो 'जमदग्नि पाद' पहाड़ी से निकलकर मैं पांच सौ इकतीस किलोमीटर के शार्टकट से भी आ सकती थी किंतु घुमक्कड़ मनोवृत्ति, अनर्गल स्वभाव और पार्श्वभूमियों को अपना जीवन दान करने की लालसा ने मुझे लगभग एक हजार पैतालीस किलोमीटर लंबे, आड़े-तिरछे भाव में दौड़ कर ही प्रस्थान बिंदु पर पहुंचने दिया। ❑

–डॉक्टर अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'

कोई भी शक्ति या ऊर्जा बगैर नियंत्रण के विघटनकारी हो सकती है।
युवाशक्ति को भी इससे अलग करके नहीं देखा जा सकता।
मानवीय, पारिवारिक, सामाजिक व नैतिक मूल्य मर्यादाओं की सीमा तय करते हैं।
अध्यात्म-दर्शन के बिना लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

शुभकामनाओं सहित-

डॉ सुरेश चन्द्र पचौरी

अध्यक्ष : ब्रह्म-चेतना, फरीदाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : विश्व ब्राह्मण संघ
उपाध्यक्ष : कान्यकुब्ज समाज, फरीदाबाद

सम्पर्क : 9810445762

पौराणिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक छटा का मनोरम संगम

महेश्वर

रोली-अम्बरीश अवस्थी,
गुरुग्राम

इन्दौर से 91 किमी मुम्बई-आगरा मुख्य मार्ग से 13 किमी पूर्व मप्र के खरगौन जिले का महेश्वर नगर पुरातनकाल में महिष्मती के नाम से जाना जाता था। नर्मदा नदी के किनारे बसा यह शहर अपने बहुत ही सुंदर व भव्य घाटों तथा महेश्वरी साड़ियों के लिये प्रसिद्ध है। घाट पर अत्यंत कलात्मक मंदिर हैं जिनमे से राजराजेश्वर मंदिर प्रमुख है। रामायण, महाभारत के साथ स्कन्दपुराण, रेवाखण्ड तथा वायुपुराण में वर्णित नर्मदा रहस्य में महिष्मती का जिक्र आता है। महिष्मती में हैहयवंशीय राजाओं का शासन था। 10वीं पीढ़ी में कार्तवीर्य के पुत्र अर्जुन, जिन्हें भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का अवतार मानते हैं, ने भगवान दत्तात्रेय की तपस्या से हजार भुजाओं का वरदान प्राप्त कर लिया था। मान्यता है एक बार युद्ध की स्थिति बनने पर सहस्रार्जुन ने लंकापति रावण को बंदी बना लिया था। रावण के दस सिरों के प्रतीक में रानियां प्रतिदिन देशी घी के दिये जलाती थीं। तभी से आज तक शिवभक्त सहस्रार्जुन के समाधिस्थल पर स्थित राजराजेश्वर मंदिर में देशी घी के ग्यारह अखण्ड दीपक अनवरत जलते रहते हैं। देशी घी का प्रसाद व दीप दान कर लोग मनौती मानते हैं। भृगुवंशी जमदग्नि हैहयवंशियों के राजगुरु थे। जमदग्नि आश्रम से कामधेनु गाय को जबरन अपने साथ ले जाने के परिणाम स्वरूप सहस्रार्जुन को परशुराम से युद्ध में परास्त होना पड़ा।

इतिहास की गर्त में छिपे महेश्वर को अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में होल्करवंश की रानी देवी अहिल्या बाई ने अपनी राजधानी बनाया। बाह्य आक्रमणों व सुरक्षा की दृष्टि से नर्मदा के तट पर निर्मित होल्करवंश के किले के मुख्यद्वार पर ही देवी अहिल्याबाई की मूर्ति स्थापित है। कहते हैं अहिल्याबाई किले में स्थित राजवाड़ा से ही अपना शासन चलाती थीं। वे गादी छोड़ कभी सिंहासन में नहीं बैठीं। राजवाड़ा में उनके पूजा स्थल पर मौजूद शिवलिंग, हथियार, शयनकक्ष उनके शासनकाल के स्मृतिचिन्ह हैं। किले की पाषाण कला आश्चर्यचकित कर देने वाली है, जिनकी प्रतिछवि महेश्वर की हस्तनिर्मित साड़ियों में भी मिलती है।

किले के साथ लगा लंबे-चौड़े क्षेत्र में फैला नर्मदा मैया का घाट बनारस के घाटों की स्मृति दिलाता है। लंबे चौड़े विस्तृत भूभाग को समेटे अहिल्याघाट से सहस्रधारा तक का नोका-विहार अंतर्मन को उद्वेलित कर जाता है। सहस्रधारा से नर्मदा मैया की अनेक धाराएं निकलती हैं। मान्यता है कि यह वही स्थान है जहाँ सहस्रार्जुन ने अपनी हजार भुजाओं से नर्मदा के बहाव को रोक दिया था। नदी के बीचोबीच बाणासुर का मंदिर है। पतित-पावनी नर्मदा मैया के जल में स्नान या मुख-अभिसिंचन यात्रा की सारी थकान को दूर कर देता है। नर्मदा मैया का मन को सुकून देने वाला शांत बहाव, दक्षिण दिशा में बने किले की नदी पर पड़ती प्रतिच्छाया, प्राकृतिक सौंदर्य के साथ पौराणिक व ऐतिहासिक स्मृतियों को समेटे यह स्थान धार्मिक आस्था का केंद्र है।

राजराजेश्वर, कालेश्वर, काशी विश्वनाथ, बिठलेश्वर, अहिलेश्वर, चिंतामणि गणेश मंदिर-शिवालयों की लंबी श्रंखला है। शिवरात्रि स्नान, निमाड़ महोत्सव, लोकपर्व गणगौर, नवरात्रि, गंगा दशमी, नर्मदा जयंती, सावन सोमवार पर मेले आयोजित होते हैं। श्रावण मास में महेश्वर से महाकाल कांवर यात्रा में भक्तों का हुजूम रहता है। फ़िल्मनिर्माताओं को भी यहां की सुरम्य छटा आकर्षित करती है। मणिकर्णिका, अशोका, पगला दीवाना, दबंग 3 आदि फिल्मों की सूटिंग का गवाह महेश्वर पर्यटकों की पसंदीदा जगह है।❑

मण्डलेश्वर

यहाँ हुआ था
आदिशंकराचार्य- मण्डन मिश्र शास्त्रार्थ

-डॉ. मुकेश दूबे

महेश्वर से 8 किमी पूर्व खरगौन जिले का कस्बा मण्डलेश्वर कई ऐतिहासिक स्मृतियों को सँजोये धार्मिक आस्था का केंद्र है। नर्मदा के तट पर चोली नामक स्थान पर स्थित अतिप्राचीन गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर है, जहाँ आठवीं शताब्दी में जगतगुरु शंकराचार्य और मंडन मिश्र का शास्त्रार्थ हुआ था। श्रीशंकराचार्य से शास्त्रार्थ में परास्त हो जाने के पश्चात् सुरेश्वराचार्य नाम से उनके उत्तराधिकारी हुए। ऐसी लोकमान्यता है और अनेक विद्वानों, शोधकर्ताओं ने भी संस्तुति की है। मण्डलेश्वर और नर्मदा के संगम पर ही मण्डन मिश्र का विशाल प्रासाद सुशोभित था। आजकल इस प्रासाद के खण्डहर मिलते हैं जहाँ थोड़ी-सी ज़मीन खोद देने से ही भस्म के समान धूसरी मिट्टी मिलती है, जिससे मालूम होता है कि इस स्थान पर यज्ञ-यागादिक अवश्य हुआ होगा। बाजीराव पेशवा द्वारा स्थापित 250 वर्ष से भी अधिक पुराना काशीविश्वनाथ का मंदिर, छप्पनदेव मंदिर, घाट, तालाब आदि मण्डलेश्वर को सुरम्य बनाते हैं। लोकआस्था को देखते हुए राज्य सरकार ने इस नगर को 'पवित्र नगरी' घोषित किया है।

मण्डलेश्वर में माँ नर्मदा अपने शुद्ध और सात्विकरूप में अवस्थित हैं। ऊबड़-खाबड़, धरातली भाग के समान ही यहां का लोकजीवन सरस, सहज और निष्कपट है। घास-फूस, कवेलू की छतें, कुछ पक्के किलेनुमा खंडहर के साथ छोटे-छोटे गांवों की बसावट है। हरियाली आमों की अमराई, बड़ियां तथा वन-संपदा से युक्त, प्रदूषण से मुक्त, सनातन धर्म की तमाम आस्थाओं वाला नर्मदा मैया का यह तट पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को भी सहज आकर्षित करता है। सूर्योदय व सूर्यास्त के दृश्य मनोहर होता है। कवि भावों को स्वतः अभिव्यक्ति मिलती है। रमते योगी, साधु-संतों के जीवनचरित्र में नर्मदा का स्तुतिगान सुनाई देता है। नवजात कन्या जैसा माँ नर्मदा का प्रवाह, जलविन्यास और प्राकृतिक छटा एक अद्भुत दृश्य उपस्थित करती है। लोकगीतों, लोककथाओं, लोकशिल्प, लोकपहेलियों व लोकनाट्य जैसी विधाओं को भी मण्डलेश्वर ने सजों के रखा है। बोली-भाषा में निमाड़ी, मालवी व हिन्दी का प्रयोग होता है।

ऐतिहासिक रूप में ब्रिटिशकाल में ही वर्ष 1873 से यहां जिला न्यायालय है। कहते हैं अहिल्याबाई होलकर भी अपनी न्यायायिक व्यवस्था का संचालन यहीं से करती थीं। शैक्षिक रूप से सरदार पटेल विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेज, चरक फार्मेसी मण्डलेश्वर की गरिमा बखानते हैं। जलविद्युत परियोजना और बांध का निर्माण यहाँ की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। मण्डलेश्वर के निकट ही 'वेदा' और 'कुन्दा' सरिताओं का अद्भुत संगम है जिसे 'मरकरी संगम' के नाम से जाना जाता है। शिल्प, स्थापत्य और पुरातन संस्कृति की समृद्ध परम्परा मण्डलेश्वर में विद्यमान है। अतीत सदैव जीवंत रहते हैं। उसकी धारा कभी थमती नहीं।❑

कनकधारा का प्रेरणास्त्रोत

आदिशंकराचार्य ने एक दिन एक द्वार पर पहुंचकर 'भिक्षाम् देहि' की याचना की तो वह महिला उनके समक्ष आकर रोने लगी। पूछने पर बताया कि उसके घर में खाद्यान्न का एक दाना भी नहीं है और वह शंकर को बिना खिलाए लौटाना नहीं चाहती। उसने शंकर से प्रार्थना की, 'पुत्र! तुम रुको, मैं ढूंढती हूं शायद कुछ मिल जाए।' बहुत ढूंढने पर कई वर्ष पुराना आंवले का एक सिकुड़ा-चिकुड़ा फल मिला। महिला ने वही फल दान के रुप में शंकर के भिक्षा पात्र में डाल दिया। महिला की दरिद्रता पर शंकर करुणा-शिथिल हो गए और उसी के समक्ष बैठकर भगवती से प्रार्थना करने लगे। वह प्रार्थना क्या थी, मंत्रात्मक स्तोत्र था, प्रार्थना का मंत्र था जो आशुकविता के रूप में प्रकट हुआ। यही आगे चलकर **'कनकधारा स्तोत्र'** के रूप में प्रसिद्ध हो गया। इस स्त्रोत की सिद्धि तो ऐसी कि महिला का घर आंवले की आकृति की स्वर्ण-वर्षा से भर गया। आज भी धन-प्राप्ति के लिए इस स्त्रोत का पाठ-पुरश्चरण किया जाता है। लोक-आस्था है कि कनकधारा स्तोत्र सहित कनकधारा यंत्र की पूजा-अर्चना से दरिद्रता दूर होती है, ऋण से मुक्ति मिलती है। नौकरी और व्यापार में लाभ प्राप्त होता है, आकस्मिक धन प्राप्त होता है।❑

मालवा के मंडलोई

–अक्षत पाण्डेय, इन्दौर

होलकर राजवंश से पूर्व इन्दौर का शासन भरद्वाज गोत्रीय श्रीगौड़ ब्राह्मण परिवार के अधीन था। आज से लगभग 400 वर्ष पूर्व राव गणेशदास मंडलोई इन्दौर से 18 मील दक्षिण-पूर्व कम्पेल परगना (परमार कालीन) के मुखिया-जमींदार थे। अकबर ने मालवा को जिन 12 सूबों में बांटा था, उन्हीं में कम्पेल परगना में मंडलोई परिवार का शासन था। राव गणेशदास के पुत्र राव बलराम ने सत्ता का केंद्र इन्दौर को बनाया और जूनी इन्दौर में 1650-62 में शानदार महल का निर्माण कराया जो आज भी 'बड़ा रावला' के नाम से प्रसिद्ध है। सन 1666 में राव बलराम राजनीतिक हत्या के शिकार हुए। जहां उनकी हत्या की गई थी, वह स्थान 'हत्यारी खोह' के नाम से जानी जाती है। यह स्थान झरनों, प्राकृतिक सौंदर्य के कारण वर्तमान में इन्दौर आने वाले पर्यटकों के लिए खास पिकनिक स्पॉट है। जिस स्थान पर राव बलराम की हत्या हुई, वह स्थान आज भी खुड़ैल में एक मंदिर के रूप में विद्यमान है और 'पल्याजी' के नाम से लोगों की आस्था का केंद्र है।

राव बलराम के पुत्र राव चूड़ामन और प्रपौत्र रावराजा नन्दलाल ने इन्दौर को अपने शासन का केंद्र बनाया। कम्पेल-

इन्दौर महाकाल और ओंकारेश्वर मार्ग पर एक वीरान कस्बा था और राजस्व के लिए कृषि उपज पर आश्रित था। रावराजा नन्दलाल ने विभिन्न जाति-समुदाय के लोगों की बस्तियों का निर्माण किया। ख्याता (खान) व सरस्वती नदियों के तट पर तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए घाटों का निर्माण किया। व्यवसायिक गतिविधियों के लिए विशेष प्रकल्प किए। व्यापारियों को आकर्षित करने के लिए मुगल सल्तनत से करों में छूट दिलवाई। कम्पेल परगना, जो इन्दौर के नाम से जाना जाने लगा था, पहला सेज 'नन्दलालपुरा' के नाम से मिला। यह स्थान सियागंज के नाम से इन्दौर का व्यस्ततम व्यवसायिक केंद्र है। अंततः 1716 में आधुनिक इन्दौर की आधारशिला रखी गयी। 3 मार्च को हर वर्ष मंडलोई जमींदार परिवार इन्दौर का स्थापना दिवस मनाता है।

रावराजा नन्दलाल का शासनकाल मालवा और विशेषतयः इन्दौर के विकास का स्वर्णिमकाल माना गया। राव नन्दलाल के जयपुर महाराज सवाई राजा जयसिंह से भावनात्मक मधुर सम्बन्ध थे। 'हिस्ट्री ऑफ जयपुर स्टेट' (लेखकः एम एल शर्मा) के अनुसार, एक अफगान सरदार जो अपने 7000 सैनिकों के साथ उज्जैन के आसपास के क्षेत्रों को बुरी तरह रौंद रहा था, सवाई जयसिंह की सहायता से राव नन्दलाल खदेड़ने में सफल हुए।

मालवा मुगलों का सबसे उपजाऊ और समृद्ध क्षेत्र था। रावराजा ने समझ लिया था कि इन्दौर परगना के लोग मुगलों के अधीन रहकर फल-फूल नहीं सकते। हमलों के दौरान मुगलों से कोई मदद भी नहीं मिलती। अस्तु, यह मराठों और पिंडारियों के युद्ध का स्थायी मैदान बनता जा रहा था। मुगलों के निजाम किल्च खान की नजर भी मालवा पर थी। पेशवा बाजीराव बल्लाल और महाराज सवाई जयसिंह ने मुगलों से सत्ता छीनने

शहर से झांकता अतीत

शहर का व्यस्ततम बाजार नोलखा। मंडलोई जमींदार परिवार की नौवीं पीढ़ी के रावराजा तेजकरण आमों के बेहद शौकीन थे। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में उन्होंने ने आम, चीकू आदि फलों के नौ लाख वृक्षों का बगीचा लगवाया जो आज कंक्रीट के जंगल में गुम हो गया है।

बाग-बगीचों की देखभाल के लिए मालियों की एक बस्ती विकसित की गई, जो आज का मालीपुरा है।

देवी अहिल्याबाई होलकर 1764 ई में रावराजा निहालसिंह मंडलोई से भेंट करने श्री संस्थान बड़ा रावला आई थीं।

राजमाता गजरदेवी ने व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए जिस क्षेत्र को विकसित किया, वह आज सियागंज जाना जाता है।

रावराजा छत्रकरण ने तुकोजीराव हॉस्पिटल के लिए जमीन दी, जो आज एम वाय एच (महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय) सरकारी अस्पताल है।

जूनी इन्दौर ख्याता नदी का सुदूर हरा-भरा क्षेत्र था। चित्रकार नदी किनारे शांत वातावरण में चित्रकारी करते, कवियों के भावों को अभिव्यक्ति मिलती।

मालवा में उत्पादित होने वाला मधुमक्खियों का मोम व शहद

की रणनीति बनाई, साथ ही राव नन्दलाल को मदद की अपील की। बाजीराव के आदेश पर उनके विश्वस्त सूबेदार मल्हारराव होलकर ने 12000 मराठा सैनिकों के साथ नर्मदा पार की और 1732 में राव नन्दलाल की मदद से मालवा में प्रवेश किया। इसी के साथ मालवा क्षेत्र में पुनः हिन्दू शासन की पुनर्स्थापना का द्वार खुला।

इस सन्धिकाल में भी रावराजा अपनी गद्दी के सम्मान की रक्षा के प्रति मराठों की भूमिका को लेकर संदिग्ध थे। सवाई महाराज जयसिंह ने रावराजा और सूबेदार मल्हार को 'पगड़ी बदल' भाई बनाकर पेशवा से रावराजा के सम्मान, अधिकार, जायदाद को सुनिश्चित किया।

तिरला (धार जिला) 1731-32 के युद्ध में भारी संख्या में मुगल सैनिक मारे गए। हालांकि भीषण लड़ाई में 12000 से अधिक श्रीगौड़ ब्राह्मणों को भी अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। मराठे और रावराजा विजयी हुए। मांडू की वह छावनी, जहां रावराजा मंडलोई का शिविर लगा था, रावराजा के नाम पर नन्दलालपुरा रखा गया। इन्दौर शहर का नन्दलालपुरा भी उन्हीं के नाम पर है। वर्तमान में 62 वर्षीय रावराजा श्रीकांत मंडलोई जमींदार हैं। सनातन धर्म आंदोलन के संस्थापक पं दीनदयाल शर्मा की पौत्री तथा दिल्ली के व्यापारी पं वाचस्पति शर्मा की आत्मजा माधवी जमींदार से विवाहित इस दम्पति की कुंवर वरदराज मंडलोई व राजबाई श्रिया दो सन्तान विभिन्न सामाजिक सेवाओं, अपेक्षित वर्ग की सेवा के द्वारा प्रतिष्ठित मंडलोई परिवार की साख को बरकरार रखे हुए है।❑ (श्रीमती माधवी जमीदार से बातचीत पर आधारित)

मालवा का स्वर्ग 'मांडू'

राजा हर्ष, राजा मुंज, राजा सिंधु और राजा भोज परमार वंश के प्रसिद्ध शासक हुए। पूर्व मध्यकाल में पड़ोसी राज्यों के लगातार हमलों से सुरक्षा की दृष्टि से परमार राजाओं ने अपनी राजधानी धार के मैदानी इलाकों से विंध्यांचल पर्वत मालाओं के बीच बसे मांडू स्थानांतरित कर दी थी। समुद्रतल से 2 हजार फीट की ऊंचाई पर 72 वर्ग किलोमीटर में फैला यह क्षेत्र उत्तर में मालवा के पठार, दक्षिण में नर्मदा घाटी परमार शासकों के किले को प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करता था। 612 विक्रम संवत का एक शिलालेख बताता है कि छठी शताब्दी में मांडू समृद्ध और विकसित नगर हुआ करता था। इसे माण्डलच्य व मांडवी के नाम से भी जाना गया।

मालवा और निमाड़ के हरे-भरे मैदानों से ढके विंध्यांचल पर्वत से मांडू में प्रवेश के लिए बारह दरवाजे हैं। खाई से लगी सीमा पर काले पत्थरों से 25-30 फीट ऊंची दीवार किले को सुरक्षा प्रदान करती थी। बाद के वर्षों में यहां मुगलों ने आधिपत्य जमा लिया। गोरी वंश के होशंगशाह ने 1400-1440 ई तक मांडू में शासन किया। कहते है मुगल शासक शाहजहां ने गोरी वंश निर्मित मकबरे से प्रेरित होकर ही आगरा में ताजमहल का निर्माण कराया था। 1542 ई में शेरशाह सूरी ने मांडू पर कब्जा किया। उस दौरान रानी रूपमती और बाजबहादुर की अमर प्रेमकहानी भी मांडू किले से जुड़ी है। हिंडोला महल, दो तालाबों के बीच जहाज महल, जामी मस्जिद, नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर, बाघ प्रिंट के वस्त्र और मक्के के आटे से बनाया जाने वाला 'पानिया' भोजन मांडू आने वालों को लालायित करता है।❑

सामाजिक मंच

पं प्रमोद मिश्र की पुस्तक 'संस्कार पूजा पद्धति' का विमोचन

पं प्रमोद नारायण मिश्र की पुस्तक 'संस्कार पूजा पद्धति' का विमोचन 21 फरवरी, 2021 किदवई नगर, कानपुर में सांसद पं सत्यदेव पचौरी, वरिष्ठ कवि-साहित्यकार डॉ जीवन शुक्ल (कन्नौज), डॉ रमेश मंगल वाजपेयी (सीतापुर), डॉ इन्दु नारायण वाजपेयी (प्रतिष्ठ न्यूरो सर्जन) व कवि-समालोचक ओमप्रकाश शुक्ल 'अमिय' के हाथों सम्पन्न हुआ। मानव-जीवन के सोलह संस्कारों व पर्व-त्योहारों तथा विभिन्न कर्मकांडों पर सम्पन्न होने वाली पूजा पद्धतियों की तथ्यसंगत, विज्ञानसम्मत जानकारी को एक पुस्तक के माध्यम से सर्वसुलभ करवाने के पं मिश्र जी के अथक प्रयासों की विद्वतजनों ने सराहना की।

मुख्य अतिथि के रूप में कानपुर के जनप्रिय सांसद माननीय सत्यदेव पचौरी ने भारतवर्ष की सहिष्णुता का आधार सोलह संस्कारों को बताया। ये हमारी संस्कृति के मूल अंग रहे हैं। सोलह संस्कार व्यक्ति के रोज व्यवहार में आने वाले आचरण को परिशोधित करने का उपक्रम हैं। मानवीय गुणों को विकसित करने के प्रयोजन हैं। श्री पचौरी ने कहा कि इन संस्कारों की महत्ता को कम करने में शिक्षा-पद्धति व मैकाले की सोच रही है। पं ओमप्रकाश शुक्ल 'अमिय' की बुलौवा तर्ज में सुनाई रचना 'लगन लागी हरे हरे, पधारो शुभ दिन है रविवार, मनावो सब तिथि औ त्योहार, लगन लागी हरे हरे...' सुनाकर उपस्थित महानुभावों को आनन्दित किया।

'रहै देव-रहै देव' में एक दिन हम भी नहीं रहेंगे

वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से जुड़ी प्रतिष्ठ लोकगायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी ने बताया कि सदियों के दमनात्मक शासन के कारण विलुप्त होती जा रही हमारी संस्कृति, पूजा पद्धतियों, संस्कारों व शास्त्रीय परम्पराओं को श्रुति व स्मृति के माध्यम से जीवित रखने में हमारी पुरखिनों का बहुत बड़ा योगदान है।

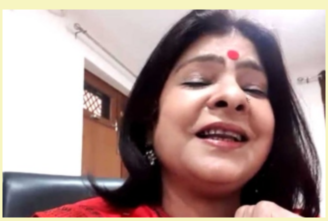

पूजा पाठ, ज्ञान परम्परा को जीवित रखने का काम लोकसंस्कृति ने किया है। लगातार आधुनिक और सुविधा सम्पन्न होते जाने के साथ और काफी-कुछ जानकारी के अभाव में हम अपनी परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं। विकास-क्रम ने नानी-दादी, जेठानी-देवरानी, बुआ-भतीजी, ननद-भौजाई आदि के रिश्तों को निरा औपचारिक बना दिया है। नॉनिहलों के भाग्य में पूर्वजों का साथ नहीं है। अब हमारे रीतिरिवाजों, मुंडन-जनेऊ, विवाह व अन्य मांगलिक अवसरों पर वह विशिष्टता, कान्यकुब्जियत दिखाई नहीं पड़ती। जिन लोकाचारों में वैज्ञानिक तत्व छिपे थे, लोकगीतों में शास्त्रीयता व रिश्तों की मधुरता समाहित रहती थी, 'जइसे उनके दिन बहुरे-वइसे सबके दिन बहुरें' के साथ जिन लोककथाओं में लोकमंगल का भाव था, वह लुप्तप्राय होता जा रहा है। वर्ष 1930-40 के दशक में सुल्तानपुर के पं रामनरेश त्रिपाठी ने अवधी लोकगीतों का संकलन किया था, जिसकी भूमिका महामना पं मदनमोहन मालवीय ने लिखी थी और गांधी जी ने इस संकलन की प्रशंसा की थी। उसके बाद सम्भवतः आज पुरखों की इस थाती को वहन करने का सुयोग आदरणीय मिश्र जी ने इस पुस्तक के माध्यम से दिया है। इसकी अपेक्षा भी थी। हमारा दायित्व है कि हम अपने बच्चों को अपनी परम्पराओं की वैज्ञानिकता से परिचित कराएं। गीता की तरह हर घर में यह पुस्तक होनी चाहिए। इन्हीं लक्ष्यों के साथ गंगा-पट्टी के लोकगायन को अपना क्षेत्र बनाया।

मालिनी जी ने कहा - हिन्दू समावेशी समाज में समाज के हर वर्ग नाई, धोबी, तेली, माली, कहार आदि सभी का आदर-सम्मान है। इनके बिना कोई भी मांगलिक कार्य सम्पन्न नहीं होता। पुरखों के प्रति, प्रकृति, जीव-जंतुओं के प्रति कृतज्ञता के भाव हमारे लोकाचारों का अंग रहे हैं। मिश्र जी ने पुस्तक में इन सभी विषयों को समाहित किया है। मालिनी जी ने अपने उद्बोधन में स्वभाववश कुछ लोकगीतों को भी गुनगुनाया।

ब्राह्मण-संसद का बने

शास्त्रों में वर्णित संस्कारों व उनके विभिन्न प्रकारों की विवेचना व प्रत्येक व्यक्ति को उनके अनुपालन की अनिवार्यता बताते हुए डॉ रमेश मंगल वाजपेयी ने कहा - 'श्रुति-

Dr. Alok Dikshit
MBBS, MD, FRHS
Pathologist

Dr. Archana Dikshit
MBBS, MD, DMRE
Radiologist Ultrasonologist

QCI Quality Council of India ACCREDITED 2018-0911

NABL ACCREDITED ISO 15189 : 2012 MC-2826

ACCREDITTED WITH U A S L

BIR The British Institute of Radiology MEMBER

NORWEGIAN ACCREDITATION

Panel Companies

AEGON LIFE	CIMAP	PUNJAB NATIONAL BANK
ALLAHABAD BANK	COLGATE	RAILWAY HOSPITAL
APPC	DR REDDY'S LABORATORY	RAYMOND
ASIAN PAINTS	EASY DAY	RELIANCE
BAJAJ ALLIANZ LIFE	FUTURE GROUP	RESERVE BANK OF INDIA
BASF	GRAMIN BANK	ROYAL SUNDERAM LIFE
BIG CITY	GREAVES COTTON	RPG-KEC INTERNATIONAL
BIRLA SUNLIFE	HDFC LIFE	SASHASTRA SEEMA BAL
BSNL	HPCL	SBI LIFE
CDRI	ICICI LOMBARD	SLEEK INTERNATIONAL
CEAT	LIBERTY	SMBC
CENTRAL WAREHOUSING CORP.	LIC OF INDIA	VIDEOCON
CGHS	NFL	

DIKSHIT
DIAGNOSTIC CENTRE

8/5, Vikas Nagar, Lucknow - 226022
http://www.visitddc.com

26.888038N.80.965751E Phone : (0522) 2320036, 4043111, 2335673 Home Collection : 94535 12755, 99354 81325, 9919959779, 77839 57120

Timings: Mon-Sat : 8.30 am to 8.30 pm Sun : 8.30 am to 2.30 pm Ambulance Available

स्मृतियों में वर्णित मनुष्य-जीवन के सोलह संस्कार मनसा-वाचा-कर्मणा दोषोंका विच्छेदन करते हैं। वैदिककाल की परंपरा रही है कि संस्कार ही मनुष्य के वर्ण का निर्धारण करते थे। जिनके कर्म ब्राह्मण के होते थे, वे ही ब्राह्मण कहलाये। गीता के 13वें अध्याय के 22वें श्लोक में कहा है- 'पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान्गुणान्। कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।।' संस्कार मनुष्य के साथ ही जाते हैं।'

मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं- 'धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥' इन गुणों और लक्षणों से संपृक्त व्यक्ति ही श्रेष्ठ मानव कहा जायेगा। और मानवों में जो श्रेष्ठ है, वही ब्राह्मण है। हम ये नहीं कह सकते कि हम संस्कारहीन हो गए हैं। बल्कि हमने अपने वैज्ञानिक कसौटी पर कसे गए, प्रकृति व प्राणिमात्र से तारतम्य बिठाने वाले संस्कारों को छोड़ आधुनिकता के नाम पर चकाचौध और क्षणिक सुख देने वाले संस्कारों की नकल कर ली है। जन्मदिन पर गुलगुले नहीं बनते, धागे से नापा नहीं जाता, मंगलगीत नहीं गाये जाते, वरन मोमबत्ती बुझाकर, केक काटा जाता है। दिया जलाना अंधेरे से उजाले की ओर जाना है। वैदिक धर्म में हर शुभकार्य अग्नि को साक्षी मानकर किया जाता है। तिलक लगाने का वैज्ञानिक, सामाजिक और वैयक्तिक सभी में महत्व है। संस्कारों में यज्ञ, दान, तप, आचरण है। मानुष से देवता बनने की राह है। संस्कारों व पूजा पद्धति को सरल, सहज और सुगम्य भाषा शैली में प्रस्तुत कर आदरणीय मिश्र ने एक सराहनीय प्रयास किया है।

डॉ वाजपेयी ने 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका का संदर्भ देते हुए कहा कि इसके संस्थापक सम्पादक कीर्तिशेष आचार्य बालकृष्ण

पाण्डेय ने पत्रिका के माध्यम से 'दिन में फेरे, दिन में भोजन, दिन में चढ़े बारात' की अनुशंसा की थी। उसमें सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिली। मैंने भी लिखा था। शास्त्रों में 'दिवा-लग्न' का विधान है। आज के समय में जब विवाह के कार्य म तीन-चार दिन से हटकर कुछ घण्टों में सम्पन्न किये जाने लगे हैं, दिन के विवाह होने चाहिए। अनावश्यक होने वाले व्ययों के साथ सामाजिक बुराइयों से भी बचा जा सकता है। 'रूढ़ि परम्परा पुनर्विचार विशेषांक' भी निकला। समय निरपेक्ष परम्पराएं रूढ़ि बन जाती हैं। पं रमेशमंगल जी ने इसके लिए एक 'ब्राह्मण-संसद' बनाने का प्रस्ताव दिया। पं मिश्र लिखित पुस्तक 'संस्कार पूजा पद्धति' समाज में सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए अपनी उपादेयता सिद्ध करेगी, ऐसा विश्वास है। अध्यक्ष पद से डॉ जीवन शुक्ल ने मानव जीवन में संस्कारों की व ब्राह्मणों के लिए उनकी अपरिहार्यता पर चर्चा करते हुए पं मिश्र की पुस्तक की उपादेयता को सार्वजनिक स्वीकृति दी।

मंच संचालन में सुश्री मुदिता मिश्रा के उच्चारण शैली, भाषा की शुद्धता, आवाज की मधुरता, समय संयोजना व मंच अनुशासन ने तीन घण्टे चले कार्यक्रम को कहीं बोझिल नहीं होने दिया। आयोजन की सफलता में स्वागताध्यक्ष डॉ रोहित मिश्र, संयोजक संजय मिश्र, ज्ञानेंद्र मिश्र, कौशल किशोर शुक्ल आदि के सत्प्रयास प्रशंसनीय हैं। पं प्रमोद नारायण मिश्र ने आये हुए स्वबन्धुओं के प्रति आभार प्रकट किया।❑

ब्राह्मण अपने वर्ग उपवर्ग का त्याग कर एक मंच पर आएं- राजेन्द्र तिवारी

कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज, रायपुर द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय विप्र सम्मेलन में सनातन धर्म एवं ब्राह्मण समाज के सम-सामायिक, सामाजिक विषयों पर वृहद् चर्चा हुई। इस अधिवेशन के समापन सत्र पर पंडित राजेन्द्र तिवारी (अध्यक्ष छ.ग. खादी ग्रामीद्योग बोर्ड) ने बतौर विशिष्ट अतिथि कहा कि आज अलग अलग वर्ग उपवर्ग में बंटे ब्राह्मण अपनी सीमा को छोड़े और अपनी एकता को बनाए रखे और तभी हम समाज मे देशभक्ति की भावना, मान्यताओं और संस्कार को बचा कर रख पाएंगे और राष्ट्र की संस्कृति का पुनर्जागरण कर पाएंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विधायक सत्यनारायण शर्मा जी ने कहा की देश भर के आये विद्वानों को सुनकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई और मैं आशा करता हूँ इस चिंतन शिविर से नई दिशा मिलेगी। अध्यक्ष अरुण शुक्ल ने आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कोरोना काल मे भी दूर दूर से समाज के विद्वान आये और सम्मेलन को सफल बनाया। हम विद्वानों के विचार संकलित कर इसका प्रकाशन कर देश भर में इसका प्रचार प्रसार करेंगे। इस सम्मेलन में देश प्रदेश के सभी प्रांतों एवं शहरों के पदाधिकारी उपस्थित हुए। ❑

-रामचंद्र दुबे, इन्दौर

सर्व ब्राह्मण संगमन 14 मई को कानपुर में

भगवान परशुराम सर्वकल्याण सेवा समिति के तत्वावधान में 14 मई, 2021 अक्षय-तृतीया (परशुराम जयंती) पर सर्वब्राह्मण संगमन का आयोजन कानपुर स्थित परशुराम वाटिका में होना निश्चित हुआ है। उक्त संगमन में विभिन्न प्रदेशों की ब्राह्मण संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे। पं शेषनारायण त्रिवेदी के संयोजकत्व में कानपुर में सम्पन्न होने वाला सर्वब्राह्मण संगमन का यह दसवां आयोजन है।❑

वैवाहिक विवरण

युवा वर्ग

S.No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Abhay			04.07.86	5'8"	NIT	Working		Mishra	Lucknow	9838569292
2	Abhay	Bharadwaj	Madhya	04.10.93	5'9"	LLB	High Court	Lucknow	R K Shukla	Faizabad	9935085170
3	Abhay	Katyayan	Madhya	08.10.88	5'9"	BA MBA	Working	Lucknow	M B Mishra	Lucknow	8840988429
4	Abhay	Kashyap		19.11.85	5'6"	B Tech	Service	Prayagraj	A Tiwari	Lucknow	8957766218
5	Abhinav	Kashyap	Aadi	15.08.81	5'9"	B.Com,M.B.A.	Working	Lucknow	J N Mishra	Lucknow	9453005857
6	Abhinav	Kashyap		03.03.92	6'1"	B Tech	Soft.. Engg.	Noida	M Tiwari	Kanpur	8840387856
7	Abhinav	Upmanyu		18.08.93	5'7"	B COM MBA	Bank	Mumbai	S Bajpai	Kanpur	6394334782
8	Abhishek	Upmanyu		16.02.93		B Tech MBA	Business		Mr Awasthi	Kolkata	9830082587
9	Abhishek	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'10"	MBA LLB	Working	Kanpur	A N Dwivedi	Kanpur	9450146099
10	Abhishek	Kashyap		12.11.89	5'6"	B Tech	Working		S N Tiwari	Bareli	9759574811
11	Abhishek	Upmanyu	Madhya	02.11.87	5'9"	B Tech	IBM	Banglore	K G Bajpai	Banda	8115892903
12	Abhishek	Shandilya		29.07.89	5'8"	BE ,MBA	MNC	Pune	A Mishra	Indore	9827191222
13	Abhishek			01.11.94	6"	BSC	Navy		A Upadhyay	Ghazipur	8160471878
14	Abhishek	Katyayan		02.06.93	5'9"	Bcomm	Business	Indore	Ravi Mishra	Indore	7000936006
15	Abhishek	Katyayan		02.06.93	5'9"	B COM	Service	Indore	R Mishra	Indore	9827318803
16	Aditya			24.07.93	5'9"	LLB	Advocate	Delhi	A Tiwari	New Delhi	9711158848
17	Aditya	Bharadwaj	Antya	21.10.92	5'7"	B Tech	Soft.. Engg.	Pune	A Shukla	Fatehpur	7985450956
18	Agrim	Bharadwaj		16.11.94	5'8"	Btech	Service	Kota	A K Dixit	Kota	8502060031
19	Ajay	Kashyap	Antya	12.06.88	5'9"	B Tech NIT	Tab Steel	Tata Nagar	M Mishra	Kanpur	9532377914
20	Akanksh	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'5"	MBBS,MS	Doctor	Hyderabad	R. Dubey	Hyderabad	9676331222
21	Akash	Shandilya		05.04.97	5'7"	BE	Working		O P Mishra	Santacruz	9322895322
22	Akash	Shandilya		03.01.88	5'8"	MBA	AIMA	Delhi	G C Dixit	Mainpuri	9818812376
23	Akhilesh	Bhardwaj	Manglik	17.12.87	6'	B.TECH	TCS	Kolkata	Pawan Shukla	Kolkata	9836067192
24	Akshat	Upmanyu	Aadi	23.05.85	5'11"	M Com	Asst. Manager		G P Bajpai	Sadar	9422807561
25	Akshat	Upmanyu	Aadi	01.02.90	5'9"	B Com	Business	Varanasi	V Bajpai	Varanasi	7007667487
26	Akshay	Katyayan	Aadi	18.11.88	5'8"	BBA,CCNA	MNC	Gurugram	U.N.Mishra	Lucknow	9897452185
27	Akshay	Upmanyu	Aadi	04.09.92	5'4"	B.Pharma, MB	ABBOTT	Bhopal	Prabha Awasthi	Bhopal	7058469578
28	Aman	Bharadwaj	Antya	08.10.91	6"	BE	Manager	Ambicapur	G Trivedi	Kanpur	8085783341
29	Amit	Upmanyu	Antya	07.09.91	5'9"	BBA,LL.B	Manager	Noida	B.P Dwivedi	Kanpur	8604700313
30	Amit	Kashyap	Madhya	03.02.88	5'7"	B.E	Quality	Udaipur	G Tiwari	Udaipur	9414238854
31	Amit	Shandilya		15.08.84	5'8"	MCA,BED.	Teacher	Orai	A.K.Mishra	Orai	9889225623
32	Amit	Kashyap		29.03.84	5'	B.Tech	CCI	H P	Uma Dixit	Lucknow	9455508989
33	Amit	Upmanyu		10.11.89	5'7"	BSC (PCM)	Central Govt	Mumbai	J P Dwivedi	Lucknow	8090867030
34	Amit	Bharadwaj		02.04.92	5'6"	BSC MBA	Accountant	Hardoi	V Trivedi	Hardoi	9598906277
35	Amit	Katyayan		05.02.93	5'8"	B Tech	Soft.. Eng.	Dubai	R Mishra	Barabanki	9792485349
36	Amit	Upmanyu		09.07.91	5'10"	BBA LLB	Manager	Noida	B P Dwivedi	Kanpur	8299018761
37	Amul	Shandilya		22.04.92	5'11"	B Tech M Tech	Civil Engg.		Mishra	Kanpur	9453041636
38	Anand	Garg		15.05.85	6'2"	B E	Service	Gujrat	Pratibha Shukla	Raipur	9329955405
39	Anand			10.12.83	5'9"	BA LLB	Wakalat		M L Shukla`	Jabalpur	9301338284
40	Anant	Katayan		19.04.89	5'9"	LLM (NLU)	Law Firm	New Delhi	A K Mishra	Agra	9555761997
41	Anirudh	Kashyap	Antya	30.04.87	5'4"	M.SC	Working	Himanchal	B Tiwari	Himanchal	8800422667
42	Ankan	Shandilya	Antya	16.09.92	6'1"	B.Tech	Infosys	Mysore	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
43	Ankesh	Bhardwaj	Madhya	29.07.85	5'8"	B.Tech.,MBA	MNC	Banglore	A.K.Pandey	Bhopal	9425682050
44	Ankit	Bhardwaj		11.03.87	6'	B Tech	Service	Banglore	R Trivedi	Kanpur	9450125732
45	Ankit	Bhardwaj		14.05.85	5'7"	M Com, MBA	Working	Noida	K K Pandey	Kanpur	9336998383

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Ankit	Bhardwaj		24.04.91	5'9"	B Tech	Soft.. Engg.	Pune	S K Shukla	Kanpur	9839303507
47	Ankit	Shandilya		08.05.90	6"	B Tech	Soft.. Engg.	Pune	A K Mishra	Orai	9889225623
48	Ankit	Upmanyu	Aadi	03.12.92	5'8"	B Tech	Tcs		S Pathak	Lucknow	8487089007
49	Ankit	Bharadwaj	Madhya	04.08.89	5'8"	MSW	Working	Nepanagar	Mr Pandey	Nepanagar	9424019615
50	Ankit	Kashyap	Manglik	11.10.90	5'8"	BDS	Practice	Kolkata	M P Tiwari	Kolkata	9330544826
51	Ankit	Shandilya		01.01.91	5'8"	BBA MBA	MNC		A Mishra	Indore	9826578232
52	Ankur	Bhardwaj		22.08.85	5'8"	MBBS	Doctor	Lucknow	Vinod Shukla	Lucknow	9005716002
53	Ankur	Bharadwaj	Madhya	25.09.90	6"	MCA	Soft.. Engg.	Banglore	A K Shukla	Kanpur	9415169529
54	Ankur	Upmanyu		02.11.90	6'1"	B COM	Manager	Mumbai	G Awasthi		9987482183
55	Ankur	Kashyap		26.06.94	5'5"	PGDM	Working	Lucknow	A K Tripathi	Lucknow	9452463790
56	Ankur	Upmanyu		30.09.89	5'10"	Btech	Working	Ghaziabad	Anand Awasthi	Kanpur	9453815272
57	Ankur	Bharadwaj		13.12.83	5'3"		Officer		S K Pandey		9557049492
58	Ankush	Bhardwaj		16.11.92	5'11"	Graduate	Soft.. Engg.	USA	AK Pandey	Delhi	9899784632
59	Ankush	Bharadwaj		16.11.92	5'11'	B Tech MSC	Working		A K Pandey	Delhi	9811424632
60	Anshuman	Kashyap	Aadi	25.01.88	5'8"	M COM	Manager	Etawah	A Tripathi	Etawah	9411993442
61	Anu	Kashyap		13.06.89	5'9"	MBBS	Metro Hospital	Delhi	S.G Dixit	Farukhabad	7974621202
62	Anuj	Upamanyu	Antya	15.08.74	5'5"	BA	Service	Mumbai	AK Dwivedi	Jalaun UP	9322141455
63	Anuj	Bharadwaj		18.11.93	5'8"	M A	Sr. Asst.	Noida	P Shukla	Noida	9752446951
64	Anupam	Kashyap	Antya	15.07.88	5'5"	M.Com,MBA	Moody's	Gurgaon	N.S Tripathi	Lucknow	8299654731
65	Anupam	Bharadwaj		20.01.89	5'11"	BCA,MCA	Soff.Engg	Pune	K K Pandey	Pune	9425893500
66	Anuraag	Kashyap		04.11.88	5'5"	B Tech	Soft.. Engg.	Canada	R K Tiwari	Kanpur	9862487293
67	Anuraag	Kashyap		03.10.79	6'2"				Y M Tiwari	Noida	9810633055
68	Arpit			12.12.87	5'9"	B Tech MBA	Astt.		A K Pandey	Bhopal	9425682050
69	Arun	Bharadwaj		02.04.84	5'5"		Railways	Ahemdabad	S K Shukla	Kanpur	7275180752
70	Arun	Bharadwaj	Aadi	02.04.84	5'4"	Graduate	Railways	Ahemdabad	S K Shukla	Kanpur	9810564979
71	Aryan	Shandilya		18.06.89	5'10"	B Tech	Business		S M Tripathi		9810295454
72	Aryan	Shandilya		18.06.86	5'10"	B Tech	Business	Delhi	S M Tripathi	Delhi	9810295454
73	Ashish	Upmanyu	Aadi	01.06.86	5'8"	BE	TCS	USA	R.S Dubey	Muzaffarpur	9430933254
74	Ashish	Upmanyu		09.09.88	5'9"	B.A.	Business	Lucknow	R.N.Trivdi	Lucknow	9454242424
75	Ashish	Bhardwaj	Madhya	21.11.87	5'7"	B Tech	MNC	Pune	S K Shukla	Kanpur	9450336902
76	Ashish	Katyayan	Madhya	27.07.85	5'10"	MBA	IBM	Banglore	A Mishra	Kanpur	9450635424
77	Ashish	Bhardwaj	Antya	25.09.89	5'7"	BE,MTech	Service	Kuwait City	Y.S Shukla	Unnao	8369492792
78	Ashish	Bhardwaj		33 Yrs.	5'6"	High school	Business	Kanpur	S K Shukla	Kanpur	7752944773
79	Ashish	Bhardwaj	Antya	11.04.88	5'8"	BE Engg.	Service	Bhopal	A K Trivedi	Bhopal	9425600600
80	Ashish	Bharadwaj		29.07.89	5'8"	B.Tech CS MB/	Asst. Manager	Mumbai	B K Shukla	Kanpur	9450130799
81	Ashish	Upmanyu	Madhya	26.10.88	5'8"	B Tech	Wipro	Noida	R Awasthi	Kanpur	9839188266
82	Ashish	Garg		01.10.82	5'6"	BE MBA	Manager	Banglore	Shukla	Jabalpur	9131429175
83	Ashish	Upmanyu		08.10.92	5'10"	BCA MCA			S K Awasthi	Lucknow	9125383966
84	Ashish	Kashyap	Antya	27.02.91	5'5"	BSC MA	Assistant		R Tripathi	kanpur	9450148155
85	Ashish	Sankrit		20.02.87	5'6"	MA Bed	Business	Shahjahanpur	A K Shukla	Shahjahanpur	9670977025
86	Ashish	Bharadwaj	Madhya	28.01.89	5'11"	B Tech LLB	Govt.	Noida	R Pandey	Kanpur	9453851560
87	Ashish	Kashyap	Antya	07.11.86	5'10"	MComm	Govt. Officer	Kanpur	R K Tiwari	Kanpur	9454944162
88	Ashish	Bharadwaj	Aadi	17.11.89	5'9"	B.Tech	Working	Singrauli	U Shukla	Gaya	8544310205
89	Ashu	Sandilya		24.12.88	5'2"	MCA	Working	Patna	S K Dixit	Delhi	9811235591
90	Ashutosh	Katyayan		04.03.92	5'10"	B.com M.com	Working	Dehradun	A K Mishra	Rishikesh	9837089868
91	Ashwani	Bhardwaj		31.07.83	5'6"	BA	Business	Kanpur	S Shukla	Kanpur	9657666327
92	Ashwin	Upmanyu		12.08.90	5'10"	MBA	Company		H Dwivwdi	Unnao	9975316610
93	Ashwin	Bharadwaj	Madhya	22.02.92	5'7"	BE	Business	Indore	B K Pandey	Indore	7974278533
94	Ashwin	Bharadwaj	Madhya	22.02.92	5'7"	BE	Business	Indore	B K Pandey	Indore	9826579558
95	Atul	Bharadwaj	Madhya	18.04.86	5'11"	B Tech			Shukla	Lucknow	9839105203

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Avinash	Shandilya		1995	5'7''	B Tech	Web Designer	Lucknow	K R Mishra	Lucknow	9453890107
97	Brahmendra	Kashyap	Madhya	19.02.80	5'7"	BCom	Photographer	Jabalpur	B. Tiwari	Jabalpur	9907286364
98	Chakrapadi	Katyayan		01.12.89	5'9"	B Tech(NITN)	PCS Officer	Utrakhand	R J Mishra	Lucknow	9415752075
99	Chandan	Bharadwaj		29.04.91	5'10''	MBA	Bijus co	Delhi	R Pandey	Lucknow	9794840121
100	Chandra Prak	Kashyap	Antya	31.01.84	5.6'	M.Com	Business	Kanpur	B.S. Tripathi	Kanpur	9044512978
101	Chandrasekha	Bhardwaj	Madhya	09.01.87	5"6	MAC, BAD	Teacher	Jhabua	Azad Sharma	Jhabua	9714709819
102	Chaturbhuj	Bharadwaj	Aadi	18.06.87	5'11''		HCL	USA	A K Mishra	Jaunpur	7738216970
103	Chinmay	Kashyap		19.01.89	6''	MA	Working	Indore	S Dixit	Indore	9425400847
104	Deepak	Bhardwaj		16.09.85	5'11''	IIT M.Tech	Bank Manager	Mumbai	Manju Trivedi	Kanpur	9415727581
105	Deepak			19.01.94		MBA	Working	Rewa	Chaturvedi	Rewa	9149449275
106	Deepak	Vashisht		23.02.91	5'5''	B Parma MBA	Working	Goa	H Mishra	Palghar	9158454727
107	Deepak	Kashyap		26.05.91	5'8''	Diploma	Business	Kanpur	S Tiwari	Mumbai	9922024308
108	Deepak	Chandrayan		19.01.94	5'8"	BSc, MBA	Service	Indore	Mr Chaturvedi	Rewa	9949587709
109	Deepankar	Upmanyu	Antya	03.06.88	5'8"	B Tech	Soft.. Engg.	Pune	D Dwivedi	Kanpur	9415479269
110	Deewakar	Bharadwaj		27.02.94	5'9''	B Tech	VTU	Banglore	S Shukla	Kanpur	9235505150
111	Devas	Bhardwaj		08.02.87	5'9''	BE	Working	Delhi	D K Shukla	Kota	9414189670
112	Devesh	Bhardwaj		27.07.81	5'9"	B.Sc, MBA	Officer PSU	Gandhinagar	S.C. Shukla	Gandhinagar	9737877705
113	Devesh	Kashyap	Madhya	12.02.86	5'5''	MBA	Asstt. Manager		J P Tiwari	Lucknow	9336961827
114	Dhawal	Upmanyu		21.08.88	5'8''	M Tech.	Navy		V Bajai	Lucknow	9044501785
115	Divanysh	Bharadwaj	Antya	22.05.92	6'1''	LLB (IIT)	LLM	Jodhpur	G. Shukla	Kanpur	9415051380
116	Divyanshu	Katyayan	Madhya	13.12.87	5'9"	MBA	Astt Mngr	Delhi	A.K. Mishra	Lucknow	9838792102
117	Dr. Abhishek	Garg	Antya	31.05.92	6''	MBBS	Officer	Farrukhabad	U Chaturvedi	Fatehgarh	9415167849
118	Dr.Ram	Katayan	Antya	12.03.91	5'6''	BAMS			K C Mishra	Banda	9752448579
119	Gajendra	Kashyap		31.08.89	5'8"	B.com	Business	Jabalpur	K P Tiwari	Jabalpur	9907286364
120	Ganesh	Upmanyu		33 YRS.	5'8"	IIT,ISB	Service	Gurugram	O.P.Awasthi	Kanpur	9935317848
121	Gaurav	Katyayan		24.10.90	5'7"	BE	Project Engg	Pune	S.K Mishra	Lucknow	8840284768
122	Gaurav	Bhardwaj	Madhya	23.10.88	6"	B TECH	DELL	Noida	D.K Pandey	Kanpur	7599101722
123	Gaurav	Shandilya	Aadi	02.12.87	5'11"	B Tech(NIT),	ICICI Bank	NCR	O.S.Mishra	Kanpur	9935616625
124	Gaurav	Shandilya	Aadi	16.01.84	6"	B.Tech	TATA Power	Orissa	S.Mishra	Lucknow	9415794058
125	Gaurav	Kashyap	Antya	12.06.85	5'5"	B.TECH, MBA	Business	Orai	S.R Dwivedi	Jalaun	8382947554
126	Gaurav			29.09.90	5'11''	B TECH			S M Tripathi	Jaunpur	9910017569
127	Gaurav	Upmanyu	Madhya	27.04.88	5'9''	B Tech MBA	Service	Lucknow	S C Bajai	Lucknow	8840968429
128	Gaurav	Bharadwaj		09.09.88	5'3"	MA Bed			N Pandey	Shahjahanpur	8400006552
129	Gaurav	Bharadwaj	Aadi	17.11.89	6'1"	B Tech	Working	Noida	A Pandey	Kanpur	8299120095
130	Govind	Upmanyu		23.07.93	5'6''	MCA	Soft.. Eng.		B Bajpai	Hardoi	8448139750
131	Hariom	Bhardwaj	Madhya	07.03.88	188cm	B Tech NIT	MNC	Delhi	R Shukla	Bhopal	9849158318
132	Haritabh	Sankrit		30.09.86	5'7"	M B A	Self Employed	Kanpur	Ajay Shukla	Kanpur	9415050280
133	Harsh	Bhardwaj		29.01.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Jayant Shukla	Kanpur	9919333014
134	Himanshu	Kashyap	Antya	27.08.92	5'10''	B Tech	Working	Gurugram	R Tripathi	Kanpur	9307340800
135	Himanshu	Katyayan	Antya	08.11.86	5'8"	B.Tech, MBA	Mercedez	Bengaluru	P.K. Mishra	Varanasi	9451938889
136	Himanshu	Shandilya		22.09.88	5'7"	B.Tech	TCS	Pune	A.N. Dixit	Gorakhpur	8588071087
137	Himanshu	Bhardwaj	Aadi	06.02.88	5'5"	BBA,MBA	CITI	Mumbai	S.C.Shukla	Lucknow	9839014905
138	Himanshu	Katyayan		05.06.90	5'7''	B Sc B Tech	Civil Engg.	Ranchi	R N Mishra	Kanpur	9415727238
139	Ishan	Upmanyu	Antya	16.6.89	5'7"	B.Sc	Army Capt.	J&K	Mahesh Dixit	Bhopal	7587598015
140	Jayant	Upmanyu		10.09.87	5'7"	B.Tech.,MBA	MNC	Gurugram	P.K.Agnihotri	Kanpur	9936150917
141	Jaynit	Upmanyu		28.08.90	5'8''	MA	Job		R Dwivedi	Unnao	9129184162
142	Kanhaiya	Upmanyu	Aadi	19.11.90	5'6"	B. Com,	Working	Andheri	K Dubey	Jhansi	8007256328
143	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6''	BE M tech	Working	Gurgaon	G Awasthi	Ghaziabad	9924292224
144	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6''	M Tech	Engineer	Gurgaon	K Awasthi	Gujrat	9824233659
145	Kartikeya	Katyayan	Madhya	25.11.88	6'	LL.B CS	Practicing	Noida	Suman Mishra	Delhi	9818678011

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Kaushik			04.10.86	5'5''	PHD	Working		R Tripathi	Aurangabad	8808053400
147	Kshitij	Upmanyu	Madhya	05.06.88	5'10"	B.Tech	MNC	Noida	V.K.Agnihotri	Gahziabad	8130743430
148	Kshitij	Kashyap		24.03.91	5'10"	BE (BITS)	Working	Mumbai	P Tripathi	Unnao	9804242502
149	Kshitij	Kashyap	Antya	01.03.93	5'8''	B Tech	ONGC	Chennai	B Tripathi	Jabalpur	9415000201
150	Kunaal	Shandilya	Antya	03.06.85	5'8"	B.Tech.,	S.W Engg	Mumbai	R.K.Mishra	Lucknow	9918383464
151	Madhvedra	Katyayan		21.06.91	5'11''	B Tech	Service	Banglore	R K Mishra	Lucknow	9450672302
152	Maj. Ram	Upmanyu		27.03.89	5'8"	B.Tech	Indian Army		R.K. Dubey	Jabalpur	9424357435
153	Malay	Kashyap	Aadi	19.09.90	5'8"	B.TECH	Bajaj	Lakhimpur	P.N Tiwari	Kanpur	9452364432
154	Manish	Kashyap	Madhya	27.09.78	5'6"	MBA, LLB	Advocate	Bhopal	G.M.Tripathi	Kanpur	9753416001
155	Manish	Kashyap		07.10.86	5'8''	MCA	Soft.. Engg.		R Tiwari	Fatehpur	9871806482
156	Manish	Bharadwaj	Aadi	07.08.84	5'6''	High School	Business		M Shukla	Kanpur	9454026213
157	Manoj	Kashyap		27.09.93	5'11''	BE PGDM	Working		G Tiwari	Carolina	9653395875
158	Manu	Katyayan	Aadi	06.07.84	5'8"	MCA MS	Working	Chicago	A.K.Mishra	Bareili	9410431399
159	Manu	Upmanyu	Antya	24.06.87	6'	B.Tech.,	P.O.Bank		R K Awasthi	Lucknow	9936213811
160	Mayank	Bhardwaj	Aadi	22.12.83	5'10"	B.Tech.,	R Jio	Kanpur	P.Shukla	Kanpur	9807147903
161	Mayank	Bhardwaj		19.08.87	6'1''	Enginering	Merchant Navy		Y Shukla	Kanpur	9935968533
162	Mohit	Bhardwaj		09.10.89	5'6"	B.COM, BED	Business	Kanpur	O.P Shukla	Kanpur	9839104819
163	Mohit	Bhardwaj	Aadi	19.08.92	5'9"	B Tech	L & T	Varodra	A Shukla	Agra	9528324823
164	Mohit	Shandilya	Aadi	04.07.88	5'11''	B Tech MBA	TCS	Mumbai	P Mishra	Kanpur	8317093609
165	Mohit	Katyayan		16.12.86	6'2''	B Tech	Service		S R Mishra	Noida	9310157413
166	Mohit	Upmanyu		25.05.91	6'''		Company		A Bajpai	Lucknow	7607382340
167	Mridul	Kashyap		15.08.88	5'6"	B.Tech	Ericsson	Delhi	A.K.Tripathi	Jhansi	9453622253
168	Mukund	Kashyap	Antya	30.12.89	5'11''	B Tech MBA	Asst. Manager		M S Tripathi	Unnao	9235796103
169	Narendra	Katyayan		06.11.78	5'6"	B.A.	OWN Biz.	Kanpur	P.K.Mishra	Kanpur	7355717632
170	Narendra	Shandilya	Madhya	07.12.86	5'11''	B.A., PGDCA	Self Employed	Indore	S.D Dixit	Indore	9424012517
171	Nikhar	Kashyap		22.05.91	5'11''	B SC MBA	Senior Analyst	Gurugram	N Tripathi	Kanpur	8299726705
172	Nikhil	Upmanyu		31.05.88	5'10''	B Arch	Business	Indore	C P Dubey	Indore	9926061402
173	Nishchal	Shandilya		30.09.88	6''	B Com	Private	Lucknow	D K Mishra	Lucknow	9452741385
174	Nishit	Katyayan	Antya	03.09.88	5'8"	B.Tech.,	TCS	Lucknow	Vinodmishra	Lucknow	9415904841
175	Nitin	Shandilya	Madhya	23.01.87	6'2"	MCA	Lecturer	Bhopal	Indresh Dixit	Bhopal	7000201357
176	Nitin			31.03.88	6''	M Arch	Architect		J S Chaturvedi	Lucknow	9129572047
177	Nitin	Upmanyu		09.11.82	6'1''	B Tech LLB			S P Awasthi	Kanpur	8707058165
178	Nitish	Kashyap		28.11.90	5'9"	B Tech	Infosys	Hyderabad	S Dubey	Hyderabad	9440848560
179	Nitish	Shandilya	Madhya	16.04.91	5'7''	B Tech	Working	Banglore	N Dixit	Kanpur	8840176657
180	Pankaj	Kashyap	Antya	12.01.86	5'8"	BE	MNC	Dewas	R C Tiwari	Indore	9575311630
181	Parth	Bharadwaj		02.08.90	5'11''	B COM LLB	High Court		S Pandey	Palghar	9324850490
181	Pavitra	Bharadwaj	Aadi	18.01.92	6'1''	CA	Private	Kanpur	G K Shukla	Kanpur	9415041945
182	Pawan	Shandilya		25.11.93	6''	B Tech MBA	Amazon	Hydrabad	S K Shukla	Hydrabad	9901864679
183	Pawan	Bharadwaj		16.11.93	5'8''	B Tech	Soft.. Engg.	Gurgaon	A K Pandey	Kanpur	9651657471
184	Pourush	Upmanyu	Aadi	19.09.88	5'11"	BE, M.Tech	SBI	Durg	Arvind Awasthi	Bhilai	7409175092
185	Prakhar	Bharadwaj		01.11.92	5'9''	B Tech (ME)	Ex. Engg.	Mumbai	Pandey	Lucknow	7905340376
186	Pramit	Katyayan		01.10.90	5'9''	B COM	Employe		S Agnihotri	New Delhi	9818721819
187	Pranjal	Kashyap	Antya	25.04.88	5'7"	B.Tech	HP	Bengaluru	Prakash Tiwari	Unnao	9450020858
188	Pranjal	Katyayan	Madhya	12.11.87		B Tech	Deloitte	Gurgaon	A K Mishra	Ghaziabad	9818651810
189	Pranshu	Shandilya	Madhya	14.03.90	6'	B Com	American Expre	Gurgaon	Ashwini Mishra	Delhi	9311601401
190	Prashant	Upmanyu	Antya	05.01.88	5'9"	M.Sc.(BITS Pila	Oracle	Banglore	S.K.Awasthi	Kanpur	8720053266
191	Prashant	Upmanyu		27.09.89	5'9"	B Com, MBA	Service	Delhi	A Awasthi	Lucknow	9450652296
192	Prashant	Upmanyu	Madhyaa	01.07.90	5'11''	M Com M.Sc	Company	Haryana	H S Bajpai	Haryana	8882362115
193	Prateek	Bharadwaj		31.01.95	5'6''	BE	Deffence	Haryana	Dev Raj	Haryana	9740179801
194	Prateek	Garg		33390	5'8''	B Tech	Management	UK	Shukla	Rewa	9029073333
195	Prateek	Shandilya		17.03.87	5'6''	BE	TCS	Norway	A Mishra	Indore	9098207970

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Prateek	Bhargav		05.07.92	5'8"	High School	Company		G Tiwari	Jaunpur	9833596090
197	Praveen	Shandilya		01.01.90	5'6"	Intermediate	Private		R Mishra	Unnao	9793942109
198	Praveen	Katyayan		26.10.82	5'7"	BSc	Service	Korba	Parvati Mishra	Korba	8103848830
199	Prince	Bharadwaj		02.08.90	5'10"	BE	Soft.. Engg.	Pune	R Pandey	Indore	9826048929
200	Pritesh	Sankrit	Aadi	24.12.90	5'6"	B Tech	Company	Delhi	A Shukla	Kanpur	9454087264
201	Priyam	Upmanyu		20.07.88	5'3"	MBA	MNC	Pune	A.K.Awasthi	Kanpur	8604956305
202	Puneet	Katyayan	Antya	17.11.90	6"	B Tech	MNC		S C Mishra	Lucknow	8707809137
203	Puneet	Bharadwaj		11.05.92	5'9"	M COM MBA	Business	Jaipur	D Shukla	Jaipur	9414075174
204	Puneet	Shandilya	Aadi	18.10.90	5'7"	Post Graduate	Employe		S K Dixit	Chandigarh	8837733436
205	Pushpendr	Kashyap		02.07.91	5'11"	B Tech	Govt. Job	Kanpur	Rajesh Tripathi	Kanpur	7510086965
206	Rahall	Katyayan	Aadi	16.07.85	5'4"		Working		B P Mishra	Kanpur	9473693278
207	Rahul	Kaushik	Antya	06.01.86	5'11"	B.COM, MBA	Self Employed	Sagar	S.G Dubey	Sagar	8889022999
208	Rahul	Upmanyu	Madhya	21.10.91	5'9"	B Tech	Company	Pune	R K Dubey	Jabalpur	7016665989
209	Raj			07.08.95	5'7"	Intermediate			SK Mishra	Ghaziabad	7210505022
210	Raj Kishore	Katyayan	Aadi	04.05.70	5'9	L.L.B	Advocate	Hyderabad	G Mishra	Hyderabad	9848560876
211	Rajan	Bhardwaj	Antya	12.01.90	5'9"	BE	Soft. Engg.	Pune	C Chaturvedi	BHOPAL	9406903868
212	Rajat	Kashyap	Aadi	13.11.90	5'6"	B Tech	Officer	Mumbai	M Tripathi	Unnao	9969253892
213	Rajendra	Bharadwaj	Antya	30.06.91	5'2"	B Tech			R P Shukla	Lucknow	9839054358
214	Rajiv	Katyayan		19.06.90	5'10"	B Tech	MNC	Gurugram	N K Mishra	Kanpur	7275990253
215	Ram	Sankrit		08.03.77	5'10"	B.Com	Investment Ad	Kanpur	G.S.Shukla	Kanpur	9889526808
216	Ram	Upmanyu		27.03.89	5'8"				R Dubey	Jabalpur	7016665989
217	Ranaveer	Severn		28.08.85	5'10"	B.Tech.,	Oracle	Banglore	J.N.Tiwari	Kanpur	9415133084
218	Ratindra			18.06.79	6"	BSC	Job		M P Dixit	Jagdalpur	9340660224
219	Raval Sagar	Bharadwaj	Aadi	10.11.89	5'3"	ITI	Business	Dist. Su.Naga	Prabhasankar	Gujarat	8200989584
220	Ravi	Bhardwaj		27.11.86	5'6"	B.Tech.,	HCL	Noida	A.K.Pandey	Lucknow	9451002606
221	Ravi	Bharadwaj		21.09.95	5'5"	MBA			A Pandey	Gujrat	9998272622
222	Remit	Upmanyu		08.10.91	5'8"	MBA	TCS	Hydrabad	D K Awasthi	Hydrabad	7093757018
223	Rikesh	Kashyap	Antya	28.08.92	5'10"	B COM	Govt.	Nagpur	S Tiwari	Nagpur	9763444466
224	Rishee	Bhardwaj		07.11.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Y.K.Pandey	Jaipur	9929115628
225	Ritam	Bhardwaj	Madhya	07.06.92	5'8"	B Tech	Amazon.com	Seattle	Pranav Shukla	Kanpur	9839212801
226	Ritam	Bharadwaj	Madhya	07.06.92	5'9"	B Tech (CS)	Soff. Engg.	USA	P Shukla	Kanpur	7019989422
227	Rituraj	Shandilya		11.08.87	5'6"	B Tech M Tech	MNC	Noida	S Dixit	Hardoi	8604006847
228	Robin	Katyayan	Madhya	24.08.86	5'9"	B.Tech	Asst. Manager	Mumbai	S.C.Agnihotri	Lucknow	9451063051
229	Rohit	Upmanyu	Antya	01.05.87	5'8"	BE, MS	Working	California	D.M Dubey	Solapur	9370422380
230	Sachin	Katyayan		03.03.91	6'	Bcomm, LLB	Advocate	Indore	V S Mishra	Indore	9827662464
231	Samanway	Vashisht	Antya	28.03.92	5'3"	BE	Research	Britain	B A Pandey	Varanasi	9449036726
232	Sanjeev	Upmanyu	Madhya	04.05.82	5'11"	BCOM MBA	Manager	Surat	T Trivedi	Raibarely	9792317251
233	Sarvesh	Bharadwaj		02.07.87	5'8"	BE MBA	ICICI Bank	Hyderabad	H N Dixit	Gwalior	6376315180
234	Sarvesh	Bharadwaj	Antya	12.03.3	5'11"	MBA	Analyst	Hyderabad	U P Pandey	Hydrabad	9425366473
235	Saurabh	Upmanyu	Aadi	16.09.89	6'	B Sc	Central Govt	New Delhi	A Dwivedi	Jhansi	9236923675
236	Saurabh	Katyayan	Antya	24.04.88	5'6"	MBA	Working	Lucknow	Arvind Mishra	Lucknow	9120110396
237	Saurabh	Bhardwaj	Madhya	07.12.82	6'	M.Com .	Govt Service	Kota	R.K.Shukla	Kota	9414938823
238	Saurabh	Bhardwaj	Aadi	01.06.84	5'6"	Diploma	VOLTAS	Kanpur	A.P.Shukla	Kanpur	9335121850
239	Saurabh	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'9"	B Com PGDCA	Civil		D Shukla	Raipur	9425205383
240	SAURABH	Gargeya	Antya	16.06.91	5'10"	B.Tech, MBA	MNC	Chennai	L.K Pandey	Allahbad	9424120637
241	Saurabh	Upmanyu	Aadi	27.08.88	5'7"	B.Tech, MBA	Asst. Manager	Lucknow	T.N Dwivedi	Lucknow	9936101701
242	Saurabh	Kashyap		18.12.93	6'3"	CA	Service	Kolkata	R K Tiwari	Kolkata	9391158015
243	Saurabh	Kashyap		03.12.7	5'9"	BBA MBA	Employe		S Tiwari	Nagpur	9822691624
244	Saurabh	Upmanyu		18.09.91	5'9"	BTech	MNC	Gurgaon	Mr Pandey	Jhansi	9718450069
245	Shakul	Kashyap	Aadi	26.08.91	5'6"	B Tech	Soft.. Engg.	Banglore	V Dubey	Oraiya	9058889841

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Sharad	Kashyap		26.10.85		Intermediate	Sales Officer	Kanpur	S P Tiwari	Kanpur	9628835452
247	Sharad	Bharadwaj		23.09.89		BSC MSC	Teacher	Kanpur	R K Shukla	Unnao	6306032247
248	Shashank	Bharadwaj		04.03.91	5'6''	B Tech	Infosys	Pune	S Pandey	Kanpur	9450135061
249	Shashank	Kashyap		15.07.85	6'1''	MBA	Business	Mumbai	S Tiwari	Mumbai	7021102524
250	Shashivendra	Bharadwaj		25.01.93	6''	B.Tech	Engg.	Auraiya	Shukla	Auraiya	9907450736
251	Sheel	Kashyap	Antya	28.12.78	5'8"	M.Sc, MBA	Lecturer	Lucknow	G.H.Awasthi	Lucknow	9415794589
252	Shikhar	Kashyap	Madhya	11.08.89		MBA	Own Biz.	Raipur	S Tiwari	Pune	7250011947
253	Shishir	Bharadwaj	Antya	20.08.88	5'8''	B Tech	Soft.. Engg.	Banglore	A Trivedi	Kanpur	9451548120
254	Shivam	Garg	Aadi	10.02.92	5'8''	MBA	Business	Raipur	A Shukla	Raipur	9644699000
255	Shivam	Bharadwaj	Madhya	20.06.95	5'9''	PGDCA MBA			J P Mishra	Bhopal	9300040414
256	Shivam	Shandilya		26.10.89	5'10''	BTech, MTech	HCL		A P Tiwari	Sultanpur	9956393655
257	Shivam	Bharadwaj	Antya	28.11.93	5'10''	B Tech	MNC	Ghaziabad	P K Shukla	Farrukhabad	8126956901
258	Shivankur	Sankrit		15.01.91	6'1''	LLM	Supereme Cou	New Delhi	A Shukla	Kanpur	9044001828
259	Shobhit	Sankrit		04.03.93	5'8"	B Tech	Automobile En	Banglore	V.P Mishra	Lucknow	9454835232
260	Shobhit	Kashyap	Manglik	09.07.93	5'8''	B Tech	Job	Gurgaon	H Tripathi	Kanpur	9653076145
261	Shousya	Bharadwaj	Aadi	03.07.91	5'7''	B Tech	Working	Banglore	U D Shukla	Lucknow	8787015430
262	Shreesh	Upmanyu	Antya	15.08.90	5'11''	MA	Working	Kanpur	A Bajpai	Kanpur	9794837727
263	Shrey	Sankrit	Madhya	23.12.82	5'9"	B Tech	TCS	Lucknow	S N Shukla	Lucknow	7846786559
264	Shreyansh	Kashyap		18.05.95	6''	B Tech MS	Soft.. Engg.		R K Tiwari	Kanpur	9044019998
265	Shubham	Vats	Madhya	13.02.88	5'10"	B.Tech	MNC	Ahmedabad	Anil Tiwari	Etawah	9415409967
266	Shubham	Bharadwaj	Antya	12.12.90	5'6''		HSBC	Pune	Shukla	Lakhimpur	9452513422
267	Shubham	Katayan		07.09.92	5'9''	B Tech	Working	MS Jermany	A K Mishra	Lucknow	9113694742
268	Shubhang	Upmanyu	Antya	17.06.91	5'9''	B Tech (IT)	Manager	Delhi	R Dwivedi	Kanpur	9450936845
269	Shubhendru	Upmanyu		09.11.86	6'	MS, PHD(USA)	Research Astt	Chicago	M.L.Trivedi	Pune	9096257755
270	Shubrat	Kashyap	Aadi	17.06.83	5'8"	M.Com,MBA	Genpact	Gurugram	Ravi Tripathi	Kanpur	7275508227
271	Shyam			26.03.92	5'7''	BSC LLB			V P Shukla	Hardoi	9935053581
272	Sidharth	Bhardwaj	Madhya	17.07.88	5'7"	B Tech	Working	Pune	R K Pandey	Kanpur	9415210728
273	Sidharth	Vatsa		23.06.90	5'11''	BSC IT	Business	Pratapgarh	R S Mishra	Mumbai	8097666881
274	Somesh	Gautam		09.07.90	5'8''	BE	Working		V Mishra	Mumbai	9819285494
275	Sonu	Bhardwaj	Aditya	11.11.85	5'7"	M Tech	Working	Noida	S K Pandey	Gwalior	9407015945
276	Sonu	Bhardwaj	Aadi	24.11.85	5'9"	M Tech	MNC	noida	S K Pandey	Gwalior	9407465886
277	Suchit	Sankrit		10.09.92	5'8''	B Tech	MNC	Mumbai	S C Shukla	Lucknow	9838073011
278	Suchitan	Upmanyu	Madhya	29.11.86	5'11"	MBA	Lecturer	Kanpur	S.N.Trivedi	Kanpur	9839300303
279	Sunil	Bhardwaj	Aadi	09.09.84	5'7''	MCA	Selt Occupied	Banglore	A Dubey	Kanpur	9739060321
280	Suryansh	Katayan	Madhya	26.12.91		B Tech	TCS	Mumbai	A K Mishra	Lucknow	9838792102
281	Sushant			26.11.85	6'1"	B.Sc.MBA	Working	Delhi	H.D.Chaubey	Rajgarh	9939484830
282	Suyash	Upmanyu	Antya	20.01.88	5'11"	B.Com.	Mktg. Executiv	Rajnandgaon	Sunil Bajpai	Kanpur	9301737555
283	Tanmay	Shandilya	Antya	24.12.89		MBA	Service	Nagpur	A Tiwari	Nagpur	9422505832
284	Tarun	Bharadwaj	Madhya	08.07.90	5'9''	B Tech	Soft.. Engg.	Banglore	V S Pandey	Kanpur	9455359080
285	Udayan	Shandilya	Madhya	22.11.86	5'5''	M.Sc MBA	Govt. Ltd	Gwalior	Y D Mishra	Gwalior	9826297917
286	Umang	Bharadwaj		07.06.88	6''	MS MBA	Working	USA	G Dwivedi	Indore	7024342778
287	Umang			24.09.92	5'8''		Tardeo		S Mishra	Mumbai	9967568651
288	Upendra	Upmanyu		13.09.93		Diploma			M K Dixit	Barabanki	9450389744
289	Utkarsh	Shandilya		22.02.88	5'11"	M.Tech.(BITS)	MNC	Banglore	P.K.Mishra	Kanpur	7275743955
290	Utkarsh	Katyayan	Antya	05.06.86	5'9"	MBA	Medical Biz	Lakhimpur	D.C.Misra	Lakhimpur	9451687980
291	Utkarsh	Dhananjya		01.03.89	5'9''	B Tech	E.Commerce co	Lucknow	P N Tiwari	Bareli	9839317538
292	Utkarsh			07.09.94			Cognizant	Banlore	Pandey	Lucknow	9450233168
293	Vaibhav	Garg	Madhya	16.06.91	6'1"	B.TECH	Bank(PO)	Merath	H.K Chaturvedi	Kanpur	9792877087
294	Vaibhav	Shandilya	Antya	04.06.90	5'6"	B.Com, MBA	AXIS Bank	New Delhi	V K Mishra	Pilibhit	9410626492
295	Vaibhav	Shandilya	Manglik	29.05.94	6''	B Com	Business	Lucknow	S K Mishra	Lucknow	7007709259

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
296	Vardan			19.09.95	5'11''	B Tech			A Dixit	Firozabad	9410445064
297	Varun raj	Kashyap		10.01.93	5'10''	B Tech	Bank Manager	UP	A Tripathi	Unnao	8318639985
298	Ved Vikas	Shandilya	Antya	05.03.91	5'8"	M.SC. B.ED	Teacher	Ahmedabad	A.K Dixit	Unnao	9913200388
299	Vibhor	Bhardwaj		27.11.92		B Tech	Asst. Engg.		Shukla	Lucknow	9794883336
300	Vijay	Kashyap	Madhyaa	01.01.91	5'4"	BSc (Maths), IT	Self Employed	Bhopal	Ajju Tiwari		7000069991
301	Vikaas	Bhardwaj	Antya	26.10.82	5'4"	MCA	S.W Engg	Noida	K.K.Bhardwaj	Kanpur	9793821021
302	Vikash	Upmanyu		10.10.82	5'10''	M COM	Private	Kanpur	V K Awasthi	Kanpur	6393239247
303	Vikrant	Vats	Antya	15.12.92	5'8''	B Tech MBA	Working	Banglore	Y Dubey	Kanpur	9450349526
304	Vimal	Kashyap	Aadi	10.01.88	5'7''	B.Tech.	Service	Pune	K Tiwari	Kanpur	9561478019
305	Vimal	Upmanyu	Antya	15.09.89	5'4''	Under Grad.	Pvt Job	Gurgaon	R Awasthi	Kanpur Dehat	9311718232
306	Vinay	Upmanyu		02.12.76	5'8"	MA. LLB	Govt Service	Burhanpur	Mrs Awasthi	Burhanpur	9165311846
307	Vinay	Upmanyu		08.11.89	5'8"	B Tech	Infosys	Hyderabad	K L Awasthi	Lucknow	9450458064
308	Vinod	-	-	15.02.82	5'9"	-	Business	Kanpur	S N Diwedi	Kanpur	7398163285
309	Vipin	Vashisht		05.10.88	5'11''	LLB MCOM	MNC	Delhi	Tiwari	New Delhi	9818865199
310	Vishal	Garg		27.12.87	5'10"	BCA MBA	MNC	Delhi	R.K.Shukla	Lucknow	9936977763
311	Vishal	Upmanyu		29.02.92	5'11'	B.SC	Indian Airforce	Hyderabad	G Bajpai	Kanpur	9889315397
312	Vishal	Shandilya	Antya	10.11.92	5,9"	M A	R Jio	Lucknow	S Mishra	Lucknow	9935832287
313	Vivek	Bhardwaj	Aadi	07.11.84	5'10"	B.Tech.,	S.W Engg	Delhi	R.C.Pandey	Kanpur	9450327506
314	Vivek	Kashyap		22.03.76	5'8"	B.Com	Service	Lucknow	S.K.Sharma	Lucknow	9450112576
315	Vivek	Kashyap		10.07.73	5'6"	MA	Service	Kanpur	H.S.Tiwari	Kanpur	9455753557
316	Vivek	Upmanyu		04.12.90	5'11"	MCA	Soft.. Engg.	Gurgaon	R S Tiwari	Kanpur	9839475032
317	Vivid	Shandilya	Antya	28.03.83	5'8''	M Tech	Soft.. Engg.	Banglore	A K Mishra	Etawah	9411867391
318	Yash	Bhardwaj		23.03.85	5'8''	B.Tech	Working	Delhi	P.Trivedi	Delhi	9868941052
319	Yash	Shandilya	Madhyaa	12.01.89	5'8	Graduate	Sales	Delhi	A Mishra	Delhi	9718166678
320	Yatindra	Bharadwaj	Divorcee	13.03.85	5'6''	Graduate	Sales		Y Shukla	Indore	9977547030
321	Yogendra	Bhardwaj	Antya	31.10.78	5'4"	B.A, L.L.B.	Office	Kanpur	Y.K.Pandey	Kanpur	9455373843
322	Yogesh	Kashyap	Aadi	26.12.89	5'3"	M.Com, LLB	Advocate	Philibhit	Mrs Pathak	Bithra	9759718916

यह वो जानकारी है जो हमें नाते-रिश्तेदारों, सगे-सम्बंधियों से व्यक्तिगत भेंट तथा पारिवारिक एवं मांगलिक समारोहों में स्वतः हो जाया करती थी। उन्हीं जानकारियों को हम अपने पाठकों से साझा कर रहे हैं। विस्तृत जानकारी स्वयम् प्राप्त करें, पत्रिका को उत्तरदायी न बनायें।

कृषि भारत की आत्मा है

- हमारे समस्त विचारों, आस्थाओं का सूत्र कहीं न कहीं कृषि से जुड़ता है।
- कृषि केवल आय का स्रोत ही नहीं थी, यह हमारे जीवन की समस्त गतिविधियों, परम्पराओं का अविभाज्य अंग थी।
- भारत के पर्व, उत्सव, त्योहार कृषि से जुड़े हुए मिलते हैं।
- खेत में बीज बोने से लेकर फसल के पकने-कटने तक हरेक अवस्था में अन्नदेवता की अभ्यर्थना की जाती रही है।
- होली की अग्नि में भी नवान्न की आहुति देकर ही ग्रहण करने की परम्परा है।
- कृषि कभी हमारी आत्मनिर्भरता का मुख्य अंग थी, जो अब समाप्त हो रही है।
- परम्परागत कृषि को विकसित करने के बदले कॉरपोरेट खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- ये सब ऐसा कुचक्र है जिससे हमारी मातृतुल्य जमीन और देवता समान किसान को भारी हानि हो रही है।
- विश्व व्यापार संगठन की नीति हमारी कृषि नीति के अनुकूल नहीं है। किसान आत्महत्या कर रहे हैं।
- रसायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।
- हम भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर अपनी खोई हुई सांस्कृतिक विरासत को प्राप्त करें, तभी कल्याण है।❑

जमीन-दीवारों पर गोबर लेप

गोबर थर्मल इन्सुलेटर है, इससे अंदर का तापमान अनुकूल रहता है। ये डिस्इन्फेक्टेड भी है। ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी का तो कहना है कि गोबर में एंटी-डिप्रेसेंट प्रॉपर्टीज भी हैं। जब तक कोई विदेशी 'ईको-फ्रेंडली' और 'सस्टेनेबल' जैसे लेबल न लगाये, हम पारम्परिक विद्या को नहीं अपनायेंगे, न ही उस दिशा में कोई रिसर्च करेंगे।❑

वैवाहिक विवरण

युवती वर्ग

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Aarti	Katyayan	Antya	22.10.86	5'2''	B.A	Working	New Delhi	S Mishra	New Delhi	9891444569
2	Aayusha	Upmanyu	Antya	01.02.91	5'3''	MBA			A Awasthi	Lucknow	8423771880
3	Aditi	Kaushik	Aadi	30.09.87	5'3''	M Tech	MNC	Pune	R K Chaturvedi		9406902511
4	Aditi	Bharadwaj	Antya	17.06.92	5'4''	B.Tech	MNC	Pune	S Pandey	Chandrapur	9822701972
5	Aditi	Kashyap	Aadi	27.02.94	5'2''	MBA	SBI	Gurgaon	D C Tripathi	Lucknow	9919594705
6	Akanksha	Kashyap	Madhya	29.10.83	5'4''	M. A	Service	Near Delhi	A Tripathi	Sitapur	9919114107
7	Akanksha	Bhardwaj	Antya	06.09.89	5'	M.COM ,B Ed			Rajesh Shukla	Yamuna Nagar	9729537603
8	Akanksha	Upmanyu		02.11.93	5'4''	Designing	Pursuing	Mumbai	A.P.Agnihotri	Jaipur	9829068476
9	Akanksha	Bhargava	Antya	26.10.92	5'5''	B.E.(IT)	IBM	Pune	Manish Vyas	Narsinghgarh	9039387942
10	Akanksha	Upmanu	Aadi	08.08.92	5'4''	M Pharma	Manager,	Jaipur	S Agnihotri	Rajasthan	8239811234
11	Akanksha	Katyayan		30.06.90	5'2''	PHD Math			R P Mishra	Kanpur	9935600160
12	Akanksha	Katyayan		16.03.92	5'6''	MSc, BEd	Working	Lucknow	H B Mishra	Lucknow	9450615550
13	Akankshi	Bharadwaj	Aadi	09.11.88	5'1''	MA, B.ED			S.C Shukla	Unnao	9415919896
14	Akansha	Bharadwaj		23.09.94		BE	Working	M P	Dr. M Pandey	Raipur	9424213854
15	Akansha	Bharadwaj		23.09.89	5'8''	B Tech	Working	Lucknow	D K Shukla	Lucknow	8127995885
16	Alka	Upmanyu		30.08.82	5'4''	M Sc	Officer		Bajpai	Unnao	9451183847
17	Amita			10.02.88	5'5''				R K Tiwari	Gwalior	9425824412
18	Amita	Kashyap		10.02.86	5'6''	BE, M Tech	Service	Gwalior	G Tiwari	Gwalior	9425138840
19	Amrita	Kashyap	Aadi	26.06.86	5'4''	MBA	INT. Designe	Delhi	H.K.Tripathi	Kanpur	9415740855
20	Anamika	Bhardwaj		16.01.89	5'2''	BCA	Pursuing LLB		H.N. Pandey	Delhi	9312000133
21	Anchal	Upmanyu		10.08.96	5'6''	B Tech	L&T	Mumbai	S Awashti	Kanpur	7985963062
22	Anjali	Upmanyu	Aadi	01.02.78	5'3''	MA, B ED	Teacher	Kanpur	Geeta Bajpai	Kanpur	9450337411
23	Anjali	Shandilya	Aadi	02.02.89	5'2''	MBA	MNC	Gurgaon	G C Dixit	New Delhi	9818812376
24	Anjusha	Kashyap		26.11.76	5'6''	MA , B Ed	Teacher	Lucknow	G N Awasthi	Lucknow	9415794589
25	Ankita	Katyayan	Madhy	18.08.88	5'4''	B.A.(GOLD)	Army Captai	Rajori	K.K.Mishra	Lucknow	9454523684
26	Ankita	Bhardwaj	Madhy	17.05.85	5'2''	M A , NTT			P S Shukla	Lucknow	9451247895
27	Ankita	Upmanyu	Madhy	28.05.90	5'2''	B.Tech	Working	Lucknow	Rakesh Bajpai	Lucknow	9451533833
28	Ankita	Gautam	Antya	20.04.88	5'&8.5''	M Tech	S W Engg	Hydrabad	S Mishra	Allahabad	9335932948
29	Ankita			01.05.86	5'5''	MA, MED			S S Tripathi	Kanpur	9450329077
30	Ankita	Bharadwaj		09.11.94	5'6''	MCom B ED			J D Shukla	Lucknow	9452629648
31	Annpurna	Bharadwaj		10.12.92	5'3''	BA MA	Govt.	Kanpur	R K Shukla	Unnao	6306032247
32	Anubhuti	Upmanyu		28.03.90	5'6''	B.TECH, LLB			Mr Agnihotri	Lucknow	9454382089
33	Anuja	Bharadwaj	Aadi	17.11.87	5'2''		Asst. Pro.	Indore	R K Sharma	Indore	9425097567
34	Anupama	Kashyap		02.03.94	5'4''	Graduate			S K Pandey	New Delhi	9810793525
35	Anushka	Shandilya		02.10.88	5'5''	MBA BBA	Business	Delhi	S M Tripathi	Delhi	9810295454
36	Aparajita	Bhardwaj	Aadi	24.12.88	5'2''	B Tech	S/w Engg	Pune	R K Pandey	Bhopal	9691999321
37	Apoorva	Bharadwaj	Aadi	13.12.91	5'5”	B.Tech			C.K.Shukla	DURG	9827113544
38	Aradhika	Shandilya		05.01.85	5'3''	BA	SBI(P.O)	Shahjahanpur	P.D Dixit	Lucknow	9807477078
39	Archana	Bharadwaj	Madhya	26.10.87	5'3''	BA B Ed			M Shukla	Hardoi	8932007700
40	Arima	Katyayan	Manglik	10.10.92	5'4''	LLM (NLU)	Asstt. Proff.	Jabalpur	Pankaj Mishra	Lucknow	9307424975
41	Arpita	Bharadwaj	Aadi	23.09.91	5'4''	BCA,M Tech	Wipro	Banglore	R K Shukla	Kanpur	9450455278
42	Arti	Sabaran	Madhya	11.12.87	5'5''	M Ed PhD	Proff.	Indore	J Pandey	Indore	9303536152
43	Ashta	Bharadwaj		01.10.91	4'11'	MBA IIM	MNC	Celifornia	A K Pandey	Kanpur	9415733447
44	Ayushi	Kashyap	Aadi	26.10.93	5'2''	MA			K K Tripathi	Kanpur	9452970165
45	Barkha	Kashyap	Antya	17.09.84	5'5''	BA	Working	Delhi	Mohit Tiwari	Delhi	9211232373

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Bharat	Bharadwaj	Madhya	27.12.93	5'9"	M Tech IIT	Engineer	Chennai	D M Shukla	Lucknow	9415472155
47	Bhumica	Katayan	Madhya	15.01.91	5'3"	B Tech	Sofft. Engg.		S K Mishra	Kanpur	9648816293
48	Chandni	Upmanyu	Antya	28.05.92	5'7"	B Arch	working	Mumbai	A Pathak		9422834135
49	Charitra	Katyayan	Aadi	02.08.89	5'2"	MA B.Ed.	Teaching	Hardoi	S Mishra	Hardoi	8081357385
50	Charu	Upmanyu		16.07.84	5'3"	B SC BEd	Business		B S Dubey	Gujrat	9427220432
51	Charu	Upmanyu	Aadi	20.10.91	5'3"	MBA	MNC	Pune	R K Bajpai	Kanpur	9839107953
52	Deepika	Upmanyu		24.10.86	5'3"	M.SC.PHD	Post Doctora	USA	S.C.Awasthi	Kanpur	9451425376
53	Deepika	Bharadwaj		18.07.84	5'1"	PGDCA MCA	Asst. Compu	Indore	R Pandey	Indore	9826048929
54	Deepika	Kashyap	Aadi	31.05.89	5'2"				C M Tiwari	Barabanki	7376767334
55	Devahuti	Shandilya		09.05.82	5'3"	B.A.,Journalism			D.D.Mishra	Kanpur	9621488942
56	Diksha	Kashyap		07.10.90	5'7"	M Tech	Consultant	New Delhi	C K Tiwari	Lucknow	9839016961
57	Divya	Kashyap	Antya	23.02.86	5'2"	B.TECH.	Working	Canada	R.P.Tiwari	Kanpur	9451287700
58	Divya	Bharadwaj	Aadi	12.02.95	5'2"	B.Sc, ITI	LMRC	Lucknow	Rajesh Tiwari	Jhansi	9451131195
59	Divya	Sandilya		12.01.94	5'3"	BTC , B Ed		Etawah	G Dixit	Etawah	9627549800
60	Divyanshi			25.07.90		BHMS			S Tiwari	Raibareli	9450572655
61	Dr Jyoti	Bhardwaj	Aadi	21.11.85	5'1"	MSc	Research Off	Patna	P Mishra	Patna	9934296441
62	Dr. Nidhi	Shandilya		23.04.90	5'7"	MBBS			G K Dixit	Gwalior	9425338155
63	Dr. Ragini	Bharadwaj	Antya	10.02.88	5'4"	BHMS	Self		G Shukla	Kanpur	9839105203
64	Garima	Shandilya		10.09.89	5'3"	M.COM, MBA			R.S Mishra	Kanpur	9918475086
65	Garima	Bhardwaj		01.10.83	5'4"	MBA	Working	Lucknow	K.K.Pandey	Kanpur	9336998383
66	Garima	Katyayan		15.01.85	5'2"	B E	SAP	Pune	C S Mishra	Khandwa M.P.	9425928788
67	Garima	Kashyap		08.11.79	5'3"	MA, BEd			S.K. Tripathi	Bareilly	9897049336
68	Garima	Upmanyu	Antya	12.12.88	5'5"	MBA	MNC	Gurugram	A.K Dixit	Lucknow	9451975400
69	Garima			06.06.88	5'6"	BE	Sofft. Engg.		S K Tiwari	Chhatarpur	9770650098
70	Geetanjali	Katyayan		15.07.75	5'2"	MA			S.K Mishra	Lucknow	9415003476
71	Harshita	Bharadwaj		16.09.94	5'5"	MSC PRI.	Bank	Bihar	S Shukla	Kanpur	9005095193
72	Hemalata	Katayan	Aadi	23.07.79	5"	MBA	Working	Banglore	R Mishra	Unnav	9848759749
73	Hemapriya	Shandilya	Madhy	05.05.89	5'3"	BA,LLM	Central govt.	Mumbai	G.K.Mishra	Lucknow	9412554697
74	Himani	Upmanyu		23.12.95	5'3"	M Tech	MNC	Banglore	M Agnihotri	Lakhimpur	8447972905
75	Indu	Katyayan	Madhy	20.04.88	5'3"	PG	Asstt Mngr.	Lucknow	L.M.Mishra	Lucknow	9335915813
76	Ira	Kashyap	Madhy	25.09.89	5'5"	BTECH, MS	Engineer	California	Dr. M Tiwari	Kanpur	8130144400
77	Isha	Upmanyu	Madhya	20.01.94	5'3"	B Tech	Govt.		N G Awasthi	Lucknow	8419001166
78	Itisha	Kashyap	Antya	17.01.83	5'2"	Diploma	Jewel Design		R.N.Tripathi	Lucknow	9453437464
79	Jaahnavee	Katyayan		18.03.93	5'	B.SC.			Ai Mishra	Kanpur	9451013644
80	Jaya	Katyayan	Antya	24.07.89	5'3"	M Tech	MNC	Bangalore	A Mishra	Kanpur	9450635424
81	Jayanti	Bharadwaj		31.08.93	5'4"	HSC			S Trivedi	Gorakhpur	9930110239
82	Kalyani	Bharadwaj		27.09.92		B Sc, B Ed			S Dubey	Narsinghpur	9301286706
83	Kalyani	Savarna		22.07.94	5'5"	BAMS	Doctor	Nagpur	Jitendra Pandey	Wardha	9370050477
84	Kanak	Upmanyu	Divorcee	08.06.87		MA	Teaching	Bahraich	A Awasthi	Bahraich	9140487985
85	Kanchan	Bharadwaj	Antya	29.07.82	5'5"	BA			C.P Shukla	Lucknow	9793027166
86	Kanchan	Upmanyu		28.05.92	5'1"	MA	Teacher	Bahraich	A Awasthi	Bahraich	9140487985
87	Kanchan	Kilawat		14.11.92	5'2"	MCA	Service		V Vaishnav	Bhopal	9165903000
88	Kanchan	Shandilya	Antya	02.05.90	5'4"	MCA			S Dixit	Pune	7300636411
89	Karishma	Kashyap		29.12.94	5'4"	BSC			V K Dubey	Gurgaon	9729033666
90	Kavita	Upmanyu		24.06.87	5'6"	M.C.A MNIT	Soft. Engg.	Delhi	R.K.Awashti	Kanpur	9936213811
91	Keerti	Bhardwaj		18.11.89	5'6"	M.SC.PHD.	Fellowship	Australia	K.N.Pandey	New Delhi	9971530438
92	Kritika	Kashyap		27.07.92	5'6"	M.Tech			Arun Tiwari	Banda	9453283648
93	Krtika	Shandilya	Aadi	09.09.87	5'5"	B.SC.MBA	SBI	Kanpur	M Mishra	Kanpur	9695666443
94	Madhu	Upmanyu	Madhya	02.09.89	5'2"	BE	S/W Engg.	Bangalore	R B Pathak	Ballia	9774009524
95	Madhulika	Kashyap		03.08.80	5'1"	B Ed , TET			Mrs Dixit	Lucknow	9455508981

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Malini	Upmanyu		01.04.77	5'2"	M.SC.,MED,PHD	Teacher		C.P.Awasthi	Lucknow	9452133470
97	Mandvi	Katyayan		13.12.95	5'1"	B Com, MBA	Pursuing	Kanpur	G S Mishra	Kanpur	9839206130
98	Mani	Bharadwaj		14.09.89	5'3"	MA, B.ED			R.K Pandey	Allahabad	9415612663
99	Medha	Vashisht	Antya	06.06.90	5'3"	MBA (ISB)	Amazon	Noida	R K Dubey	Varanasi	9415354718
100	Meenakshi	Shandilya	Madhya	01.08.92	5"	PG	Sofft. Engg.		S K Dixit	Chandigarh	8837733436
101	Meenakshi	Shandilya		02.12.98	5'2"	BCA MCA	Persuing		D N Dixit	Kanpur	8932007700
102	Meenu	Katyayan	Antya	14.08.82	5'3"	M.SC.B.ED.			A.K.Mishra	Jhansi	9452919509
103	Megha	Upmanyu		01.07.94	5'3"	MA	Teaching	Kanpur	R Awasthi	Kanpur	9311718232
104	Moni	Katyayan		19.10.90	5'3"	M COM	Asstt.Mngr		U C Mishra	Lucknow	8303285154
105	Monika	Kashyap	Madhya	15.08.85	5'3"	B.Tech	Fash. Design	Delhi	G Tiwari	Udaipur	9414238854
106	Naina	Bharadwaj		29.04.90	5'3"	MBA	Yes Bank	Mumbai	R.S Pandey	Lucknow	9044326357
107	Namita	Bhardwaj		16.06.80	5'3"	M.A.	INT. Designer		S.P.Shukla	Lucknow	9415424508
108	Namita	Bharadwaj		07.11.91	5'2"	M Com	Working	Lucknow	A Shukla	Lucknow	9451380909
109	Namrta	Upmanyu	Aadi	11.01.81	5'6"	M.A.,Music			P Dubey	Kanpur	9839443316
110	Natasha	Bhardwaj		28.07.84	5'4"	BE	MNC	Pune	D K Shukla	Kota	9414189670
111	Neha	Upmanyu		01.12.90	5'4"	B COM			V Pathak	Kanpur	9962003310
112	Neha	Bharadwaj		03.08.89	5'2"	MBA	Officer	Lucknow	P N Chaubey	Ballia	9026912219
113	Neha	Upmanyu		30.11.86	5'5"	MSC	Teacher		D Bajpai	Ganga nagar	8104531078
114	Neha			19.11.90	5'3"	MBA	Working	Ghaziabad	Y Tripathi	Ghaziabad	9582924023
115	Neha	Bharadwaj		05.05.87	5'2"	B ED			L Pandey	Unnao	7376707203
116	Nidhi	Upmanyu		15.11.83	5'4"	M.A.(MUSIC)	Teacher		V.D.Awasthi	Lucknow	9415172212
117	Nidhi	Shandilya	Antya	19.02.79	5'2"	MA NIT			A Mishra	Allahabad	8318600210
118	Nidhi	Katayan	Antya	02.09.86	5'3"	Bizz.Eng. USA	Manager,	Hydrabad	R Mishra	Hyderabad	9000933436
119	Niharika	Upmanyu	Aadi	26.07.95	5'4"	Bcom, MA		Harda	Meena Dubey		9893228150
120	Niharika	Bharadwaj		19.07.98	5'3"	B COM			H Trrivedi	Raibareli	8669069637
121	Nikita	Kashyap		21.10.90	5'3"	BBE,MBA	IBM	Gurugram	S.S. Tiwari	Delhi	9899723609
122	Nikita	Kashyap		21.10.90	5'3"	BBE,MBA	IBM	Gurugram	S.S. Tiwari	Delhi	9899723609
123	Nikita	Shandilya	Antya	25.04.94	5'5"	B.Tech	Saft.Eng.	Bangalore	P Mishra	Lucknow	6394743035
124	Nikita	Shandilya		28.11.91	5'2"	MBA(IILM)	Bank	Noida	R C Mishra	Lucknow	9208831728
125	Nitya	Upmanyu		27.08.90		B.ED MBA	Asst. Prof.		J L Bajpai		9454217864
126	Palak	Kashyap	Madhya	01.06.82	5"	MBA		Nairobi	Mrs Tiwari	Ahmedabad	7733803200
127	Palak	Katayan	Antya	25.03.96	5'2"	BFA			K C Mishra	Banda	9752448579
128	Pallav	Sankrit	Aadi	21.01.87	5"	M Tech. PhD	Service	New Delhi	S Shukla	Delhi	9811484078
129	Pallavee	Kashyap		08.03.85	5'3"	BSC, B.ED	Teacher	Lucknow	Prashant Mishra	Lucknow	9415466226
130	Pallavee	Sankrit		21.01.87	5'	M.TECH.(IIT) PhD			S Shukla	Delhi	9811483078
131	Priyam	Upmanyu		20.07.88	5'3"	MBA	MNC	Pune	A.K.Awasthi	Kanpur	8604956305
132	Pinki	Upmanyu		09.07.91	5'5"	LLM	Court	Bhopal	R Dubey	Bhopal	9993183802
133	Pooja		Katyayan	20.09.93	5'1"	MCA	S W Engg	Pune	Ram Mishra	Kanpur	9454771886
134	Poornima	Upmanyu	Antya	12.08.80	5'5"	MCA	S.W ENGG.	Bengaluru	S Awashti	Kanpur	9450125877
135	Prachi	Shandilya	Aadi	20.05.88	5'3"	MCA			A Mishra	Delhi	9311601401
136	Prachi	Kashyap		01.06.85	5'5"	B.TECH.(IIT)	SBI(P.O)	Lucknow	Deepti Dixit	Lucknow	9838610666
137	Prachi	Kashyap	Madhya	09.12.93	5'3"	M.SC	Manager		O P Tiwari	Sagar M P	9425643911
138	Prachi	Upmanyu		15.11.89	5'2"	MBA	Working	Kanpur	Sandhya Awasthi	Kanpur	9935473190
139	Pragati	Upmanyu		07.01.87	5'4"	MBA	MNC	Noida	D.S.Bajpai	Lucknow	9454644228
140	Pragati	Shandilya	-	24.06.92	5.3'	M Tech	-	-	Dr. V.P. Dixit	Allahabad	9415283021
141	Pragya	Kashyap		30.07.90	5'6"	MA, BEd	Teacher	Urai	R.K. Dixit	Urai	9453554259
142	Pramita	Katyayan		29.06.81	5'1"	PhD,MPHIL	Working	Delhi	P.N.Mishra	Delhi	9013201099
143	Pratiti	Upmanyu	Antya	10.12.91	5'4"	B Tech	Accenture	Noida	Sunit trivedi	Lucknow	9415546277
144	Preeti	Kashyap	Aadi	22.12.90	5'5"	MBA	Working	Mumbai	Avinash Tripathi	Mumbai	9320981363
145	Preeti	Shandilya	Madhya	15.08.94	5'3"	MSc Bed.			D N Dixit	Kanpur	8932007700

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Preeti	Shandilya		21.03.93	5'7''	B Tech			O Dixit	Fatehpur	7011596828
147	Preeti	Kaushik		29.12.86	5''	Graduation	Assit.		K Pathak	Mumbai	9773008704
148	Priya	Bharadwaj	Madhya	02.02.89	5' 7''		Vet. Surgon	Gwalior	Rajeev Shukla	Gwalior	9926292469
149	Priyanka	Bharadwaj	Madhy	17.11.94	5'5"	B.COM,BTC			D.D Shukla	Unnao	9451149985
150	Priyanka	Bhardwaj		16.08.88	5'2"	BDS	MBBS		A.K.Pandey	Jaipur	9829094797
151	Priyanka	Bhardwaj		27.09.87	5'4"	B.TECH.MBA	TCS	Mumbai	A. Shukla	Kanpur	9935590475
152	Priyanka	Upmanyu	Aadi	15.10.82	5'4"	B.COM.MBA	Working	Noida	J.N.Bajpai	Kanpur	8978480521
153	Priyanka			29.08.84	5'4"	B.SC,MBA			Shri.Pandey		9838959360
154	Priyanka	Kashyap		05.11.81	5'8"	BDS	Working	Kanpur	Rajesh Tiwari	Kanpur	9839163346
155	Priyanka	Upmanyu	Antya	22.03.88	5'4"	MCA	S.W ENGG.	Noida	M Agnihotri	Kanpur	8052408397
156	Priyanka	Vats	Antya	02.01.89	5'5"	BE, MBA	MNC	Mumbai	Ravi Tiwari	Raipur	9425207900
157	Priyanka	Bharadwaj	Madhy	20.11.85	5'8"	MA	Teacher	Unnao	Manju Trivedi	Unnao	9807314054
158	Priyanka			25.10.89	5'5''	B Sc	SUB Inspector		S K Chatirvedi	Lucknow	7392944285
159	Priyanshi	Upmanyu		30.07.91	5'2''	BE IT			R K Bajpai	Mumbai	9969465149
160	Priyuttama	Katyayan	Madhy	12.05.88	5'4"	B.ED.PHD.			K Mishra	Lakhimpur	9452040268
161	Pushpanjali	Bharadwaj	Aadi	12.05.92	5'2"	B.Tech, BTC	BTC Trng	jhansi	Rajesh Tiwari	Jhansi	9451131195
162	Pushpika	Katyayan	Aadi	20.09.90	5'1"	MCA	Wipro	Pune	R P Mishra	Kanpur	7703091096
163	Raashi	Shandilya	Madhy	10.09.79	5'3"	M.SC.	Asstt Prof.	Lucknow	Asha Mishra	Lucknow	9412554697
164	Rachana			15.01.81	5'	MBA	JP CEMENT	Noida	R.S.Mishra	Kanpur	9935349163
165	Rajni	Upmanyu	Antya	14.07.92	5''	M Tech		No	Mrs D Pathak	Farrukhabad	9999667148
166	Rajni	Upmanyu		15.07.92	5'	M Tech	Pursuing	Delhi	A Pathak	Delhi	9811131680
167	Rashmi	Vats	Madhy	12.08.87	5'1"	CS, LLB	Practice	Noida	Rajesh Tiwari	Delhi	9910507601
168	Rashmi	Upmanyu	Antya	12.06.90	5'4"	B.COM, MBA	MNC	Lucknow	R.K.Awashti	Lucknow	9457203523
169	Rashmi	Upmanyu	Madhya	25.09.76	5'2	BSC, PGDCA			T R Pathak	Jabalpur	9754346532
170	Rashmi	Sankrit		30.07.86	5'4"	B Sc MBA	MNC	Noida	Mrs Mishra	Kanpur	7752946783
171	Rashmi	Bhardwaj	Madhya	14.08.86	5'2''	BA	Teaching	Saharanpur	M Shukla	Saharanpur	9456272806
172	Ratna	Kashyap	Aadi	06.08.87	5.5'	BSC (BIO)	-	-	R K Mishra	Lucknow	9450672302
173	Reema	Upmanyu		30.11.94	5'3"	B.Com	MBA		Mrs Awasthi	Hyderabad	7093757018
174	Reena	Upmanyu		01.07.83	5'6''	MA NTT	Teaching	Jhansi	R Bajpai		7275586913
175	Renu	Bhardwaj	Aadi	10.08.81	5'6"	B.A.NTT	Teacher	Jhansi	Aruna Shukla	Jhansi	9450978618
176	Richa	Bhardwaj	Madhy	20.12.84	5'2''	B Ed, TET			Mrs Shukla	Hardoi	9026399895
177	Richa	Upmanyu	Madhy	06.04.85	5'7"	M.Com, MBA			R.L Dwivedi	Lucknow	9919127170
178	Richa	Kashyap	Madhya	03.07.85	5'3"	M.Sc (BHU)	HSBC	Sydney	S K Tripathi	Unnao	8299676613
179	Richa	Shandilya	Antya	23.11.92	5'1''	M COM	Hotel	Lucknow	J D Dixit	Lucknow	8874684774
180	Richa	Katayan		03.08.93	5'6''	B Tech	Analyst		L Mishra	Unnao	8097000378
181	Rinki	Katyayan		17.12.90	5'6''	BCA	Bank	Hydrabad	Y K Pathak	Hydrabad	9826638200
182	Ritambhara	Bhardwaj	Aadi	28.03.90	5'3"	MBBS	MD	Kanpur	D.S.Shhukla	Kanpur	9358352758
183	Ritika	Bhardwaj		14.01.91	5'5''	B Tech	Sofft. Engg.	Delhi	V K Chaturvedi	Kanpur	7905040001
184	Ritu	Sankrit		02.02.92	5'3''	MA			J Shukla		8120039083
185	Ruby	Shandilya	Antya	20.03.84	5'5"	B.TECH.	Working	Noida	R.C.Dixit	Kanpur	9369019377
186	Ruchi	Kashyap		01.10.96	5'3''	BA MA	Pursuing		M Tiwari	New Delhi	9711473367
187	Ruchi	Sankrit	Aadi	27.09.86	5'5"	B Com M A	Private	Kanpur	H Shukla	Kanpur	9839955748
188	Ruchi	Upmanyu		10.07.93	5'8''	MSC	Police		V Bajpai	Lucknow	9451968094
189	Ruchi			10.07.93	5'4''	MSc	UP Police	Kanpur	V K Bajpai	Kanpur	9451968094
190	Ruchita	Upmanyu		28.07.88	5'3''	M Tech	Asst. Mngr	Meerut	H Bajpai		9140821670
191	Sachi	Bhardwaj	Antya	12.02.91	5'4"	B.Com, CA	CA Final Yr.	Lucknow	Naveen Shukla	Bareilly	9415966739
192	Sakshi	Shandilya	Madhy	27.03.89	5'2"	MCA	Govt Job	Lucknow	S.N.Dixit	Lucknow	8765677207
193	Sakshi	Kashyap	Aadi	04.06.98	5'3''	M Com			M Tiwari	Kanpur	9450828214
194	Samvedana	Upmanyu	Aadi	17.03.87	5'8"	B.Tech, MBA	Working	California	R.N Agnihotri	Jaipur	7355619597
195	Sandhya	Vashishta	Antya	29.11.86		IITC	Designer		S Pandey	Bihar	8779651427

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Sanjana	Upmanyu		09.01.96	5''	BA MA	HR		S Awasthi	Mumbai	9769630720
197	Saroj	Upmanyu	Madhy	20.10.89	5'9"	MA	Reacher	Ghatkopar	Indira Trivedi	Raebareilly	9167644809
198	Sashi	Katyayan	Madhya	30.12.84	5'3"	B.Sc PGDCA,	Hospital	Nasik	A Mishra	Sitapur	7972186431
199	Saumya	Bharadwaj	Aadi	22.05.87	5'3"	MBA	Bank PO	Lucknow	M Shukla	Lucknow	9161099365
200	Saumya	Katyayan	Aadi	07.01.91	5'4"	BSC			K.K Mishra	Lucknow	7905134117
201	Saumya	Upmanyu		20.04.95	5''	B COM	Working	Noida	R Bajpai	New Delhi	9312832371
202	Saumya	Upmanyu		23.08.95		MBA	Govt.		N Dixit	Barabanki	9450389744
203	Savita	Upmanyu	Antya	22.08.86	5'	BSC, ADCA	Teacher	Telibagh	Pankaj Dwivedi	Lucknow	9455871884
204	Seema	Garg		01.01.85	5'5"	MA			S K Shukla	Amethi	8318122833
205	Shalini	Shandilya		01.09.82	5'4"	Ph D.	Working	Lucknow	Mishra	Lucknow	9415562096
206	Shalini	Bharadwaj	Madhya	27.06.91	5'4"	MA			S C Shukla	Kanpur	9936863330
207	Sheenu	Bharadwaj	Madhya	09.07.84	5'2"	MBA			V K Shukla	Kanpur	7275904560
208	Sheetal	Bharadwaj		30.06.93	5'2"	B Tech B Ed			R P Shukla	Lucknow	9839054358
209	Shikha	Bharadwaj	Madhya	05.02.92	5'8"	BCom MBA	Working	Pune	R Tiwari	Amravati	9766219316
210	Shikha	Garg		27.09.87	5'4"	MA	UP Govt.	Lucknow	R Sharma	Lucknow	9651210977
211	Shikkha	Upmanyu		04.11.89		B COM	Working		R Bajpai	Mumbai	8976016772
212	Shilpi			29.09.93	5'5"	B COM	Working		A Dubey	Delhi	9350102245
213	Shilpi	Upmanyu		20.09.93	5'3"	B COM	Working		A K Dubey	Delhi	9350102245
214	Shivangi	Katyayan	Antya	26.01.90	5'2"	B.A. , M.A	Civil	NO	B Mishra	Farukhbad	9452261234
215	Shivangi	sankrit	madhya	23.05.89	5'3"	MBA	Working	kanpur	R K Dixit	lucknow	9927699931
216	Shivani	Bharadwaj	Madhya	29.06.91	5'4"	MBA	HR Exec.	Gurgaon	R N Pandey	Lucknow	9452841545
217	Shivani	Vashishta		03.12.95	5'3"	B A	Working	Jaunpur	H S Mishra	Kolkata	8013315477
218	Shraddha	Upmanyu	Aadi	13.05.86	5'5"	B Tech	MNC	Coimbatore	S Trivedi	Telangana	8121717563
219	Shradheya	Kashyap	Antya	14.07.91	6'2"	BE IT	Sofft. Engg.	Pune	S Tiwari	Indore	9425055750
220	Shreyasi	Shandilya	Madhy	26.10.94	5'6"	B.Tech	Engineer	Mumbai	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
221	Shrushti			08.10.85		BA MBA	Asst. Prof.	Kanpur	V Bajpai	Kanpur	8187923891
222	Shruti	Upmanyu	Aadi	10.06.88	5'7"	B.SC.MBA	Working	Hyderabad	S.K.Trivedi	Hyderabad	8121717563
223	Shruti	Katyayan		09.12.78	5'3"	B.COM,CA.	Working	Mumbai	A.K.Mishra	Lucknow	9336506078
224	Shruti	Upmanyu	Aadi	30.06.90	5'4"	M Tech	Asst. Prof.	Delhi	Dr. M Awasthi	Etawah	9810323466
225	Shruti		Aadi	03.10.86	5'3"	MTech.			Dwivedi	Kanpur	9236819199
226	Shubha	Katyayan		27.10.91	5'3"	B Tech	HCL	Lucknow	R K Mishra	Lucknow	9450672302
227	Shubhangi	Vatsa		11.11.90	5'3"	Graduate			S K Pandey	Delhi	9899107520
228	Shubhee	Kashyap		23.06.86	5'3"	DIP. Elect,	Working	Delhi	D.K.Dubey	Delhi	9582628003
229	Shveksha	Sankrit		25.01.86	5'4"	BTC	Teacher	Etawa	D.K.Dixit	Etawah	9410487189
230	Shweta	Upmanyu	Antya	30.11.86	5'3"	B.SC.	Web Designer		B.N.Bajpai	Kanpur	9450325085
231	Shweta	Upmanyu	Antya	25.08.86	5'	B H M S	Doctor	Kanpur	A K Awasthi	Kanpur	9532098695
232	Shweta	Bharadwaj		03.04.89	5'3"	MBA	Working	Etah	S Pandey	Mainpuri	7520323248
233	Shweta	Kashyap		12.05.87	5'5"	MS(USA)	Biz Analyst	USA	S Tiwari	Hyderabad	9293765791
234	Shweta	Vashisht		06.04.88	5'3"	B.COM, MBA	Teacher	Kanpur	O.K. Sharma	Kanpur	9889736208
235	Shweta	Bharadwaj	Madhya	09.05.86	5'1"	B Sc, B Ed			Geeta Dixit	Gwalior	9406581038
236	Shweta	Kashyap		28.04.92	5'9"	MBBS, MD	Doctor	Mumbai	Rakesh Tripathi	Mumbai	9821722116
237	Smriti	Katyayan		18.07.94	5'3"	B COM, CS	CS	Kolkata	H K Mishra	Kolkata	9830010478
238	Smruti	Upmanyu	Madhya	04.10.93	5'4"	M SC			S Dubey	Amrawati	9172477214
239	Sonal	Gautam		10.12.81	5'5"	M.A.MBA.			B.D.Malwiy	Kanpur	9451845631
240	Sonal	Upmanyu		04.05.90	5'3"	B Tech	Accenture	Bangalore	R K Bajpai	Kanpur	9415477656
241	Sonali	Bhardwaj	Aadi	04.02.86	5'5"	B.TECH.	S.W ENGG.	Hyderabad	A.N.Pandey	Kanpur	9415483587
242	Sonali	Bharadwaj		30.08.93	5'7"	MBA			S D Shukla	Kanpur	7007417138
243	Sonali	Upmanyu		15.11.91	5'4"	BTech	MNC	Gurgaon	Shailja Pathak	Delhi	8383087802
244	Sonam	Bharadwaj		30.08.88	5'6"	M CA	Sofft. Engg.	Banglore	L Shukla	Kanpur	9621781155
245	Sonika			08.01.90		B Tech	MNC	Pune	J K Trivedi	Faridabad	9910926389

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Soumya	Katyayan	Madhya	24.06.90	5'4''	BCA MS	MNC	Hyderabad	G D Mishra	Kanpur	9452496423
247	Soumya	Katyayan		24.07.90	5'2''	M A			R K Mishra	Lucknow	7905134117
248	Soumya	Shandilya		26.03.88	5'2''	BSc,MCA	Sofft. Engg.	Banglore	S K Mishra	Bhopal	9415166113
249	Sreshtha	Shandilya		27.01.89	5'6''	M Com BEd	Working	Banglore	S K Tiwari	Kolkata	9088937393
250	Srishti	Upmanyu	Madhya	11.04.92	5'6"	B. Arch	Manager	Mumbai	Vijay Bajpai	Nagpur	9422140541
251	Srishti			06.01.90	5'4''	M Tech	Working	Gurgaon	R K Chaubey	Balia	9455669933
252	Stuti	Kashyap	Antya	19.11.89	5'	B.Tech	PSU Bank	Lucknow	Amal Dixit	Lucknow	7052969469
253	Stuti	Garg	Madhya	15.06.91	5'4"	MBA	Oyo	Gurgaon	A K Chaturvedi	Kanpur	9415478711
254	Stuti	Bhardwaj		11.09.90	5''	M Sc			P Dixit	Kanpur	9389195060
255	Suchita	Bhardwaj		02.05.91	5'5''	B Tech MBA	MNC	Bangalore	S C Shukla	Kanpur	9868590585
256	Suchita	Upmanyu	Manglik	10.12.88	5'2"	MSc	Sr Research	Mumbai	V K Awasthi	Kanpur	9.7719E+10
257	Sukriti	Sankrit		07.01.91	5'1''	BA MA	TATA	Mumbai	S C Shukla	Lucknow	9838073011
258	Surbhi	Kashyap	Aadi	29.08.90	5'4"	BDS, MPh.	Associate	Puducherry	Sudha Dixit	Ujjain	9826816266
259	Swapna	Shandilya	Madhy	02.12.89	5'2"	MBA			P.D.Dixit	Indore	9425152103
260	Swarna	Upmanyu		04.06.91	5'3''	BA	MNC	Banglore	B M Trivedi	Unnao	7974084170
261	Swarnim	Upmanyu	Madhya	27.07.92	5'6"	B.B.A, MBA	Working	All over India	P Bajpai	Kanpur	9889613890
262	Swati	Bhardwaj		20.06.89	5'6"	MA.M.PHIL	Studying		A.C.Shukla	Kanpur	9415428625
263	Swati	Shandilya	Antya	1.1.86	5'4"	B.SC.MBA	MNC	Bengaluru	B.L.Mishra	Bhopal	9826277688
264	Swati	Vashisht		28.03.91	5'2''	B Tech	Asst. Mngr	Noida	Sharma	Noida	9873714437
265	Trapti	Shandilya	Madhya	14.10.91	5'5''	M Sc			R Mishra	Etawah	7906674400
266	Utsah	Vats	Aadi	07.02.94	5'5"	MBA	Amazon	Pune	Umesh Mishra	Indore	7898678483
267	Vandana		Aadi	03.11.83	5'3"	MA, BEd	Principal	Ghaziabad	D Mishra	Delhi	9268332289
268	Vartika	Upmanyu	Antya	13.12.90	5'2"	MBA	Working	Lucknow	S Dubey	Lucknow	9335907020
269	Vasundhara	Bhardwaj		10.10.91	5'7''	MBA	HR Manager	Delhi	B P Shukla	Delhi	7869114109
270	Vasvi			13.10.93	5'1''	BSC	Working	Raipur	V K Mishra	Jabalpur	8269671144
271	Yamini	Bhardwaj	-	01.11.95	5'	MBA	Working	Kanpur	S K Pandey	Kanpur	9451283887

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

शतायुर्वै पुरुषः

मनुष्य की आयु 100 वर्ष होती है, जब मौत हमें अपने समय से एक पल भी उधार नहीं देती तो हम मौत को अपने जीवन से एक भी क्षण उधार क्यों दें? अथर्ववेद19-7-6-1 में ऋषि की कामना है कि 'मेरी वाणी बनीं रहे मेरे नयनों में प्राण संचार होता रहे, आँखों में देखने की और कानों में सुनने की शक्ति बनी रहे, केश श्वेत न हो, दाँत दृढ़ रहे ' 'बाहुओं में बल रहे।''

मृत्यु का भय ही मृत्यु है। मृत्यु का भय दुःख का सूचक है। आत्मज्ञान की प्राप्ति मृत्यु पर विजय अर्थात् अमृत्व का द्योतक है, आत्मज्ञान आनंद की प्राप्ति है

जीने का उत्साह छोड़ने पर आदमी मर भी सकता है। शेक्सपियर ने कहा है कि 'असंतुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहते।' घटता दुर्घटना के हर पहलू पर विचार करें, जो हो गया सो हो गया, वह तो लौटेगा नहीं, अब उत्तम स्थिति क्या हो सकती है उसे सोचें और करें, हर घटना के पीछे भगवान का हाथ होता है यह मान कर चलें जिंदगी लंबी हो, भारी नहीं,दीर्घ जीवी होना बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है जीवन में अधिक से अधिक हासिल करना।

आयु को काटने वाले छह दोषों से बचना चाहिए (1) अनंत अभिमान् (2) अधिक बोलना (3) त्याग का अभाव (4) क्रोध (5) अपना ही पेट पालने की चिंता अर्थात् स्वार्थ (6) मित्र द्रोह

क्रोध अकेला ही मनुष्य को नरक पहुँचाने में समर्थ है, प्रतिकूलता सहन करने का अभ्यास करने पर ही क्रोध से रक्षा होती है।

दीर्घ जीवन के लिए आवश्यक है (1) ब्रह्मचर्य (2) प्राणायाम (3) प्रणव जप (4) सिद्ध पुरुष की कृपा (5) औषधि तथा रसायन सेवन (6) मिताहार। ' 'संपूर्ण प्राणियों के प्रति कोमलता का भाव; गुणों में दोष न देखना, क्षमा, धैर्य, मित्रों का अपमान न करना ये सब गुण आयु को बढाने वाले हैं ऐसा विद्धान लोग कहते हैं। (महाभारत उद्योग 39/52) मृत्यु कालीन अनुभव मनुष्य की अन्तः स्थिति पर निर्भर है। वह आजीवन जैसा सोचता रहता है, अंतिम क्षणों में जीवन की समस्त अनुभूतियों का सार तत्व प्रकट हो जाता है। इसी के अनुसार किसी को प्रकाश दिख पड़ता है किन्हीं को मृदुल संगीत की ध्वनि सुनायी पड़ती है कुछ को नशा चढ़ने जैसी स्थिति अनुभव होती है।

जिनका चिंतन एवं जीवन स्तर हेय स्तर का रहा है उनको दम घुटने एवं डूबने जैसी अकुलाहट भी होती है लेकिन जिन्होंने जीवन दर्शन को समझा है, आध्यात्मिक जीवन शैली अपनायी है उन्हें मरण सुखद ही लगता है।❑

स्मृतिशेष

स्नेहसलिला सरोज मिश्रा

कानपुर, शिवाय टॉवर की अधिष्ठात्री 87 वर्षीया स्नेहसलिला श्रीमती सरोज मिश्रा 9 दिसम्बर, 2020 को बैकुंठधाम सिधार गयीं। कहना न होगा ऋग्वेद अनुसार '**सरमा ऋतस्य यथा गा विवद**' प्रगति करने वाली स्त्री 'ऋत' अर्थात सच्चे और नैतिक मार्ग से चलकर ही लोगों की प्रशंसा प्राप्त करती है, की वे साक्षात मूर्ति थीं। आत्मविश्वास से पूरित सद्ग्रहस्थ जागरूक जीवट वाली सरोज मिश्रा की अपनी स्वयं की पहचान थी। कानपुर में प्रतिष्ठ अधिवक्ता रहे खजुहा (जिला फतेहपुर) के सांकृत गोत्रीय पं प्रेमनारायण शुक्ल की आत्मजा सरोज जी की माताश्री श्रीमती शिवदेवी जयपुर स्टेट के प्रधानमंत्री पं शिवदीन मिश्र की पुत्री थीं। आपके बड़े भाई इलाहाबाद के जज न्यायमूर्ति पं महेश नारायण शुक्ल के पांडित्यपूर्ण व्यक्तित्व, सत्यनिष्ठा, न्यायप्रियता, धर्माचरण की चर्चा आज भी समाज मे होती है। छोटे भाई पं मनमोहन शुक्ल ब्रुकबॉण्ड टी में प्रबंधनिदेशक तथा ए पी जे एजुकेशन सोसाइटी, नई दिल्ली के निदेशक थे।

वर्ष 1948 में 14 वर्ष की अवस्था में भगवंत नगर (मल्लावां) के पं उमाशंकर मिश्र के आत्मज पं शिवशंकर मिश्र से विवाहित हो ससुराल आ गईं। पं शिवशंकर भारतीय जीवन बीमा निगम, कानपुर में कार्यरत रहे। उद्भट जिजीविषा वाली सरोज जी को उनकी नॉकरी रास नहीं आई। उनकी प्रेरणा-शक्ति से व्यवसाय क्षेत्र में कदम रखा। प्रिंटिंग प्रेस, ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय किया, मॉलरोड पर पुरानी बिल्डिंग खरीदकर उसका पुनर्निमाण किया। होटल बनवाया।

इस दम्पति की तीन सन्तानों में बड़ी पुत्री श्रीमती ममता वाजपेयी, हिन्दी पत्रकारिता के मूर्धन्य पं अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी परिवार के पं राजेन्द्र नारायण वाजपेयी से विवाहित हो परिवार सहित कोलकता में तथा छोटी पुत्री श्रीमती मंजरी कानपुर कैलाशमन्दिर के पं श्याम वाजपेयी से विवाहित हो वैशाली, गाज़ियाबाद में निवसित हैं। एकमात्र पुत्र श्री मंजुल मिश्र सहृदय, जातीयता के अनुराग से अनुरंजित शहर के प्रतिष्ठित समाजसेवी है। आपके आत्मज चि प्रवीण सफल दन्त-चिकित्सक हैं।

दुर्विपाक से श्रीमती सरोज को आकस्मिक वैधव्य झेलना पड़ गया, जब वर्ष 1990 में पं शिवशंकर मिश्र ने असमय ही इस असार संसार से विदा ली। साहित्य से लगाव था। टैगोर, बंकिम, गांधी आदि को खूब पढ़ा। साहित्य और स्वाध्याय की पूंजी विपत में काम आई। धैर्य और साहस नहीं खोया। भगवंतनगर और खजुहा की लोकरीतियों, परम्पराओं, मर्यादाओं को सहेजा ही नहीं, बड़ी चतुराई से अगली पीढ़ी तक स्थान्तरित भी किया। कुछ भी हो, प्रगतिशील विचारों की, सामाजिक कार्यों में रुचि लेने वाली, छोटे-बड़े सबसे राम-जुहार करने वाली एक आदर्श महिला की स्मृतियां विस्मृत करने में समय को काफी प्रतीक्षा करनी होगी। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति और शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।❑

पं.महेन्द्र नाथ शुक्ल, इन्दौर

इन्दौर, सुदामा नगर के वयोवृद्ध पं महेंद्र नाथ शुक्ल 95 वर्ष की अवस्था में 23 फरवरी, 2021 को मर्त्य लोक की सीमाओं के ऊपर उठकर ज्योतिर्मय शून्य में अंतर्लीन हो गये। निधन से तीन सप्ताह पूर्व ही 31 जनवरी को कान्यकुब्ज मंच पत्रिका ने श्रद्धेय शुक्ल को कीर्तिशेष पं बालकृष्ण पाण्डेय स्मृति सम्मान से समादृत करने का सुयोग प्राप्त किया था। अपने सम्मान से अभिभूत महेन्द्रनाथ शुक्ल ने महर्षि चार्वाक को उद्धृत करते हुए कहा था कि 'सुख का अर्थ है खुला हुआ आकाश। सुख से जियो, यानी लोकबद्ध होकर जियो। पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के पश्चात आपका अपना वह है जो आपको अपना समझता है।' उस अवसर पर हिन्दी परिवार, इन्दौर के अध्यक्ष हरेराम वाजपेयी ने बताया था कि 'शुक्ल जी ने अपनी शासकीय सेवा में ईमानदारी व कर्मठता के उच्च मानदंडों को तो स्थापित किया ही है, मप्र शासन के विभिन्न दायित्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए वर्ष 1987 में सेवानिवृत्ति के बाद रोगियों व उपेक्षितों की सेवा को अपना धर्म माना।। ये संस्कार शुक्ल जी को अपने पिता राजकीय चिकित्सक रहे डॉ महानन्द शुक्ल से मिले थे।' माननीय का चरित्र एक मानदंड था। उनकी वाणी से गंभीर महत्ता का भाव रंजीत होता था। उनकी भव्य और प्रशांत मुद्रा में गौरव के भावों की दीप्ति लक्षित होती थी। लगता है वे इस धरा पर एक निश्चित उद्देश्य लेकर आये थे और अपना कार्य पूरा कर चलते बने। लेकिन शेष परिवार में एक शून्यता छोड़ गए। परिवार में उनकी शोकाकुल पत्नी के साथ एकमात्र पुत्र डॉ योगेन्द्र नाथ शुक्ल शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। हिन्दी साहित्य संसार में लघुकथाओं के सशक्त हस्ताक्षर व सैकड़ों कविता-कहानियों के रचनाकार योगेंद जी पिता जी के स्नेह-वात्सल्य का स्मरण कर आज भी विचलित हो जाते हैं। तत्ववेत्ताओं को भी मोह-ममता से अभिभूत देख ईश्वर की माया पर अचंभा होता है। **खैर 'उसकी माया-वही जाने'**। ॐ शांति।❑

23 फरवरी, 2021। कोलकता कान्यकुब्ज सभा के कर्मठ स्वयंसेवी व समाज हित चिंतक पं अरुण वाजपेयी (आत्मज स्व जगदीश नारायण वाजपेयी का 66 वर्ष की अवस्था में असामयिक दुःखद निधन। स्व अरुण जी सभा द्वारा आयोजित गंगासागर सेवा शिविर व अन्य कार्यक्रमों के सूत्रधार हुआ करते थे। उनका निधन वाजपेयी परिवार के लिए ही नहीं, समाज के लिए भी अपूरणीय क्षति है।❑

हमारे नये सहयोगी

विशिष्ट

1. पं वीरेंद्रनाथ दीक्षित, तिरुपति कॉलोनी, इन्दौर
2. पं अवधेश अवस्थी, स्वरूपनगर, कानपुर

आजीवन

1. पं सतीश मिश्र, गायत्रीनगर, रायपुर
2. पं सुरेश मिश्र, गोल्डन होम, रायपुर
3. पं पंकज कुमार शुक्ल, देहरादून
4. पं जे पी मिश्र, इन्दौर
5. पं अतुल मिश्र, चिरगांव, झांसी

इस सूची में आपका नाम भी जुड़ने की प्रतीक्षा है।

श्रीमती निर्मला तिवारी भी नहीं रहीं

कोलकाता के धर्मनिष्ठ व्यवसायी पं काशीनाथ पाण्डेय को हमसे बिछुड़े (27 दिसम्बर, 2020) अभी 20 दिन भी नहीं हुए थे, उनकी सहधर्मिणी श्रीमती निर्मला पाण्डेय भी 18 जनवरी, 2021 को बैकुंठ धाम सिधार गयीं। एक महीने के अंतराल में परिवार के दोनों मुखियाओं का यूं चले जाना परिवार के लिए एक बड़ा आघात है। श्रीमती निर्मला काफी समय से कैंसर रोग से पीड़ित थीं। रमईपुर (रायबरेली) के स्मृतिशेष पं सरजुप्रसाद तिवारी की आत्मजा निर्मला एक आस्थावान, गार्हस्थिक महिला थीं। शोकाकुल परिवार में उनके पुत्र चि नवनीत व चि अक्षत, पुत्रवधु श्रीमती रुचि व श्रीमती शिल्पी तथा पौत्रों में चि राघव व चि तक्षय, पौत्रियों में कु आकृति व कु विधिश्री एवं स्व निर्मला जी की आत्मजा श्रीमती देवकी (पत्नी श्री आलोक अवस्थी, जिला न्यायाधीश, होशंगाबाद) को ही नहीं, उनके सगे-सम्बन्धियों, परिचितों को इस शून्यता का आभास वर्षों सालता रहेगा। प्रभु मृत आत्मा को शांति प्रदान करे व शोकग्रस्त परिवार को धैर्य। ॐ शांतिः।❑ -

पत्रिका हेतु सहयोग राशि 'संपादक-कान्यकुब्ज मंच' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ोदा की सीबीएस शाखा में IFSC:BARB0KIDKAN में जाकर हमारे खाता संख्या 19640100008057 में जमा कर इसकी सूचना पूरा नाम पता व पिन कोड सहित मोबाइल 09450332385 पर

संरक्षकः ₹11000 ● विशिष्टः ₹5100 ● आजीवनः ₹2100

$200 $100 $40

पत्रिका प्राप्ति स्थान

कानपुर – गुप्ता मैगजीन सेंटर, एलआईसी बिल्डिंग के सामने, फूल बाग चौराहा, कानपुर। मो.-8896229786
- पाण्डेय बुक सेलर, के-ब्लॉक, निकट आरबीआई कॉलोनी, किदवई नगर, कानपुर। मो-9336121757
- कृष्णा फार्म सेंटर, निकट साकेत गेस्ट हाउस, विकास नगर, कानपुर। मो.-9336029994

लखनऊ – शुक्ल मैगजीन सेंटर, हनुमान के निकट, हजरतगंज, लखनऊ। मो.-9473897006
- 1/208, विकास नगर, लखनऊ। मो.-9554096508
- 3/19 सेक्टर-जे, जानकी पुरम, लखनऊ। मो.-9450362385

नोएडा - शुक्ला मैगजीन सैंटर, ब्रह्मपुत्र कॉम्प्लेक्स, सेक्टर 29, नोएडा। मो.-9210135448

दिल्ली – तिवारी ब्रादर्स, 73, एमएम मार्केट, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन-011 23413313-23411764

भोपाल - श्री के.एन. मिश्र, 58, सागर स्टेट कॉलोनी, अयोध्या नगर, भोपाल-462041, मो.-7224882166

रायपुर– श्री सतीश मिश्र, सी-51, गायत्री नगर, (जगन्नाथ मंदिर के पास) रायपुर-492007, मो. 9826656546

इंदौर – श्री रामचन्द्र दुबे, सी/एम, 112 आई, दीनदयाल उपाध्याय नगर, सुक्लिया, इंदौर-452010, मो.-9098902326

फरीदाबाद - 264, सेक्टर-3, फरीदाबाद 121004, मो. 8800377066

मेघदूत

बालों की समस्याओं का आयुर्वेदिक उपचार!

मेघदूत आयुर्वेदिक सत्रीठा का नियमित प्रयोग बालों का झड़ना और रूसी–खुश्की को कम करे साथ ही दो–मुहे बालों जैसी आदि समस्याओं को दूर करने मे सहायक।

मेघदूत सत्रीठा हर्बल शैम्पू

मेघदूत के सभी उत्पाद समस्त गांधी आश्रम, खादी भंडार एवं मेघदूत स्वदेशी ग्रामोद्योग भंडार व उत्तर प्रदेश के समस्त डाकघरों मे उपलब्ध है।

AVAILABLE ON: amazon Flipkart Paytm mall 1mg

www.meghdootherbal.com | Helpline : +91- 9235623142

हमारे किसान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता

मध्यप्रदेश शासन

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

किसानों के लिए मध्यप्रदेश सरकार के प्रयास

- कृषि अधोसंरचना विकास फंड में मध्यप्रदेश देश में सबसे आगे। अधोसंरचना विकास के लिए आत्मनिर्भर कृषि मिशन का गठन।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के साथ किसान कल्याण योजना में प्रदेश के किसानों को ₹ 4000 प्रति वर्ष देने का निर्णय। प्रदेश के 78 लाख पात्र किसानों को लगभग ₹ 3200 करोड़ की राशि का भुगतान होगा।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में कुल ₹ 8646 करोड़ का भुगतान।
- 16 लाख किसानों से 1 करोड़ 29 लाख मीट्रिक टन गेहूं का रिकॉर्ड उपार्जन, ₹27000 करोड़ से अधिक का भुगतान।
- पिछले 8 माह में 2 करोड़ 10 लाख किसानों को विभिन्न योजनाओं में ₹ 46000 करोड़ से अधिक का भुगतान।
- उर्वरकों का अग्रिम भण्डारण।
- पिछले 8 माह में लगभग ₹ 8000 करोड़ से अधिक की 7 सिंचाई परियोजनाओं की स्वीकृति।
- 2002-03 में प्रदेश का कुल सिंचित रकबा मात्र 7 लाख 50 हजार हेक्टेयर था, जिसे 15 साल में बढ़ाकर 40 लाख हेक्टेयर तक कर दिया।
- 15 वर्षों में सिंचाई बजट ₹ 1005 करोड़ से बढ़ाकर ₹ 10,928 करोड़ किया गया।
- तीन वर्षों में 1000 नये "कृषि उत्पादक संगठन" का होगा गठन।
- शून्य ब्याज दर पर ऋण योजना वर्ष 2020-21 में पुनः प्रारंभ।
- मंडी नियमों में ऐतिहासिक सुधार। मंडी टैक्स 1.5% से घटाकर 0.5% किया गया।
- सहकारी बैंकों की वित्तीय स्थिति को सुधारने के लिए ₹ 800 करोड़ जारी।

"किसान मेरे लिये भगवान हैं, हम उनकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।"

– शिवराज सिंह चौहान

सशक्त किसान, समृद्ध खेती, आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश